



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (II)

PART II—Section 3—Sub-Section (II)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

नं. 725]

नई दिल्ली, शुक्रवार, 3 दिसम्बर, 1993/अग्रहायण 12, 1915

No. 725]

NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 3, 1993/AGRAHAYANA 12, 1915

रेल मंत्रालय

(रेलवे बोर्ड)]

अधिसूचना

नई दिल्ली, 3 दिसम्बर, 1993

का.आ. 930 (अ) — राष्ट्रपति, संविधान के अनुच्छेद 309 के परन्तुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित नियम बनाते हैं, अर्थात् :-

अध्याय 1

प्रारम्भिक

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ: (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम रेल सेवा (पेहन) नियम, 1993 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. लागू होना — इन नियमों में अन्यथा स्पष्ट उपबन्धित के विना, ये नियम निम्नलिखित रेल सेवकों को लागू होंगे, अर्थात् —

- (1) कोई ऐसा समूह "ब" रेल सेवक, जिसकी सेवा 16 नवम्बर, 1957 को रेल सेवकों के लिए पेहन पद्धति के पुरस्थापन के पूर्व पेहनी थी,
- (2) कोई ऐसा गैर पेहनी रेल सेवक, जो 16 नवम्बर, 1957 को सेवा में था और जिसने इन नियमों द्वारा शासन होने के लिए चयन किया था,
- (3) कोई ऐसा गैर पेहनी रेल सेवक जो 1 जनवरी, 1986 को सेवा में था और जिसने राज्य रेल

अधिकार निधि (अग्रहारी) नियम द्वारा शासन होने के लिए विकल्प नहीं दिया था, और

- (4) 16 नवम्बर, 1957 को या उसके पश्चात् रेल सेवा में प्रवेश करने वाला कोई व्यक्ति, उस व्यक्ति को छोड़कर, जो सविदा पर नियुक्त किया गया है या अधिवर्तिता के पश्चात् पुनर्नियोजित किया गया है या जिसकी नियुक्ति के निबन्धन विनिर्दिष्ट रूप में इसके प्रतिकूल उपबन्धित करने हैं।

3. परिभाषाएं — इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो,

- (1) "लेखा अधिकारी" से "किसी रेल का वित्तीय सलाहकार और "मुख्य लेखा अधिकारी" या ऐसे अन्य अधिकारी अभिप्रेत है, जो रेल बोर्ड द्वारा इस निमित्त नियुक्त किया जाए,
- (2) "आवृत्ति" से कोई ऐसा रेल सेवक अभिप्रेत है जिसको रेल या सार्वजनिक आवास अनुज्ञप्ति फीस के सदाय पर या अन्यथा आवृत्ति किया गया है,
- (3) "औसत आयु" से ऐसी औसत आयु अभिप्रेत है जो नियम 50 के अनुसार आधारित की गई है;
- (4) "महिला" से सार्वजनिक पर यथा संशोधित भारतीय रेल स्थापन महिला अभिप्रेत है,
- (5) "बालक" से किसी रेल सेवक का 25 का आयु का पुत्र या अविवाहित पुत्र

[Handwritten signatures and marks]

और "बालक" अभिव्यक्ति का तदनुसार अर्थान्वयन लगाया जाएगा

- (6) "महंगाई राहत रकम" से नियम 75 के अर्थान्तर्गत महंगाई राहत रकम अभिप्रेत है ;
- (7) "रक्षा सेवाओं" से भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय और वित्त मंत्रालय के नियंत्रण के अधीन रक्षा लेखा विभाग में ऐसी सेवाएं अभिप्रेत हैं जिनके लिए संशय या सेवा प्राक्कलन में किया जाता है और जो स्थायी रूप से बायु सेना अधिनियम, 1950 (1950 का 45) या सेना अधिनियम, 1957 (1957 का 62) के अध्वधीन नहीं हैं ;
- (8) "उपलब्धियां" से नियम 49 में परिभाषित उपलब्धियां अभिप्रेत हैं ;
- (9) "कुटुम्ब पेंशन" से नियम 75 के अधीन अनुज्ञेय कुटुम्ब पेंशन 1964 अभिप्रेत है ;
- (10) "विदेश सेवा" से ऐसी सेवा अभिप्रेत है जिसमें रेल सेवक सरकारी मंजूरी से भारत की संचित निधि या किसी राय का संचित निधि या किसी संघ राज्यक्षेत्र की संचित निधि में अन्यथा किसी स्त्रोत से अपना वेतन प्राप्त करता है ;
- (11) "प्ररूप" से इन नियमों से संलग्न प्ररूप अभिप्रेत है ;
- (12) "सरकार" से केन्द्रीय सरकार अभिप्रेत है ;
- (13) "सरकारी शोध्य या रेल शोध्य" से नियम 15 के उपनियम (3) में निर्दिष्ट शोध्य अभिप्रेत है ;
- (14) "उपदान" के अन्तर्गत निम्नलिखित हैं —
 - (i) नियम 69 के उपनियम (1) के अधीन संदेय सेवा उपदान ;
 - (ii) नियम 70 के उपनियम (1) के अधीन संदेय सेवा निवृत्ति उपदान या मृत्यु उपदान ; और
 - (iii) नियम 70 के उपनियम (2) के अधीन संदेय अवशिष्ट उपदान ;
- (15) "विभाग का प्रधान" से कोई ऐसा प्राधिकारी अभिप्रेत है जिसे राष्ट्रपति के आदेश द्वारा इन नियमों के प्रयोजनों के लिए किसी विभाग का प्रधान घोषित करे ;
- (16) "कार्यालय का प्रधान" से कोई ऐसा राजाज्ञित अधिकारी अभिप्रेत है जिसे नियुक्त करने वाला प्राधिकारी, आदेश द्वारा कार्यालय का प्रधान घोषित करे और उसमें ऐसा अन्य प्राधिकारी या व्यक्ति सम्मिलित है जिसे नियुक्त करने वाला प्राधिकारी वही ही रीति से निर्दिष्ट करे ;
- (17) "सरकार द्वारा प्रशासित स्थानीय निधि" से किसी ऐसे निकाय द्वारा प्रशासित निधि अभिप्रेत है जो विधि या विधि का बल रखने वाले नियम द्वारा, सरकार के नियंत्रण के अधीन आता है और

जिनके व्यय के ऊपर सरकार पूर्ण और प्रत्यक्ष नियंत्रण रखती है ;

- (18) "अवयस्क" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जिसने अठारह वर्ष की आयु पूरी नहीं की है ;
- (19) "पेंशन" के अन्तर्गत उपदान है भिन्न उम्र दशा के जत्र पेंशन पद का उपयोग उपदान से प्रति सुभिन्न रूप में किया जाता है किन्तु इसके अन्तर्गत महंगाई राहत रकम नहीं है ;
- (20) "पेंशन संचितरण करने वाला प्राधिकारी" से अभिप्रेत है —
 - (i) किसी राष्ट्रीयकृत बक की शाखा ; या
 - (ii) खजाना जिसके अन्तर्गत उप खजाना है ; या
 - (iii) डाकघर या उप डाकघर, जो रेल की ओर से पेंशन का संचितरण करने के लिए प्राधिकृत हो ; या
 - (iv) लेखा अधिकारी ।
- (21) "पेंशन मंजूर करने वाला प्राधिकारी" से इन नियमों के अधीन पेंशन मंजूर करने के लिए, सक्षम प्राधिकारी अभिप्रेत है ;
- (22) "अर्हक सेवा" से कर्तव्य पर होने हुए या अन्यथा की गई सेवा अभिप्रेत है, जो इन नियमों के अधीन अनुज्ञेय पेंशनों और उपदानों के प्रयोजन के लिए, हिमाव में ली जाएगी ;
- (23) "रेल सेवक" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो किसी रेल सेवा का सदस्य है या रेल बोर्ड के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन कोई पद धारण करता है और इसके अन्तर्गत ऐसा व्यक्ति है, जो रेल बोर्ड के अध्यक्ष, द्वितीय आयुक्त या किसी मध्य का पद धारण करता है किन्तु इसके अन्तर्गत ऐसी सेवा अथवा पद से, जो रेल बोर्ड के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन नहीं है, ऐसी सेवा या पद को, जो ऐसे प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन है, उधार दिए गए नैमित्तिक मजदूर या व्यक्ति नहीं है ।
- (24) "सेवा निवृत्ति प्रसुविधाएं" के अन्तर्गत पेंशन या सेवा उपदान और सेवानिवृत्ति उपदान, जहां अनुज्ञेय हैं, हैं ;
- (25) "सेवा पुस्तिका" के अन्तर्गत सेवा नामावली, यदि कोई हो, है ;
- (26) "अनुकल्प" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो किसी नियमित स्थायी या अस्थायी पद के विरुद्ध किसी स्थायी या अस्थायी रेल सेवक को छुट्टी पर अनुपस्थिति के कारण या अन्यथा लगा हुआ हो और ऐसा अनुकल्प स्थानापन्न तब तक रेल सेवक नहीं समझा जाएगा जब तक कि उसे नियमित रेल सेवाओं में सम्मिलित नहीं कर लिया जाता है ;
- (27) "खजाना" के अन्तर्गत उपखजाना है ।

4. उन शब्दों और पदों का अर्थ जो इन नियमों में परिभाषित नहीं है :—ऐसे शब्दों और पदों का, जो इसमें प्रयुक्त हैं और परिभाषित नहीं हैं किन्तु संहिता में परिभाषित हैं, वही अर्थ होगा जो क्रमशः उनका उस संहिता में है।

5. उन सेवाओं और पदों में, जिनको ये नियम लागू नहीं होते हैं, अन्तर्गत सरकारी सेवक—

(1) ऐसा सरकारी सेवक, जिसकी सेवा केन्द्रीय सरकार के अधीन पेंशनीय हो, इन नियमों के अधीन होगा, यदि उसको 1 अप्रैल, 1957 को या उसके पश्चात् रेल सेवा में स्थायी रूप से स्थानान्तरित कर दिया जाता है।

(2) गृह उपनियम (1) लागू होता है, ऐसे सरकारी सेवक द्वारा साधारण भविष्य निधि या किसी अन्य गैर अंगदायी भविष्य निधि में, जब वह जमा पूर्व नियोजन में था, उसके खाते में कोई रकम उस पर व्याज सहित रेल भविष्य निधि (गैर अंगदायी) में उसके नए खाते में अन्तर्गत कर दी जाएगी।

(3) ऐसे सरकारी सेवक द्वारा की गई पूर्व सेवा, इन नियमों के प्रयोजन के लिए, इन नियमों के अधीन अनुज्ञेय सीमा तक गणना में ली जाएगी।

टिप्पण.—किसी ऐसे अस्थायी सरकारी सेवक को, जिसकी सिविल विभाग से छुट्टी की गई है या किए जाने की संभावना है, और जो सीमान्त छुट्टी पर होते हुए अथवा वास्तव में उसकी सेवा पर्यवसित किए जाने के पूर्व रेल सेवा में नियोजन प्राप्त करने में सफल हो जाता है, स्थानान्तरित किया गया माना जाएगा।

अध्याय 2

साधारण शर्तें

6. पेंशन या कुटुम्ब पेंशन के लिए, दावों का विनियमन—

(1) पेंशन या कुटुम्ब पेंशन के लिए कोई दावा उस समय, जब कोई रेल सेवक, यथास्थिति, सेवानिवृत्त होता है या सेवानिवृत्त किया जाता है या सेवा से उन्मोचित किया जाता है या पद त्याग करने के लिए अनुज्ञात किया जाता है या उसकी मृत्यु हो जाता है प्रवृत्त इन नियमों के उपबन्धों द्वारा विनियमित किया जाएगा।

(2) उस दिन जिसको कोई रेल सेवक यथास्थिति सेवानिवृत्त होता है या सेवानिवृत्त किया जाता है या सेवा से उन्मोचित किया जाता है या पद त्याग करने के लिए अनुज्ञात किया जाता है या उसकी मृत्यु हो जाती है उसका अन्तिम कार्य दिवस माना जाएगा।

परन्तु ऐसे रेल सेवक की दशा में जो समयपूर्व सेवानिवृत्त किया गया है या जो यथास्थिति संहिता के नियम 1802 से

1804 के उपबन्धों के अधीन या नियम 67 के अधीन अर्हक सेवा के बीस वर्ष पूरे करने के पश्चात्, स्वेच्छया सेवानिवृत्ति की स्कीम के अधीन स्वेच्छया सेवानिवृत्त होता है, सेवानिवृत्ति की तारीख को वह दिन माना जाएगा, जिस दिन काम बन्द रहा।

7. पेंशनों की संख्या पर निर्बन्धन—(1) कोई रेल सेवक एक ही सेवा में या पद पर एक ही समय पर या एक ही सतत सेवा द्वारा दो पेंशन प्राप्त नहीं करेगा।

(2) नियम 34 में यथा अन्यथा उपबन्धित के विवाय, कोई रेल सेवक, जो अधिवर्षिता पेंशन पर या सेवानिवृत्ति पेंशन पर सेवानिवृत्त हो जाने पर, पश्चात्पूर्व पुनर्नियोजित किया जाता है, अपने पुनर्नियोजन की कालावधि के लिए पृथक पेंशन या उपदान का हकदार नहीं होगा।

8. पेंशन का भविष्य में अच्छे प्राचरण के अधीन होगा
(1)(क) भविष्य में अच्छा प्राचरण इन नियमों के अधीन पेंशन और उसके बने रहने की प्रत्येक संजुरी की विवक्षित शर्त होगा,

(ख) नियुक्ति करने वाला प्राधिकारी, लिखित आदेश द्वारा पेंशन या उसके किसी भाग को, चाहे स्थायी रूप से या किसी विनिर्दिष्ट कालावधि के लिए, यदि पेंशनभोगी को गम्भीर अपराध के लिए दोषमिद्ध किया जाता है या घोर अवचर का दोषी पाया जाता है, रोक सकेगा या वापस ले सकेगा।

परन्तु जहां पेंशन का कोई भाग रोक लिया जाता है या वापस ले लिया जाता है, वहां ऐसी पेंशन की रकम तीन सौ पचहत्तर रूपए प्रति मास की रकम से घटाकर कम नहीं की जाएगी।

(2) जहां किसी पेंशनभोगी को न्यायालय द्वारा गम्भीर अपराध के लिए दोषमिद्ध किया जाता है वहां उपनियम (1) के अधीन कारवाई ऐसी दोषमिद्ध से संबंधित न्यायालय के निर्णय के अनुसार की जाएगी।

(3) ऐसे मामले में, जो उपनियम (2) के अन्तर्गत नहीं आता है, यदि उपनियम (1) में निर्दिष्ट प्राधिकारी यह समझता है कि पेंशनभोगी प्रथम दृष्टया और अवचर का दोषी है, वहां वह उपनियम (1) के अधीन कोई आदेश पारित करने के पूर्व—

(क) पेंशनभोगी पर एक सूचना तामोज करेगा, जिसमें पेंशन के विरुद्ध की जाने वाली प्रस्तावित कारवाई और उस आधार का उल्लेख होगा, जिस पर उस कारवाई के किए जाने की स्थापना है और जिसमें उससे यह अपेक्षा की जागी कि वह सूचना की प्राप्ति के पन्द्रह दिन के भीतर, अथवा पन्द्रह दिन से अधिक उतनी बढ़ाई गई अवधि के भीतर जितनी (नियुक्ति करने वाले प्राधिकारी) द्वारा

अनुज्ञा का जाए, ऐसा अभ्यावेदन प्रस्तुत करे, जो वह प्रत्यावृत्ति के विरुद्ध करना चाहे; और

(ख) अभ्यावेदन पर, यदि खण्ड (क) के अधीन पेंशन-कर्ता द्वारा कोई प्रस्तुत किया गया हो, विचार करेगा।

(4) जहां उपनियम (1) के अधीन कोई आदेश पारित करने के लिए सक्षम प्राधिकारी राष्ट्रपति है, वहां मंच लोक सेवा आयोग से आदेश पारित किए जाने से पूर्व परामर्श किया जाएगा।

(5) उपनियम (1) के अधीन राष्ट्रपति से भिन्न किसी प्राधिकारी द्वारा पारित किए गए किसी आदेश के विरुद्ध कोई अपील, राष्ट्रपति को होगी और राष्ट्रपति मंच लोक सेवा आयोग से परामर्श करके, ऐसी अपील पर ऐसे आदेश पारित करेगा जैसे वह ठीक समझे।

संश्लेषण—इस नियम में अस्मिन् व्यक्ति—

(क) “गम्भीर अपराध” के अन्तर्गत शासकीय गुप्त अधिनियम, 1923 (1923 का 19) के अधीन अपराध अन्तर्वर्तिन करने वाला अपराध है;

(ख) “घोर अप्रचार” के अन्तर्गत किसी गुप्त शासकीय कोड या शासकीय संकेत की या संकेत शब्द या किसी ऐसे रेखाचित्र, प्रतीक, चिह्न, टिप्पण, दस्तावेज या जानकारी को, जो शासकीय गुप्त अधिनियम, 1923 (1923 का 19) की धारा 5 में वर्णित है, जो सरकार के अधीन पद धारण करने हुए प्राप्त की गई थी, संसूचित करना या प्रकट करना है जिसमें कि साधारण जनता या राज्य की सुरक्षा पर प्रतिकूल रूप से प्रभाव पड़ता हो।

9. राष्ट्रपति का पेंशन रोकने या वापस लेने का अधिकार—(1) राष्ट्रपति पेंशन या उपदान या दोनों को, पूर्णतः या भागतः, चाहे स्थायी रूप से या विनिर्दिष्ट कालावधि के लिए, रोकने या वापस लेने का और पेंशन या उपदान से पूर्णतः या भागतः रेल को कारित किसी धनीय हानि को, यदि किसी विभागीय अथवा न्यायिक कार्यवाही में पेंशनकर्ता को घोर अप्रचार या उपेक्षा का है, सेवा की कालावधि के दौरान जिसके अन्तर्गत सेवानिवृत्ति के पश्चात् पुनर्नियोजन पर की गई सेवा है, बसूत करने का आदेश देने का अधिकार आरक्षित रखता है;

परन्तु मंच लोक सेवा प्रायोग से कोई अन्तिम आदेश पारित किए जाने के पूर्व परामर्श किया जाएगा;

परन्तु यह और कि जहां पेंशन का कोई भाग रोकना या वापस लिया जाता है वहां ऐसे पेंशन की रकम 375 रुपए प्रति मास से घटाकर कम नहीं की जाएगी।

(2) उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट विभागीय कार्यवाहियां—

(क) यदि उस समय जब रेल सेवक सेवा में था, चाहे उसकी सेवानिवृत्ति से पूर्व या उसके पुनः नियोजन के दौरान, संस्थित की गई हो तो उन कार्यवाहियों के बारे में रेल सेवक के अन्तिम रूप में सेवानिवृत्त हो जाने के पश्चात्, यह समझा जाएगा कि वे इस नियम के अधीन का कार्यवाहियां हैं, और वे उस अधिकारी द्वारा, जिसके द्वारा वे प्रारम्भ की गई थीं, उसी रीति में जारी रखी जाएंगी और उन्हें अन्तिम रूप दिया जाएगा, मानो वह सरकारों सेवक सेवा में बना रहा हो।

परन्तु जहां कि विभागीय कार्यवाहियां राष्ट्रपति के अधीनस्थ किसी प्राधिकारी द्वारा संस्थित की गई हो, वहां वह प्राधिकारी अपने निष्कर्षों का अभि-निश्चित करने हुए एक रिपोर्ट राष्ट्रपति को भेजे।

(ख) यदि विभागीय कार्यवाहियां उस समय, जब सरकारों सेवक सेवा में था, चाहे उसकी सेवानिवृत्ति से पूर्व या उसके पुनः नियोजन के दौरान, संस्थित न की गई हो, तो वे—

(i) राष्ट्रपति की मंजूरी के बिना संस्थित नहीं की जाएगी;

(ii) ऐसी किसी घटना की बाधन नहीं होगी, या उक्त संस्थिति से पूर्व चार वर्षों में अधिक पहले घटों हो, और

(iii) ऐसे प्राधिकारी द्वारा और ऐसी स्थान में जैसा राष्ट्रपति निदेश दे और ऐसी प्रक्रिया के अनुसार संचालित की जाएगी, जो ऐसी विभागीय कार्यवाहियों को लागू होती हों जिसमें रेल सेवक के संबंध में सेवा से पदच्युति का आदेश उसकी सेवा के दौरान दिया जा सकता हो।

(3) ऐसे रेल सेवक की वशा में, जो अधिकारिकी की आय प्राप्त करने पर या अन्यथा सेवानिवृत्त हुआ हो और जिसके विरुद्ध कोई विभागीय या न्यायिक कार्यवाहियां संस्थित की गई हों या जहां विभागीय कार्यवाहियां उपनियम (2) के अधीन जारी रखी गई हो, ऐसी अन्तिम पेंशन, जैसी कि नियम 96 में उपबन्धित है, मंजूर की जाएगी।

(4) जहां राष्ट्रपति यह विनिश्चित करते हैं कि पेंशन न तो रोक दी जाए और न प्रत्याहृत की जाए किन्तु आदेश देते हैं कि धन संबंधी हानि की पेंशन में से वसूली की जाए, वहां वह वसूली रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख को अनुज्ञेय पेंशन की एक-निहाई से अधिक की दर में सामान्यता नहीं की जाएगी।

(5) इस नियम के प्रयोजन के लिए—

(क) विभागीय कार्यवाहियां उस तारीख को, जिसको आरोपों का विवरण रेल सेवक अथवा पेंशनभोगी को जारी किया गया है, अथवा यदि रेल सेवक

किसी पूर्वतर तारीख से निलम्बित कर दिया गया है सो ऐसी तारीख को, संस्थित हुई समझी जाएगी; और

(ख) न्यायिक कार्यवाहियों,—

- (1) दण्डिक कार्यवाहियों की दशा में, उस तारीख को संस्थित हुई समझी जाएगी जिसको किसी पुलिस अधिकारी की शिकायत या रिपोर्ट, जिसका कि मनिस्ट्रेट संज्ञान करना है, की गई हो; और
- (2) सिविल कार्यवाहियों की दशा में, उस तारीख को संस्थित हुई समझी जाएगी जिसका कि वादपत्र न्यायालय में पेश किया जाता है।

10. अनन्तिम पेंशन जहां विभागीय या न्यायिक कार्यवाहियों निलम्बित हों :—

- (1) (क) नियम 9 के उपनियम (3) में निर्दिष्ट किसी रेल सेवक के संबंध में लेखा अधिकारी अन्तिम पेंशन जो उस अधिकृत पेंशन से अधिक न हो, जो रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख तक या यदि वह सेवानिवृत्ति की तारीख को निलम्बनाधीन था तो उस तारीख के, जिसको वह निलम्बनाधीन रखा गया था, ठीक पूर्ववर्ती तारीख तक अर्हक सेवा के आधार पर अनुज्ञेय होती, प्राधिकृत करेगा।
- (ख) अनन्तिम पेंशन लेखन अधिकारी द्वारा सेवानिवृत्ति की तारीख से प्रारम्भ होने वाली और उस तारीख तक और उसको सम्मिलित करते हुए जिसको विभागीय या न्यायिक कार्यवाहियों की समाप्ति के पश्चात् मध्यम प्राधिकारी द्वारा अन्तिम आदेश पान्त किए जाते हैं, अवधि के दौरान प्राधिकृत की जाएगी।
- (ग) विभागीय या न्यायिक कार्यवाहियों की समाप्ति और उस पर अन्तिम आदेश के जारी किए जाने तक रेल सेवक को किसी उपदान का संदाय नहीं किया जाएगा, परन्तु यह कि जहां विभागीय कार्यवाहियां रेल सेवक अनुशासन और अपील नियम, 1968 के उपबन्धों के अधीन उक्त नियम के नियम 6 के खण्ड (i), (ii) (iii) और (i) में विनिर्दिष्ट किसी शासित के अधिरोपित करने के लिए संस्थित की गई है, वहां उपदान का संदाय रेल सेवक को संवत् किए जाने के लिए प्राधिकृत किया जाएगा।
- (2) उपनियम (1) के अधीन किए गए अनन्तिम पेंशन का संदाय ऐसी कार्यवाहियों की समाप्ति तक ऐसे रेल सेवक का मंजूर की गई अन्तिम सेवानिवृत्ति प्रसुविधाओं के विरुद्ध समायोजित किया जाएगा किन्तु कोई बसूली वहां नहीं की जाएगी जहां अन्तिम रूप से मंजूर की गई पेंशन अनन्तिम पेंशन से कम है या पेंशन या सा स्थायी

रूप से या किसी विनिर्दिष्ट कालावधि के लिए कम कर दी जाती है या रोक ली जाती है।

11. सेवानिवृत्ति के पश्चात् वाणिज्यिक नियोजन:—(1) यदि कोई पेंशनभोगी, जो अपनी सेवानिवृत्ति के ठीक पूर्व केन्द्रीय सेवा समूह के का सदस्य था, अपनी सेवानिवृत्ति की तारीख से दो वर्ष के अवधान में पूर्ण कोई वाणिज्यिक नियोजन स्वीकार करता चाहता है तो वह प्रस्ताव 18 में आवेदन भेज कर ऐसी स्वीकृति के लिए सरकार का पूर्व मंजूरी प्राप्त करेगा।

परन्तु ऐसे सरकारों सेवक का, जिने सेवानिवृत्ति पर छुट्टी के दौरान या अग्रोक्त छुट्टी के दौरान किसी विशेष प्रकार का वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करने के लिए सरकार द्वारा अनुज्ञात किया गया था, सेवानिवृत्ति के पश्चात् ऐसे नियोजन में वत रहने के लिए आवश्यक में कोई प्रस्ताव प्रदान करने की आवश्यकता नहीं होगी।

(2) उपनियम (3) के उपाधियों के अधीन रहते हुए, सरकार लिखित आदेश द्वारा पेंशनभोगी द्वारा उपनियम (1), के अधीन किए गए आवेदन पर ऐसे पेंशनभोगी को आवेदन में विनिर्दिष्ट वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करने के लिए ऐसी अनुज्ञा दे सकेंगे या आदेश में भिन्न किए जाने वाले कारणों से, अनुज्ञा देने से इंकार कर सकेंगे।

(3) किसी पेंशनभोगी को कोई वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करने के लिए उपनियम (2) के अधीन अनुज्ञा देने या इंकार करने में सरकार निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखेगी, अर्थात्—

- (क) ग्रहण किए जाने के लिए प्रस्तावित नियोजन को प्रकृति और नियोजक के पूर्ववृत्त;
- (ख) क्या उस नियोजन में, जो वह ग्रहण करने का प्रस्ताव करता है, उसके कर्तव्य ऐसे हो सकेंगे है जिनमें उसका सरकार से विरोध हो;
- (ग) क्या पेंशनभोगी की उसकी सेवा के दौरान उस नियोजन के साथ जिसके अधीन वह नियोजन चाहता है, ऐसा व्यवहार था कि जिससे वह निलम्बित के लिए यह युक्तियुक्त आधार बने कि ऐसे पेंशनभोगी ने ऐम नियोजक को अनुग्रह दर्शाया किया था,
- (घ) क्या प्रस्तावित वाणिज्यिक नियोजन में कर्तव्यों में सरकार के साथ मेलों या संघर्ष अन्तर्वर्तित है;
- (ङ) क्या उसके वाणिज्यिक कर्तव्य ऐसे होंगे कि सरकार के अधीन उसकी पूर्व पदवी स्थिति या ज्ञान या अनुभव का प्रस्तावित नियोजक को नष्टा लाभ देने के लिए उपयोग किया जा सकता है,
- (च) प्रस्तावित नियोजक द्वारा प्रस्तावित पारामितियों, और
- (छ) कोई अन्य सुसंगत तथ्य।

(4) जहां उपनियम (3) के अधीन किसी आवेदन को प्राप्ति की तारीख से साठ दिन की कालावधि के भीतर

सरकार आवेदित अनुज्ञा देने से इकार नहीं करती है या आवेदक को इकार संवृत्त नहीं करती है वहाँ सरकार के बारे में यह समझा जाएगा कि उसने आवेदित अनुज्ञा दे दी है :

परन्तु किसी भी शर्त में जहाँ लुटिपूर्ण या अपर्याप्त सूचना आवेदक द्वारा दी जाती है, और सरकार के लिए उसमें और स्पष्टीकरण अथवा जानकारी या दोनों मागना आवश्यक हो जाते हैं वहाँ साठ दिन की अवधि की गणना उस तारीख से की जाएगी जिसको दूरिया दूर की गई है या पूर्ण जानकारी दी गई है ।

(5) जहाँ सरकार आवेदित अनुज्ञा किन्हीं शर्तों के अधीन रहते हुए देती है या ऐसा अनुज्ञा देने से इकार करती है वहाँ आवेदक उस प्राण्य के सरकार के उस आदेश की प्राप्ति के तीस दिन के भीतर किसी ऐसी शर्त या इकार के विरुद्ध अप्पावेदन करेगा और सरकार उस पर ऐसे अप्पावेदन करसकेगी जो वह ठीक समझे :

परन्तु ऐसी शर्त को रद्द करने वाले या बिना किसी शर्त के ऐसी अनुज्ञा देने वाले किसी आदेश से अप्पाया कोई प्रावेदन, पेशनभोगी को किए जाने के लिए प्रस्तावित आदेश के विरुद्ध कारण दर्शित करने के लिए अवसर दिए बिना इस अधिनियम के अधीन नहीं किया जाएगा ।

(6) यदि कोई पेशनभोगी सरकार की पूर्व अनुज्ञा के बिना अपनी सेवानिवृत्ति की तारीख से दो वर्ष की समाप्ति के पूर्व किसी समय कोई वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करता है या किसी ऐसी शर्त को भंग करता है जिसके अधीन कोई वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करने की अनुज्ञा उसे इस नियम के अधीन दी गई है तो सरकार लिखित आदेश द्वारा और उसमें अभिलिखित किए जाने वाले कारणों से यह घोषणा करने के लिए सक्षम होगी कि वह सम्पूर्ण पेशन या उसके ऐसे भाग का और ऐसी कानाबधियों के लिए जो आदेश में विनिर्दिष्ट की जाएँ, हकदार नहीं होगा ।

परन्तु कोई ऐसा आदेश संबंधित पेशनभोगी को ऐसी घोषणा के विरुद्ध कारण दर्शित करने का अवसर दिए बिना नहीं किया जाएगा,

परन्तु यह और कि इस उपनियम के अधीन कोई आदेश करते में, सरकार निम्नलिखित नथ्यों का ध्यान रखेगी, अर्थात्:—

- (1) संबंधित पेशनभोगी की वित्तीय परिस्थितियाँ,
- (2) संबंधित पेशनभोगी द्वारा ग्रहण किए गए वाणिज्यिक नियोजन की प्रकृति और उसमें उपलब्धियाँ; और
- (3) कोई अन्य सुगम नथ्य ।

(7) इस नियम के अधीन सरकार द्वारा पारित किया गया प्रत्येक आदेश संबंधित पेशनभोगी को संवृत्त किया जाएगा ।

(8) इस नियम में,—अभिव्यक्ति

(क) “वाणिज्यिक नियोजन” से

(i) आर्पागिक, वाणिज्यिक, औद्योगिक, वित्तीय या वृत्तिक कारबार में जारी हुई किसी कम्पनी, सहकारिता

सोसाइटी, फर्म या व्यक्ति के अधीन किसी भी हैसियत में कोई नियोजन अभिप्रेत है और इसके अंतर्गत ऐसी कपनी का निर्देशकत्व और ऐसी फर्म की भागीदारी भी सम्मिलित है, किन्तु ऐसे नियमित निकाय के अधीन, जिस पर केन्द्राय सरकार या मिजोरम सरकार का पूर्णतः या सारत स्वामित्व या नियंत्रण हो, नियोजन इसके अंतर्गत नहीं आता है ;

(ii) स्वतंत्र रूप से अप्पाया किसी फर्म के भागीदार के रूप में ऐसे मामलों में सनाहकार या परामर्शदाता के रूप में प्रैक्टिस स्थापित करना अभिप्रेत है जिसकी बाबत पेशनभोगी—

- (1) के पास कोई वृत्तिक अहताएँ न हों और जिन मामलों की बाबत प्रैक्टिस को स्थापित करनी है या उसे संचालित करना है उनका साथ उसके पदीय ज्ञान या अनुभव से हो, अप्पाया
- (2) के पास वृत्तिक अहताएँ हो किन्तु जिन मामलों की बाबत ऐसी प्रैक्टिस स्थापित करना है वे ऐसे हों कि उसकी पूर्व पदीय स्थिति के कारण उसके ग्राहकों को अकृबु फायदा होना संभाव्य हो, अप्पाया
- (3) को ऐसा काम लेना पड़े जिसमें सरकार के कार्यालयों या अधिकारियों के साथ संपर्क या संबंध स्थापित करना पड़ सकता हो,

स्पष्टीकरण:—

(क) इस नियम के प्रयोजन के लिए “सहकारी सोसाइटी के अधीन नियोजन” पद के अंतर्गत किसी पद का चाहें वह निर्वाचन करके मिलता हो या अप्पाया धारण करना आता है, भले ही उस सोसाइटी में वह किसी भी नाम से जाना जाता हो, जैसे अध्यक्ष, समामति, प्रबंधक सचिव, कोषपाल, इत्यादि,

(ख) सेवा निवृत्ति के पश्चात् सरकार के अधीन उसी या किसी अन्य वर्ग पद में अप्पाया किसी राज्य सरकार के अधीन उसी या किसी समूह ‘क’ पद में, बिना किसी खंडता के, पुनः नियोजित सेनक के संबंध में, “सेवानिवृत्ति की तारीख” पद से वह तारीख अभिप्रेत है जिसको ऐसा सरकारी सेवक रेल सेवा में इस प्रकार अंतिम रूप से पुनः नियोजित नहीं रह जाना ।

12. सेवानिवृत्ति के पश्चात् आयकर के तथा अन्य मामलों के संबंध में प्रैक्टिस का निर्वहन—(1) कोई भी पेशन भोगी जो किसी समूह “क” रेल सेवा का सदस्य था और वित्त मंत्रालय के राजस्व विभाग के अधीन किसी पद से सेवानिवृत्त हुआ था, अपनी सेवानिवृत्ति की तारीख से दो वर्ष के अवधान के पूर्व कोई प्रैक्टिस—

(क) ऐसे किसी क्षेत्र में स्थापित नहीं करेगा, जो उसकी सेवानिवृत्ति के ठीक पूर्व के पिछले तीन वर्षों

के दौरान उसकी अधिकारिता की स्थानीय सीमा के भीतर था ,

(ख) खण्ड (क) में निर्दिष्ट क्षेत्रों में भिन्न किसी क्षेत्रों में, राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना, स्थापित नहीं करेगा ,

(2) ऐसे किसी पेशनभोगी को जो उपनियम (1) के उल्लंघन में प्रैक्टिस स्थापित करता है, ऐसी किसी अवधि की बाबत, जिसके लिए उसने प्रैक्टिस स्थापित की हो या ऐसी दीर्घतर अवधि की, बाबत जैसा कि सरकार निर्दिष्ट करे, कोई भी पेशन सदेव नहीं होगी।

स्पष्टीकरण—इस नियम के प्रयोजनों के लिए,

(i) “प्रैक्टिस” पद में अभिप्रेत है स्वतंत्र रूप से या किसी फर्म के भागीदार के रूप में, आयकर, धन कर, सीमाशुल्क, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क या संपदा शुल्क संबंधी मामलों में परामर्शदाता या सलाहकार के रूप में, ऐसे कर या शुल्क के उद्ग्रहण संबंधी अधिनियमितियों के अधीन की कार्य-यात्रियों में निर्धारितियों के प्रतिनिधि के रूप में प्रैक्टिस ,

(ii) “सेवानिवृत्ति की तारीख” पद का वही अर्थ होगा जो नियम 11 के स्पष्टीकरण (ख) में उसका है

13 सेवानिवृत्ति के पश्चात भारत में बाहर का किसी सरकार के अधीन नियोजन—यदि कोई पेशनभोगी, जो अपनी सेवानिवृत्ति के ठीक पूर्व रेल सेवा समूह “क” का सदस्य था, भारत में बाहर किसी सरकार के अधीन कोई नियोजन स्वीकार करना चाहता है तो उसे ऐसी स्वीकृति के लिए रेल मंत्रालय (रेल बोर्ड) की पूर्व अनुज्ञा प्राप्त करनी होगी ऐसे किसी पेशन भोगी को, जो बिना उचित अनुज्ञात के ऐसा कोई नियोजन स्वीकार करता है, ऐसी किसी अवधि के लिए जिसके लिए वह किसी प्रकार नियोजित है या ऐसी दीर्घतर अवधि के लिए जैसा कि सरकार निर्दिष्ट करे, कोई पेशन सदाय नहीं होगी।

परन्तु ऐसे रेल सेवक से, जिसे अपनी सेवानिवृत्ति-पूर्व छुट्टी के दौरान भारत में बाहर की किसी सरकार के अधीन किसी विशेष प्रकार का नियोजन ग्रहण करने के लिए सरकार द्वारा अनुमान किया गया था, सेवानिवृत्ति के पश्चात् ऐसे नियोजन के बिना रहने के लिए—पश्चात्-वर्ती कोई अनुज्ञा प्राप्त करने की अपेक्षा नहीं की जाएगी

स्पष्टीकरण—इस नियम के प्रयोजनों के लिए “भारत में बाहर में की किसी सरकार के अधीन नियोजन” पद के अंतर्गत किसी स्थानीय प्राधिकारी या निगम या किसी अन्य संस्था या संगठन के अधीन जो भारत में बाहर की किसी सरकार के पर्यवेक्षण

या नियंत्रण में कार्य करती है, कोई नियोजन अथवा किसी ऐसे अंतरराष्ट्रीय संगठन के अधीन, जिसकी कि भारत सरकार सदस्य नहीं है, कोई नियोजन आता है।

14. वे अवधियों जिन्हें पेशनक फायदा के लिए सवा नहीं माना, आगामी निम्नलिखित है: समय-समय में वे किसी में नियोजन की अवधियों पेशनक फायदों के लिए, सवा गठित नहीं करेंगी :—

(i) अण्वान्त्रिक हैमियत में ,

(ii) नैमित्तिक यात्रा या दैनिक दरा पर ,

(iii) गैर पेशनिक पद पर ,

(iv) नियम 31 में यथाउपबधित क सिवाय ऐसे पद पर जिनके लिए सदाय आकस्मिकताओं में किए जाते हैं ,

(v) किसी प्रसविदा या किसी सविदा के अधीन या विनिर्दिष्ट रूप में पेशनाय फायदा के लिए जाने के लिए उपाध नहीं करती है ,

(vi) किसी फीम या मानदंड क सदाय पर किया गया कार्य ,

(vii) विशेष वर्ग शिक्षा को शिक्षता के प्रथम चार वर्ष शिक्षता के पिछले दो वर्ष पश्चात्ता को अवधि माने जाएंगे ,

(viii) नियम 40 क अनमार सदा से हटाया जाना या पद-च्युति ,

(ix) नियम 41 के अधीन उपस्थित रूप में के सिवाय सेवा स पद त्याग ,

(x) प्राधिकृत कार्य ग्रहण की अवधि के अनुक्रम में या अनुपस्थिति की प्राधिकृत छुट्टी के अनुक्रम में अप्राधिकृत को अवधि का छुट्टी व उपाध अनुस्थित रहता माना जाएगा

(xi) किसी ऐसे रेल सेवक का जिसे सदाय क अनुरोध पर लोकहित में नहीं, स्वातन्त्र्य किया गया है, अनुज्ञात कार्यग्रहण करने को अवधि जिसके लिए वह सदाय किए जाने का हकदार नहीं है ,

(xii) अकार्य दिन के रूप में मानी गई सेवा की अवधि

(xiii) विदेश सेवा जिसके संबंध में विदेशी नियोजक या रेल सेवक न सेवा जग का सदाय नहीं किया है जब तक कि सदाय का विनिर्दिष्ट रूप में राष्ट्रपति द्वारा अतिरिक्त न किया गया हो,

(xiv) सविदा के आधार पर सिवाय उस सदा के जिसमें उसकी बाद से पूर्ण कर दी गई हो।

टिप्पण—रेल कर्मशाला कर्मचारियों को मंजूर किए गए अवकाश दिन रविवार और आधे दिन या उससे कम के लिए छुट्टी की लघु अवधियों को अहंक सेवा माना जाएगा।

75. ऐशानिक फायरों में सरकारी या रेल देय-धनराशियों की वसूली और समायोजन (1) कार्यालय प्रधान का यह कर्तव्य होगा कि वह ऐशानिवृत्त होने वाले प्रत्येक रेल सेवक द्वारा संश्लेष सरकारी या रेल संबंधी देय-धन-राशियों को अभिलिखित और निर्धारित करे।

(2) इस प्रकार अभिलिखित और निर्धारित ऐसे रेल या सरकारी देय-धनराशियों जो रेल सेवक की सेवानिवृत्ति या मृत्यु की तारीख तक बकाया है, सेवानिवृत्ति उपदान या मृत्यु उपदान या सेवानिवृत्ति उपदान का रकम में समायोजित की जाएगी और सेवानिवृत्ति होने वाले रेल सेवक से देय-धनराशियों की वसूली उपनियम (4) के उपबंधों के अनुसार विनियमित की जाएगी।

(3) इस नियम के प्रयोजनों के लिए "रेल या सरकारी देय-धनराशियां" अभिव्यक्ति के अंतर्गत निम्नलिखित है—

(क) रेल या सरकारी आवास में संबंधित देय-धन-राशियां जिनके अंतर्गत अनुत्पत्ति फीस की बकाया यदि, कोई हो, भी है,

(ख) रेल या सरकारी आवास में संबंधित से भिन्न देय-राशियां अर्थात् गृह निर्माण या सवारी या किसी अन्य अग्रिम या अतिशेष वेतन और भत्तों छुट्टी वेतन का अति मकाय या अन्य देय-धनराशियों जैसे डाकघर या जीवन बीमा प्रीमियम रेल सेवक की ओर से सेवा के दौरान अपेक्षा या कपट के परिणाम स्वरूप सरकार या रेल विभाग को किराए दानियां (जिनके अंतर्गत भाड़ा प्रभार की कम वसूली और स्टोर सामान की कमी भी है)।

4 (i) रेल सेवक के विरुद्ध कोई दावा निम्नलिखित में से सभी या किसी कारण से किया जा सकेगा :—

(क) रेल सेवक की ओर से सेवा के दौरान अपेक्षा या कपट के परिणामस्वरूप सरकार या रेल विभाग को किराए दानियां (जिनके अंतर्गत भाड़ा प्रभार की कम वसूली और स्टोर सामान की कमी भी है) ;

(ख) अन्य सरकार देय-धनराशियां जैसे मकान किराया डाकघर या जीवन बीमा प्रीमियम या बकाया अग्रिम

(ग) सरकारी देय-धन राशियां

(ii) इस उपनियम के खंड (1) के उपखंड के में विनिर्दिष्ट हानियों की वसूली नियम 8 में अधिवहन शर्तों को पूरा करने के अधीन रहने हुए, आधुनिक पेंशन और उनके संश्लेषित मूल्यों में से भी जो पेंशनों अभिनियम, 1871 (1971 का 23) द्वारा शासित होने हैं, का जाएगी उपर्युक्त (1)

की मद (क) के तहत ऐसी वसूली जो नियम 8 के अनुसार नहीं की जा सकती और खंड (क) की मद (ख) और (ग) के तहत ऐसी कोई वसूली जो रेल सेवक की सहमति से भी इनमें से नहीं की जा सकती, उनकी वसूली सेवानिवृत्ति मृत्यु सेवात या सेवा उपदान में से जो पेंशन अधिनियम, 1871 (1871 का 23) के अध्याधीन नहीं है, की जाएगी रेल सेवक की सहमति अभिप्राय किए बिना या किसी मृत रेल सेवक की दशा में उसके कृत्व के सदस्यों की सहमति अभिप्राय किए बिना भी सेवानिवृत्ति मृत्यु सेवानिवृत्ति उपदान में से सरकारी देय-धनराशियों की वसूली अनुज्ञेय है

(iii) ऐशानिक फायरों की मजूरी किन्हीं बकाया सरकारी देय-धन राशियों की वसूली होने तक बिलंबित नहीं की जाएगी। यदि मजूरी के समय कोई देय-धन राशियों अनिवारित या प्राप्त रह जाती है तो निम्नलिखित मार्ग अपनाए जाएंगे :—

(क) इस उपनियम के खंड (i) के उपखंड (क) में उल्लिखित देय-धन राशियों की बाबत :—रेल सेवक से उपयुक्त रोकड़ जमा कराया जा सकता है या उपदान का उतना भाग जितना पर्याप्त समझा जाए तब तक रोकड़ा जा सकता है तब तक बकाया देय-राशियों रिहायित और समायोजित नहीं की जानी।

(ख) इस उपनियम के खंड (i) के उपखंड (ख) में उल्लिखित देय-धन राशियों की बाबत (1) सेवानिवृत्ति होने वाले रेल सेवक से यह कहा जा सकता है कि वह किसी उपयुक्त स्थायी रेल सेवक के प्रतिभू होने की व्यवस्था करे। यदि यह पाया जाए कि जिस प्रतिभू की उसने व्यवस्था की है वह स्वीकार्य है तो उसकी पेंशन या उपदान संदाय या वेतन के लिए अंतिम दावे आदि को रोक नहीं जाना चाहिए और प्रतिभू प्रत्यक्ष 2 में एक बंधपत्र पर हस्ताक्षर करेगा—

(2) यदि सेवानिवृत्ति होता वाला रेल सेवक प्रतिभू की व्यवस्था करने में असमर्थ या देने के लिए राजमद है तो खंड (iii) के उपखंड (क) में यथा-विनिर्दिष्ट कार्यवाई की जाएगी।

(3) प्रत्येक मामले में पेंशन मंजूर करने वाला प्राधिकारी राष्ट्रपति की ओर से प्रायः 2 में प्रतिभूति बंधपत्र स्वीकार करने के लिए, सक्षम होगा।

(ग) खंड (i) के उपखंड (ग) में उल्लिखित देय-धन-राशियों की बाबत अर्ध-सरकारी और गैर सरकारी देय-धनराशियों जैसे किसी रेल सेवक द्वारा उपभोगता गृहकारी सोसाइटियों उप-

भोक्ता उधार समितियों को संदेय रकम या किसी रेल सेवक द्वारा प्रतिनियुक्ति के दौरान किसी स्वाशासी संगठन को संदेय देय-धन-राशियों ऐसे सेवानिवृत्ति उपदान में से, जो सेवा निवृत्त होने वाले रेल सेवक को संदेय हो गया है, वसूल की जा सकेंगी परन्तु यह तब जब कि वह प्रशासन को ऐसा करने की लिखित में सहमति देता है।

(iv) इस उपनियम के खंड (i) के उपखंड (क) और (ख) में निर्दिष्ट सभी मामलों में, जो रकम सेवानिवृत्त होने वाले रेल सेवक द्वारा जमा की जानी अपेक्षित हैं या जो उसे संदेय उपदान में से रोक ली जाती है, अनानुपातिक रूप से अधिक नहीं होगी और ऐसी रकम असम्यक लंबी अवधि के लिए नहीं रोकी जाएगी या प्रतिभू असम्यक लंबी अवधि के लिए आबद्ध नहीं होंगे इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सभी संबद्ध प्राधिकारियों को निम्नलिखित सिद्धांतों का पालन करना चाहिए

(क) वह नकद निक्षेप जो लिया जाना है या उपदान की वह रकम जो रोकी जानी है, बकाया देय-धनराशि की प्राक्कलित रकम और उसके पन्वीस प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए।

(ख) इस उपनियम के खंड (i) में उल्लिखित देय धनराशियों संबंधित रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख से तीन मास की अवधि के भीतर निर्धारण और समायोजन किया जाना चाहिए।

(ग) इस बात का पता लगाने के लिए उपाय किए जाने चाहिए कि किसी मांग की सूचना देने और उस पर कार्रवाई करने के समय संबंधित पदधारी की ओर से की गई उपेक्षा के कारण सरकार को कोई हानि न हुई हो। संबंधित पदधारी सरकारी देय-धन-राशियों का समय पर निर्धारण न करने के कारण अनुशासनिक कार्रवाई के दायित्वाधीन होगा और इस प्रश्न पर गुणागुण के आधार पर विचार किया जाना चाहिए कि क्या अवसूलीय रकम की वसूली को अधिव्यवह किया जाए या सरकारी देय-धनराशियों का समय पर निर्धारण न करने के लिए उत्तरदायी ठहराए गए पदधारी से वसूली की जाए।

(घ) जैसे ही नियम 8 में निर्दिष्ट प्रकृति की कार्य-वाहिया संस्थित की जाती हैं, उस प्राधिकारी को, जिसने कार्यवाहियां संस्थित की हैं, लेखा अधिकारी को अधिसूचना इस तथ्य की जानकारी देनी चाहिए।

16. सरकारी या रेल आवास से संबंधित देय-धनराशियों का समायोजन और वसूली—

(1) संपदा निदेशालय नियम 98 के उपनियम (1) के अधीन बेबाकी प्रमाणपत्र जारी करने के संबंध में कार्यालय प्रधान से सूचना प्राप्त होने पर अपने अभिलेखों की संवीक्षा करेगा और यदि आबंटिती से उसकी सेवानिवृत्ति से आठ मास पूर्व की अवधि की बाबत कोई अनुज्ञप्ति फीस वसूलीय हो तो उसकी सेवानिवृत्ति की तारीख से आठ मास पूर्व कार्यालय प्रधान को इसकी सूचना देगा। यदि नियत तारीख तक कार्यालय प्रधान को बकाया अनुज्ञप्ति फीस की वसूली के संबंध में कोई सूचना प्राप्त नहीं होती है तो यह उपधारणा की जाएगी कि आबंटिती से उसकी सेवानिवृत्ति से आठ मास पूर्व की अवधि की बाबत कोई अनुज्ञप्ति फीस वसूलीय नहीं है।

(2) कार्यालय प्रधान यह सुनिश्चित करेगा कि अगले आठ मास के लिए अनुज्ञप्ति फीस, अर्थात् आबंटिती की सेवानिवृत्ति की तारीख तक, आबंटिती के वेतन और भत्तों में से प्रत्येक मास वसूल की जाती है।

(3) जहां संपदा निदेशालय, उपनियम (i) में उल्लिखित अवधि की बाबत वसूलीय अनुज्ञप्ति फीस की रकम प्रज्ञापित की जाती है वहां कार्यालय का प्रधान यह सुनिश्चित करेगा कि बकाया अनुज्ञप्ति फीस, आबंटिती के चालू वेतन और भत्तों में से किस्तों में वसूल की जाती है और जहां संपूर्ण रकम वेतन और भत्तों से वसूल नहीं की जाती है वहां अतिशेष की वसूली उपदान में से, उसका संदाय प्राधिकृत करने के पूर्व की जाएगी।

(4) संपदा निदेशालय, आबंटिती की सेवानिवृत्ति की तारीख के पश्चात् चार मास की अनुज्ञेय अवधि के लिए सरकारी आवास को प्रतिधारित करने के लिए अनुज्ञप्ति फीस की रकम भी कार्यालय प्रधान को सूचित करेगा। कार्यालय प्रधान उस अनुज्ञप्ति फीस की रकम का उपनियम (3) में उल्लिखित वसूल न की गई अनुज्ञप्ति फीस के साथ यदि कोई हो, समायोजन उपदान की रकम में से करेगा।

(5) यदि किसी विशेष मामले में, संपदा निदेशालय के लिए बकाया अनुज्ञप्ति फीस का अवधारण करना संभव नहीं है तो वह निदेशालय कार्यालय प्रधान को यह सूचना देगा कि उपदान का दस प्रतिशत या एक हजार रुपए, इनमें से जो भी कम हो, सूचना प्राप्त होने तक रोक लिए जाए।

(6) आबंटिती की सेवानिवृत्ति की तारीख के पश्चात् चार मास की अनुज्ञेय अवधि से अधिक तक सरकारी आवास के अधिभोग के लिए अनुज्ञप्ति फीस की वसूली संपदा

निदेशालय की जिम्मेदारी होगी। मेवानिवृत्ति के पश्चात् चास मास से अधिक अवधि तक सरकारी आवास के प्रतिधारण के लिए अनुज्ञप्ति फीस मद्दे शोध्य होने वाली कोई रकम और बकाया अमंदाय अनुज्ञप्ति फीस सपदा निदेशालय द्वारा संबंधित लेखा अधिकारी की मार्फत पेंशनभोगी की सहमति के बिना महंगाई राहत में से वसूल की जा सकेगी। ऐसे मामलों में, जब तक ऐसी वेय-धनराशियों की पूर्ण वसूली न हो जाए तब तक कोई महंगाई राहत मविनगित नहीं की जानी चाहिए।

टिप्पण इस नियम के प्रयोजन के लिए अनुज्ञप्ति फीस के यन्तर्गम आवास या उसकी फिटिंग को हुए नुकसान या हानि के लिए आर्बिट्ररी द्वारा संदेय अन्य प्रभार भी है।

- (8) रेल सेवक अपनी सेवा निवृत्ति के तुरन्त पश्चात् रेल आवास को खाली कर देगा।
- (9) ऐसे दशा में, जहां किसी रेल सेवक द्वारा अधि-वर्षिता या सेवा में न रहने जैसे स्वीच्छक सेवा निवृत्ति या मृत्यु के पश्चात् रेल आवास खाली न हो किम गमा हो, वहां यथास्थिति, सेवा निवृत्ति उपदान, मृत्यु उपदान या भविष्य निधि में विशेष अणदान की पूरी रकम रोक ली जाएगी। रोक दी गई ऐसी रकम नकद के रूप में रखी जाएगी जो ऐसे रेल आवास को खाली किए जाने के तुरन्त पश्चात् निर्मान कर दी जाएगी।

17 प्रत्यक्ष घोषित किए गए कर्मचारिवृत्त की पेंशन सुविधाएँ:—

यदि कोई रेल सेवक चिकित्सीय रूप से अपने पद के लिए अनुपयुक्त है, किंतु उसे संहिता के उपबंधों के अधीन वैकल्पिक नियम पर सेवा में बनाए रखा जाता है और उसके पश्चात् वह सेवा निवृत्ति उपदान या पेंशन पाने का हकदार हो जाता है तो उसे निम्नलिखित में से, जिसे भी वह अधिमान है, पद पर काम का विकल्प दिया जाएगा,—

- (i) उपदान या पेंशन जो सामान्यतः उसकी सेवा की दोनों अल्पावधियों को एक साथ मिलाकर बनी उसकी कुल सेवा के प्रतिनिदेश से उसे मंजूर की गई होती।
- (ii) (क) उपदान या पेंशन की वह राशि, जो उसे मंजूर की गई होती यदि वह अपनी सेवा की प्रथम अल्पावधि के अंत में वैकल्पिक नियुक्ति पर बनाए रखे जाने के स्थान पर चिकित्सीय रूप से अशक्त करके सेवा से बाहर कर दिया गया होता; और
- (ख) ऐसी मेवानिवृत्ति उपदान या पेंशन की राशि जो उसे सामान्यतः उसकी वैकल्पिक नियुक्ति के दौरान की गई सेवा की दूसरी अल्पावधि के लिए मंजूर की गई होती;

परन्तु यह कि यदि सेवा की दोनों अल्पावधियों को एक साथ मिलाकर रेल सेवक की कुल अर्हक सेवा 33 वर्षों से अधिक होती है तो दूसरी अल्पावधि की अर्हक सेवा में उतने वर्ष कम कर दिए जाएंगे जिनके द्वारा दोनों अल्पावधियों को एक साथ मिलाकर बनने वाली अर्हक सेवा 33 वर्ष से अधिक होती है और सेवा की दूसरी अल्पावधि के लिए साधारण उपदान या पेंशन और मृत्यु सह-सेवा निवृत्ति उपदान की संगणना इस प्रकार संगणित हटाई गई अर्हक सेवा के प्रति निर्देश से की जाएगी।

18 अस्थायी रेल सेवक को, पेंशनी, सेवांत या मृत्यु संबंधी सुविधाएँ:—

- (1) ऐसा अस्थायी रेल सेवक जो अधिवर्षिता पर या 10 वर्षों से अन्यून की अस्थायी सेवा करने के पश्चात् समुचित चिकित्सीय प्राधिकारी द्वारा आगे रेल सेवा के लिए अस्थायी तौर पर असमर्थ घोषित किए जाने पर अधिवर्षिता, अशक्तता पेंशन, सेवानिवृत्ति उपदान और कुटुम्ब पेंशन की मंजूरी और के लिए उसी मान के अनुसार उपयुक्त होगा जो इन नियमों के अधीन स्थायी रेल सेवक को अनुज्ञेय है।

स्पष्टीकरण: इस नियम के उप नियम (1) के प्रयोजन के लिए “सेवा” का वही अर्थ होगा जो संहिता के नियम 1002 के उपनियम (6) में उसका है सिवाय इसके कि इसमें विशेष वर्ग रेल शिक्षता की शिक्षता के पहले चार वर्ष की अवधि शामिल नहीं की जाएगी।

(2) ऐसा अस्थायी रेल सेवक जो 20 वर्ष की सेवा पूरी करने के पश्चात् स्वीच्छक सेवा निवृत्ति चाहता है इन नियमों के अधीन अनुज्ञप्ति अनुज्ञेय सेवानिवृत्ति पेंशन और पेंशन संबंधी अन्य सुविधाएँ जैसे सेवानिवृत्ति उपदान तथा कुटुम्ब पेंशन के लिए पात्र बना रहेगा।

(3) किसी अस्थायी रेल सेवक को इयूटी के दौरान मृत्यु पर उसका कुटुम्ब उसी मान के अनुसार जो इन नियमों के अधीन स्थायी रेल सेवक को अनुज्ञेय है। कुटुम्ब पेंशन और मृत्यु उपदान का पात्र होगा।

(4) सेवांत या मृत्यु उपदान यहां अनुज्ञेय नहीं होगा:—

(i) परिवीक्षाधीन (व्यक्ति) या ऐसे अन्य रेल सेवक को जो विहित परीक्षण और अन्य परीक्षा उत्तीर्ण करने में असफल होने के कारण सेवान्मुक्त कर दिया गया है;

(ii) ऐसी दशा में जहां संबंधित रेल सेवक ने रेल सेवा में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया है या उसे वहां से हटा दिया गया है या पदच्युत कर दिया गया है।

(iii) ऐसे कर्मचारियों की सेवा निवृत्त कर्मचारियों को लागू पुनर्नियोजन की गती के अधीन पुनर्नियोजित है

(5) किसी स्थायी पेंशन योग्य रेल सेवक की मृत्यु एवं सेवानिवृत्ति उपदान की स्वीकार्यता को लागू नियम और आदेश जहां तक हो सकेगा उप नियम (6) से उपनियम (10) के उपबंधों के अधीन रहते हुए भी सेवांत या मृत्यु उपदान को लागू होंगे।

(6) मृत्यु या सेवांत उपदान के लिए नामनिर्देशन की आवश्यकता नहीं होगी।

(7) ऐसे अस्थायी रेल सेवक की दशा में सेवान् उपदान का सदाय जिसकी उक्त उपदान या मृत्यु उपदान को प्राप्त करने के पूर्व मृत्यु हो जाती है, उसके कुटुम्ब की निम्न लिखित अधिमानता क्रम से किया जाएगा :—

- (1) पुरुष रेल सेवक की दशा में पत्नी या पत्नियाँ, जिनमें न्यायिक रूप से पृथक्कृत पत्नी या पत्नियाँ भी है;
- (2) महिला रेल सेवक की दशा में पति जिसमें न्यायिक रूप से पृथक्कृत पति भी है;
- (3) पुत्र जिनमें सौतेले पुत्र और दत्तक पुत्र भी हैं;
- (4) अविवाहित पुत्रियाँ जिनमें सौतेली पुत्रियाँ और दत्तक पुत्रियाँ भी हैं;
- (5) विधवा पुत्रियाँ जिनमें सौतेली पुत्रियाँ और दत्तक पुत्रियाँ भी हैं;
- (6) पिता (जिनमें ऐसे व्यक्ति की दशा में,
- (7) माता (जिनकी स्वीय विधि दत्तक की अनुज्ञा देती है, दत्तक माता-पिता भी है;
- (8) 18 वर्ष से कम आयु के भाई जिनमें सौतेले भाई भी हैं;
- (9) अविवाहित बहनें और विधवा बहनें जिनमें सौतेली बहनें भी है;
- (10) विवाहित पुत्रियाँ; और
- (11) पूर्व मृतक पुत्र के बालक।

(8) यदि उपनियम (7) के मद (1) में उल्लिखित अधिमानता क्रम में उपदान के लिए पात्र व्यक्ति का रेल सेवक को संपत्ति में उसके द्वारा की गई किसी बिल या विलेख के अधीन किसी भी भाग से पूर्णतः प्रत्याख्यान किया गया है तो ऐसा व्यक्ति उपदान प्राप्त करने के लिए अपात्र समझा जाएगा और तत्पश्चात् उपदान का अधिमानता क्रम में दूसरे व्यक्ति को सदाय किया जाएगा। जहां रेल सेवक ऐसी कोई बिल या विलेख करता है वहां वह इस तथ्य की सूचना कार्यालय के प्रधान को लिखित में देमकेगा, जो रेल सेवक की सेवा पुस्तिका में टिप्पण दर्ज करेगा—

(9) अस्थायी रेल कर्मचारी या उसके परिवार को संदेय उपदान की रकम रेल कर्मचारी की मृत्यु पर उसकी सेवा पुस्तिका में की गई प्रविष्टियों के आधार पर निर्धारित की जा सकती है और बिना प्रारूपिक आवेदन पत्र या लेखा रिपोर्ट के वैसे ही निकाली जा सकती है, जैसा कि वेतन बिल के प्रारूप में वेतन का दावा किया जाता है।

(10) मंत्री (मंत्रियों) या उपमंत्रियों के निजी कर्मचारिण्ड के रूप में नियुक्त गैर-सेवा कर्मचारिण्ड अर्थात् कर्मचारिण्ड जो मंत्री या उपमंत्री के स्वविवेक

पर नियुक्त किए जाते हैं और जो अपनी नियुक्ति की तारीख को पहले से सरकारी सेवा में नहीं है, उन्हें इन नियम के अधीन ग्राह्य प्रमुविधाओं के प्रयोजन के लिए शुद्ध अस्थायी कर्मचारी समझा जाएगा।

19. पुनर्नियोजन पर वेतन :—पुनर्नियोजन पर रेशन नियम 33 के अधिकथित शर्तों के अनुसार निर्धारित की जाएगी।

अध्याय III

अर्हक सेवा

20. अर्हक सेवा का प्रारंभ :—इन नियमों के अधीन रहते हुए, रेल सेवक की अर्हक सेवा उस तारीख से प्रारंभ होगी जिससे वह उस पर कार्यभार ग्रहण करता है, जिन पर वह अधिष्ठायी रूप से अथवा स्थानापन्न है बिना न पहली बार नियुक्त हुआ था :

परन्तु यह तब जब कि स्थानापन्न या अस्थायी सेवा के पश्चात् उसी या किसी अन्य सेवा या पद पर अधिष्ठायी नियुक्ति बिना अवरोध के, हुई हो :—

परन्तु यह और कि :—

- (क) समूह “घ” सेवा या पद पर किसी ऐसे रेल सेवक की दशा में, जिसका 17 अप्रैल, 1959 से पूर्व कोई धारणाधिकार अथवा निलंबित धारणाधिकार किसी स्थायी पेंशनीय पद पर था सोलह वर्ष की आयु प्राप्त करने से पूर्व की गई सेवा की गणना किसी प्रयोजन के लिए नहीं की जाएगी।
- (ख) खंड (क) के अन्तर्गत न आवे जाने किसी रेल सेवक की दशा में सोलह वर्ष की आयु प्राप्त करने से पूर्व की गई सेवा की गणना प्रतिकर उपदान के लिए की जाने न पित्त न हो की जाएगी।

21. वे शर्तें जिनके अधीन सेवा अर्हक होती है :—

- (1) रेल सेवक की सेवा तब तक अर्हक नहीं होगी जब तक उसके कर्तव्यों और वेतन को सरकार द्वारा या सरकार द्वारा अवधारित शर्तों के अधीन विनियमित नहीं कर दिया जाता।

स्पष्टीकरण :—उप नियम (1) के प्रयोजन के लिए इन नियमों में जैसा अन्यथा उपबंधित है इसके सिवाय “सेवा” अभिव्यक्ति से सरकार के अधीन ऐसी सेवा अभिप्रेत है जिसके लिए सदाय उस सरकार द्वारा भारत की संचित निधि में से या सरकार द्वारा प्रशासित किसी स्थानीय निधि में से किया

जाना है किन्तु इसके अंतर्गत किसी गैर-पेंशनीय स्थानापन्न में की सेवा तब तक नहीं आती जब तक कि ऐसी सेवा उस सरकार द्वारा अर्हक सेवा नहीं मानी जाती है।

- (2) राज्य सरकार के ऐसे रेल सेवक की दशा में, जो स्थायी रूप से रेल के अधीन सेवा में या पद पर स्थानांतरित किया जाता है, उस राज्य सरकार के अधीन स्थानापन्न या अस्थायी हैसियत में की गई लगातार सेवा, यदि कोई हो, जिसके पश्चात् बिना अवरोध के अधिष्ठायी नियुक्ति हुई हो अथवा उस सरकार के अधीन, यथास्थिति, स्थानापन्न या अस्थायी हैसियत में की गई लगातार सेवा, अर्हक होगी:

परंतु इस उपनियम की कोई भी बात ऐसे रेल सेवक को लागू नहीं होगी जो किसी ऐसी सेवा में या पद पर, जिसे ये नियम लागू होते हैं, प्रतिनियुक्ति से भिन्न किसी प्रकार से नियुक्त किया जाए।

22. "रेल में सेवा की गणना अर्हक सेवा के रूप में" किसी रेल सेवक की वह सेवा, जो पेंशनिक फायदों के लिए अर्हित होगी, इन नियमों में उपबंधित विस्तार तक यथा निम्नलिखित होगी:—

- (1) भारतीय रेल में लगातार सेवा या उस पूर्ववर्ती कंपनी रेल या पूर्ववर्ती राज्य में रेल लगातार सेवा, जिसे केन्द्रीय सरकार द्वारा ले लिया गया है और पश्चात्पूर्व भारतीय में रेल सेवा।

टिप्पण:—पूर्ववर्ती राज्य शासक के साथ रेल सेवक द्वारा की गई सेवा को, जो चाहे राज्य कर्मचारी के रूप में या भूतपूर्व शासक के साथ व्यक्तिगत रूप में या परिसंघीय वित्तीय एकीकरण के पूर्व उसके गृह धारक के रूप में, जिसके पश्चात् ऐसी सेवा में व्यवधान न हुआ हो पेंशनी फायदों के लिए, पूर्ववर्ती राज्य रेल में सेवा माना जाएगा। इस बात को दृष्टि में लाए बिना कि उसको परिलब्धियों का संदाय राज्य राजस्व से या भूतपूर्व शासक के प्राइवेट स्रोत से किया गया था।

- (2) भारतीय रेल या किसी भूतपूर्व कंपनी रेल या भूतपूर्व राज्य रेल में, जिसे सरकार द्वारा ले लिया गया है पद ग्रहण करने से पहले की गई सेवाएं परंतु यह तब जबकि:—

(क) यह सेवा भारतीय रेल या किसी भूतपूर्व राज्य रेल या भूतपूर्व कंपनी रेल में कोई सेवा हो और यदि स्थानांतरण के समय यह विनिश्चय किया गया हो कि ऐसी सेवा की गणना भविष्य निधि में विशेष अंशदान के लिए की जाएगी।

(ख) यह सेवा भारतीय रेल या भूतपूर्व रेल कंपनी या भूतपूर्व राज्य रेल में संविदा के आधार पर नियम 24 के उपबंधों के अधधीन हो।

(ग) यह सेवा प्राइवेट रेल कंपनी या अर्ध रेल निकाय के अधीन नियम 25 के उपबंधों के विस्तार तक और उनके अधधीन रहते हुए हो;

(3) अर्ध सरकारी संस्थान के अधीन किसी वैज्ञानिक कर्मचारी की गैर पेंशनी सेवा जो नियम 30 के उपबंधों के अधधीन रहते हुए उपकर या जो सरकारी अनुदान से वित्तपोषित हो।

(4) सैनिक या युद्ध सेवा।

(5) नियम 27 के उपबंधों के अनुसार रेल में हुए अंतरण के पूर्व केन्द्रीय सरकार (किसी सिविल मंत्रालय या विभाग में या रक्षा मंत्रालय) जिसमें आर्डनेंस कारखाना भी शामिल है सिविल कर्मचारी के रूप में या राज्य सरकार के अधधीन की गई अर्हक सेवा।

23. परिवीक्षा पर सेवा की गणना, नियुक्त हुए, परिवीक्षा के रूप में नियुक्त या परिवीक्षा पर किसी रेल सेवक को परिवीक्षा की अवधि पर और विशेष श्रेणी प्रशिक्षण के अंतिम दो वर्ष के प्रशिक्षु काल को अर्हक सेवा समझा जाएगा।

24. संविदा पर सेवा की गणना:—(1) कोई व्यक्ति, जिसे रेल द्वारा संविदा पर आरम्भ में लगाया गया है और जिसे पश्चात्पूर्व उसी या दूसरे पद पर अधिष्ठायी हैसियत में सेवा में किसी व्यवधान के बिना नियुक्त किया गया है उसकी सेवा की ऐसी संविदा अवधि को रेल में किसी अन्य स्थायी सेवा के समान माना जाएगा और इन नियमों में अधिस्थित शर्तों के अधधीन रहते हुए पेंशनी फायदों की संगणना को गणना में लिया जाएगा:

परन्तु यह कि:—(1) संविदा सेवा की उस अवधि की, जिसके दौरान संविदा अधिकारी ने राज्य रेल भविष्य निधि (अंशदायी) के लिए अभिदाय नहीं किया, ऊपर दर्शित विस्तार तक गणना की जाएगी। यदि ऐसी अवधि के दौरान संबद्ध रेल सेवक ने किसी सेवानिवृत्ति के फायदे को अनुपस्थिति के कारण कोई स्फीती दर प्राप्त नहीं की है;

(2) यदि संबद्ध रेल सेवक ने संविदा की सेवा की अवधि के दौरान राज्य रेल भविष्य निधि (अंशदायी) में अभिदाय किया है, तो उसके पास विकल्प होगा कि या तो—

(क) भविष्य निधि में सरकार का अंशदान उस पर ब्याज के साथ और प्रसंगत अवधि के लिए

कोई विशेष अंशदान, यदि कोई हो, वापस करे और ऊपर उर्द्धगत विस्तार तक पेंशनी फायदों के लिए संविदा सेवा की गणना करे, या

(ख) भविष्य निधि में सरकार के अंशदान की उम पर ब्याज सहित जिसमें कोई अन्य प्रतिकर और भविष्य निधि में विशेष अंशदान, यदि कोई हो, सम्मिलित रखे रहे हो और प्रशङ्गत संविदा सेवा की अवधि की पेंशनी फायदे के लिए गणना न करें।

(2) उपनियम (1) खंड (1) के उपखंड (क) या उपखंड (ख) में निर्दिष्ट विकल्प का प्रयोग सबद्ध रेल सेवा की अधिष्ठायी पद पर पुष्टि के आदेश के जारी होने की तारीख से तीन माह के भीतर और यदि वह उस तारीख को छुट्टी पर है तो उसकी छुट्टी पर से लौटने के तीन माह के भीतर, जो भी पश्चात्पूर्ति हो, किया जाएगा।

(3) यदि उप-नियम (2) में निर्दिष्ट अवधि के के भीतर रेल सेवक से कोई विकल्प प्राप्त नहीं होता है तो यह समझा जाएगा कि उसने उप-नियम (1) के खंड (ii) के उपखंड (ग) में निर्दिष्ट आर्थिक फायदों के प्रतिधारण के लिए विकल्प दिया है।

(4) जहां कोई रेल सेवक (संविदा के आधार पर) जिसे राज्य रेल अंशदायी भविष्य निधि के लिए स्वीकार किया गया है, उपरोक्त उप-नियम (1) के खंड (ii) के उपखंड (क) के लिए विकल्प देता है, वहां सरकार के अभिदाय की रकम उस पर ब्याज सहित जिसमें राज्य रेल भविष्य निधि (अंशदायी) में उसके नाम जमा कोई अन्य प्रतिकर और भविष्य निधि में विशेष अंशदान, यदि कोई हो, सम्मिलित है, अभ्यर्पित की जाएगी और ऐसी रकम भारत की संचित निधि में जमा की जाएगी।

परन्तु यह कि उस दशा में, जहां किसी सरकारी अंशदान और विशेष अंशदान, यदि कोई हो, का संदाय रेल सेवक को किया गया है, वहां उससे यह अपेक्षा की जाएगी कि वह उसे प्राप्त रकम और संदाय की तारीख (तारीखों) से अंतिम प्रतिदाय की तारीख तक वास्तव में प्राप्त रकम पर उस दर से, जो सरकारी अंशदान को लागू होती यदि वह रकम निधि में रही होती और उससे ब्याज अर्जित की होती तो, चक्रवृद्धि ब्याज के साथ प्रतिदाय करे और यदि जहां संपूर्ण रकम का प्रतिदाय किए जाने के पूर्व रेल सेवक की मृत्यु हो जाती है तो उस रकम का उस मृत्यु उपदान से समायोजन किया जाएगा जो ऐसे रेल सेवक के कुटुम्ब को संदेय हो जाए।

25. प्राइवेट रेल कंपनी और अर्द्ध-कंपनी निकायों के अधीन की गई सेवा की गणना

(1) पूर्व प्राइवेट या पूर्व राज्य रेल कंपनी और अर्द्ध-रेल निकायों के ऐसे कर्मचारियों की पूर्ववही सेवा,

जो भारतीय रेल में शामिल किए गए या नए प्रवेशक के रूप में अप्रेषित या नियुक्त किए गए थे। इन नियमों के अधीन यदि वह भविष्य निधि के विशेष अभिदाय के प्रयोजन के लिए गणनीय है जो पेंशनिक फायदों के लिए गणना में ली जाएगी:

(i) यदि विद्यमान आदेशों के अधीन वह सेवा भविष्य निधि के विशेष अभिदाय के लिए गणनीय नहीं तो उसे पेंशनिक फायदों के लिए गणना में नहीं लिया जाएगा;

(ii) यदि विद्यमान आदेशों के अधीन पूर्व सेवा केवल भविष्य निधि के विशेष अभिदाय की पात्रता अवधारित करने के लिए गणनीय है तो पेंशनिक फायदों के लिए उस पूर्ण सेवा को गणना में लिया जाएगा।

(2) उस पूर्ववर्ती सेवा को जिसे उपनियम (1) के उपबंधों के अनुसार गणना में लिया गया है, इन नियमों के अधीन पेंशनिक फायदों के लिए उसमें उपदर्शित सीमा तक रेलों में की गई सेवा के रूप में माना जाएगा।

26. भारतीय रेल सम्मेलन संगम में की गई सेवा की गणना :—यदि किसी रेल सेवक द्वारा की गई सेवा का एक भाग भारतीय रेल सम्मेलन संगम में है, तो ऐसी सेवा, सरकार के अधीन दी गई सेवा के रूप में समझी जाएगी और इन नियमों के अधीन अर्हक सेवा के संगणना के लिए गणना में ली जाएगी;

परन्तु यह तब जब कि स्थानान्तरण, रेल सेवक के आवेदन को उचित माध्यम से अग्रप्रेषित किए जाने के परिणामस्वरूप या कर्मचारी की विशेष अर्हताओं या अनुभव के कारण भारतीय रेल सम्मेलन संगम और भारतीय रेल प्रशासन द्वारा ऐसे स्थानान्तरण या सहमत होने के परिणामस्वरूप हुआ है।

27. रेल में स्थानान्तरित और स्थायी रूप से आमंत्रित व्यक्ति द्वारा केन्द्रीय सरकार (सिविल मंत्रालय या विभाग में या रक्षा मंत्रालय के अधीन जिसके अंतर्गत आयुध कारखाना भी है, मिजिलियन के रूप में) या राज्य सरकार के अधीन की गई सेवा की गणना।

(1) किसी अन्य केन्द्रीय सरकार विभाग से रेल को स्थानान्तरित पेंशन योग्य कर्मचारी को, जब तक उसे रेल सेवा में स्थायी रूप से आमंत्रित नहीं किया जाता है, प्रतिनियुक्ति पर समझा जाएगा और ऐसी सेवा में स्थायी आमेलन पर वह इन नियमों के अधीन पेंशनिक फायदों के लिए हकदार होगा।

(2) यदि किसी स्थायी कर्मचारी का, जो अंशदायी भविष्य निधि का सदस्य है, स्थानान्तरण किया जाता और उसे पेंशनी आधार पर रेल सेवा के स्थायी रूप से आयोजित कर लिया जाता है, तो ऐसी रेल सेवा में पदग्रहण से पूर्व उसके द्वारा की गई सेवा की अवधि की

गणना इन नियमों के अधीन वैश्वनिक फायदों के लिए की जाएगी और उसके भविष्य निधि खातों में नियोजक का अंशदान उम मंत्रालय या विभाग द्वारा किया जाएगा जिसमें उसने ऐसी रेल सेवा में पदग्रहण से पूर्व सेवा की थी।

(3) ऐसे कर्मचारी की दशा में, जो राज्य सरकार की सेवा में रहते हुए अंशदायी भविष्य निधि का सदस्य था, उसके सरकारी अंशदान की रकम ब्याज के साथ संबंधित राज्य सरकार की सहमति से रेल द्वारा की जाएगी और ऐसे कर्मचारी को, राज्य सरकार के अधीन उसकी सेवा की उस अवधि को जिसके दौरान उसने वास्तविक रूप से अंशदायी भविष्य निधि में अभिदान किया था, की गणना करने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा और यदि संबंधित राज्य सरकार ऐसी सरकार के अधीन की गई पूरी सेवा पर विचार करते हुए सेवा अंश आधार पर आनुपातिक उत्तरदायित्व वहन करने की इच्छा रखता है, तो उसके द्वारा समाप्त ऐसी सेवा के लिए सरकारी अंशदान ऐसे राज्य सरकार द्वारा किया जाएगा।

(4) नियम 23 के उपबंध, जहां तक हो सके राज्य या केन्द्रीय सरकार के अधीन की गई संविदा सेवा को लागू होंगे। परन्तु यह कि पूर्व संविदा सेवा की जिसके दौरान रेल सेवक ने अंशदायी भविष्य निधि में अंशदान नहीं दिया था, गणना केवल तभी की जाएगी यदि पूर्व नियोजक, उसके द्वारा की गई पूरी सेवा के लिए, सेवा-अंश के आधार पर आनुपातिक दायित्व वहन करने के लिए तैयार है।

28. राज्य और केन्द्रीय सरकार के अधीन की गई अस्थायी सेवा की गणना और पेंशनिक दायित्व का आबंटन।

(1) सरकारी सेवक को ऐसी सरकार द्वारा, जहां से वह सेवानिवृत्त हो, पेंशन अनुदान करने के लिए, केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार दोनों के अधीन अर्हक सेवा की गणना करने का लाभ अनुज्ञात किया जाएगा :

परन्तु यह तब जब कि सरकारी कर्मचारी द्वारा केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार के अधीन की गई अस्थायी सेवा के लिए प्राप्त उपदान, यदि कोई है, संबंधित सरकार को प्रतिदाय कर दिया जाता है।

(2) उपनियम (1) के अनुसार, सम्मिलित सेवा के फायदों का दावा करने के लिए पात्र सरकारी सेवक निम्नलिखित प्रयोगों के होंगे :—

(क) वे जिनकी केन्द्र सरकार या राज्य सरकार की सेवा से छंटनी की गई थी लेकिन जिन्होंने छंटनी की तारीख और नई नियुक्ति की तारीख के बीच सेवा में व्यवधान के साथ या बिना-व्यवधान के केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार

के अधीन अपने प्रयास से नियोजन प्राप्त कर लिया है।

(ख) वे, जो केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार के अधीन अस्थायी पद धारण करते समय, संबंधित प्रशासनिक प्राधिकारी की समुचित अनुज्ञा के साथ उचित माध्यम से केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार के अधीन पदों के लिए आवेदन करते हैं :

परन्तु यह कि जहाँ किसी कर्मचारी से नई नियुक्ति पर पद ग्रहण से पहले, उसके द्वारा धारित अस्थायी पद से प्रशासनिक कारणों से तकनीकी अपेक्षा को पूरा करने के लिए अपेक्षा है वहां त्यागपत्र स्वीकार करने वाले प्राधिकारी द्वारा त्यागपत्र देने की इस आशय का एक प्रमाणपत्र जारी किया जा सकता है ऐसा त्यागपत्र प्रशासनिक कारणों से या नए पद ग्रहण करने की समुचित अनुज्ञा से तकनीकी अपेक्षा पूरा करने के लिए दिया गया था। सेवानिवृत्ति के समय, यह फायदा पाने में उसे समर्थ बनाने के लिए, इस प्रमाणपत्र का अभिलेख उचित अनुप्रमाणन के अधीन उसकी सेवापुस्तिका में भी किया जा सकता है।

(3) इस नियम के उपबंध, जम्मू और कश्मीर और नागालैण्ड राज्य सरकारों के पूर्ववर्ती नियोजन के कर्मचारियों पर लागू नहीं होंगे।

29. केन्द्रीय सरकार के विभागों का पेंशनिक दायित्व :

पेंशन, जिसके अंतर्गत उपदान भी है, का पूरा दायित्व उस विभाग द्वारा वहन किया जाएगा जिसमें सरकारी सेवक, सेवानिवृत्ति के समय स्थायी है और आनुपातिक पेंशन की कोई वसूली, केन्द्रीय सरकार के अन्य विभागों से जिसके अधीन उसने सेवा की थी, नहीं की जाएगी।

30. वैश्वनिक कर्मचारियों द्वारा अर्ध-सरकारी संस्थाओं में दी गई सेवा की गणना :—किसी वैश्वनिक कर्मचारी द्वारा किसी अर्ध-सरकारी संस्था में, जो उपकर या सरकारी अनुदानों द्वारा वित्तपोषित है, की गई सेवा और ऐसी सेवा के दौरान वह अंशदायी भविष्य निधि का अभिदाता रहा था, पेंशनी रेल सेवा में बिना किसी व्यवधान के स्थायी नियुक्ति पर, पेंशन के लिए अर्हक सेवा के रूप में गणना में की जाएगी। परन्तु यह तब जब उक्त संस्था द्वारा संदत्त अंशदान उप पर ब्याज सहित सरकार को दे दिया गया है, लेकिन, सेवा की उतनी अधिक अवधि, जिसके दौरान उसने अंशदायी भविष्य निधि में अंश नहीं दिया था, तब तक इस प्रकार गणना नहीं की जाएगी जब तक कि पूर्व नियोजक इस प्रकार की गई सेवा के लिए पेंशनी फायदा मद्दे आनुपातिक दायित्व का वहन करने के लिए सहमत न हो। यदि कर्मचारी, ऐसी किसी संस्था में अंशदायी भविष्य निधि आधार पर नहीं था, तो उसकी पूर्व सेवा की गणना

पेंशन के लिए अर्हक के रूप में तभी की जाएगी जब पूर्व नियोजन पेंशनी फायदा मुद्दे आनुपातिक दायित्व का वहन करने के लिए सहमति हो।

31. आकस्मिकता से संदत्त सेवा की गणना :—ऐसे रेल सेवक की बात जो 22 अगस्त, 1968 को या उसके पश्चात् सेवा में आकस्मिकता से संदत्त सेवा का आधी नियमित नियोजन में समामेलन पर पेंशनिक फायदा ऐसी गणना के लिए निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए हिमाचल में किया जाएगा, अर्थात् :—

- (क) आकस्मिकताओं से संदत्त पूर्णकालिक नियोजन वाले कार्य में सेवा की गई थी।
- (ख) आकस्मिकताओं से संदत्त सेवा, इस प्रकार के कार्य या काम की होनी चाहिए, जिसके लिए नियमित पद, जैसे माली, चौकोदार और खलासी के पद स्वीकृत किए जा सकते थे ;
- (ग) सेवा एसी होनी चाहिए, जिसके लिए संदाय या तो मासवार दर के आधार पर या मासवार आधार पर संगणित और संदत्त दैनिक दर पर की गई हैं और जो यद्यपि नियमित वेतनमान के सदृश नहीं है फिर भी वेतनमान के मामले में नियमित स्थापनों में स्टाफ द्वारा सुसंगत अवधि पर समस्त कार्य करने के लिए उसको संदत्त किए जा रहे वेतनमानों से कुछ संबंध हो ;
- (घ) आकस्मिकताओं से संदत्त की गई सेवा अनवरत रही हो और बिना भंग के नियमित नियोजन में समामेलन हो गया हो ;

परन्तु यह कि आकस्मिकताओं से संदत्त की गई पिछली सेवा के लिए बेटेज इस शर्त के अधीन रहते हुए 1 जनवरी, 1961 के पश्चात् की अवधि तब सोमित होगा कि सेवा के प्रमाणिक अभिलेख जैसे कि वेतन बिल, छट्टी का रिकार्ड या सेवा पुस्तिका उपलब्ध है।

टिप्पण (1) इस नियम के उपबंध आकस्मिकता से संदत्त नैमित्तिक श्रमिक को भी लागू होंगे।

- (2) नियमित नियोजन में “आमेलन” अभिव्यक्ति से किसी नियमित पद के प्रति आमेलन अभिप्रेत है।

32. किसी प्रतिस्थायी की सेवा की गणना :—किसी प्रतिस्थायी के रूप में भी की गई सेवा पेंशनिक फायदों के लिए प्रतिस्थायी के रूप में शिक्षकों की दशा में तीन मास की और अन्य दशाओं में चार मास की नियमित सेवा पूर्ण होने की तारीख से और बाद में बिना सेवा भंग के नियमित समूह गया समूह घ पद पर आमेलन किए जाने पर गणना में ली जाएगी।।

33. पुनःनियोजित रेल सेवक की दशा में सेवा-निवृत्ति-पूर्व की सेवा (जिसके अंतर्गत रेल सेवा है) की गणना—

(1) ऐसा रेल सेवक, जो प्रतिकर पेंशन या अशक्त पेंशन या प्रतिकर उपदान या अशक्त उपदान का सेवानिवृत्त होने के पश्चात् पुनःनियोजित किया जाता है और किसी ऐसी सेवा या पद में, जिसे ये नियम लागू होंगे है, अधिष्ठायी रूप से नियुक्त किया जाता है, या तो—

- (क) अपनी पूर्वतर सेवा के लिए मंजूर की गई पेंशन लेते रहने या उपदान रखें रखने का विकल्प कर सकता है किन्तु ऐसी दशा में उसको पहले की सेवा की गणना अर्हक सेवा के रूप में नहीं की जाएगी, या
- (ख) अपनी पेंशन लेते रहने से परिवरित होने और—
 - (i) पहले ली गई पेंशन,
 - (ii) पेंशन के भाग के संराशीकरण के लिए प्राप्त मूल्य या उसकी किसी भाग का, और
 - (iii) मृत्यु तथा सेवानिवृत्ति उपदान की रकम, यदि कोई हो का

लौटा देने का और पूर्व सेवा की गणना अर्हक सेवा के रूप में किए जाने का विकल्प कर सकता है :

परन्तु यह कि —

- (i) पुनःनियोजन की तारीख से पूर्व ली गई पेंशन लौटा दिए जाने के लिए अपेक्षित नहीं होगी ;
- (ii) पेंशन का वह तत्व, जिसकी उसको वेतन नियत करने के लिए उपेक्षा की गई थी जिसके अंतर्गत पेंशन का वह तत्व भी है, जिसकी वेतन नियत करने के लिए गणना नहीं की गई थी, उसके द्वारा लौटाया जाएगा ;
- (iii) उपदान के समतुल्य पेंशन के उस तत्व का जिसके अंतर्गत पेंशन के संराशीकृत भाग का तत्व भी है, यदि कोई हो, जिसकी उसका वेतन नियत करने के लिए गणना की गई थी, मृत्यु तथा सेवा-निवृत्ति उपदान की रकम के विरुद्ध मुजरा किया जाएगा और पेंशन का संराशीकृत मूल्य तथा अतिशेष, यदि कोई हो, उसके द्वारा लौटाया जाएगा।

स्पष्टीकरण :—इस उपनियम के परंतुक में “जिसकी गणना में ली गई थी” पद से पेंशन की रकम जिसके अंतर्गत उपदान के समतुल्य वह रकम भी है जिसके द्वारा रेल सेवक का वेतन प्रारम्भिक पुनःनियोजन पर घटाया गया था, अभिप्रेत है और “जिसकी गणना नहीं की गई थी” पद का तदनुसार अर्थ लगाया जाएगा।

(2) (क) उपनियम (1) में निर्दिष्ट किसी रेल सेवा में या पद पर अधिष्ठायी नियुक्ति का आदेश जारी करने वाला प्राधिकारी ऐसे आदेश के साथ रेल सेवक से उस नियम के अधीन ऐसा आदेश जारी किए जाने की तारीख से तीन मास के भीतर या यदि वह उस तारीख को छुट्टी पर है तो उसके छुट्टी से लौट आने के तीन मास के भीतर, इनमें से जो भी पश्चात्त्वर्ती हो, अपने विकल्प का प्रयोग करने और उस उपनियम के खण्ड (ख) के उपबंध भी उसकी जानकारी में लाने की लिखित अपेक्षा करेगा।

(ख) यदि खण्ड (क) में निर्दिष्ट अवधि के भीतर किसी विकल्प का प्रयोग नहीं किया जाता है तो रेल सेवक के बारे में यह समझा जाएगा कि उसने नियम (1) के खण्ड (क) के लिए विकल्प का प्रयोग किया है।

(3) ऐसे रेल सेवक की दशा में, जो उपनियम (1) के खण्ड (क) के लिये विकल्प देता है या जिसके बारे में ऐसा समझा जाता है कि, उसकी पश्चात्त्वर्ती सेवा के लिये अनुज्ञेय पेंशन या उपदान इस परिसीमा के अधीन अध्यधीन होगा कि सेवा उपदान अथवा पेंशन का पूंजी मूल्य और मृत्यु तथा सेवा उपदान के, यदि कोई हो, जो यदि सेवा की दोनों अवधियों को मिला लिया जाये तो जो उसके अंतिम रूप से सेवानिवृत्त होने के समय उसे अनुज्ञेय हो तथा पहले की सेवा के लिये उसे पहले ही अनुदत्त सेवानिवृत्त प्रसुविधाओं के मूल्य के अंतर से अधिक नहीं होगा।

टिप्पण :—पेंशन या पूंजी मूल्य, दूसरी या अंतिम सेवानिवृत्ति के समय लागू रेल सेवा (पेंशन का संरक्षीकरण) नियम, 1993 के अधीन अपशिष्ट-2 में सारणी के अनुसार संगणित किया जायेगा।

(4) (क) ऐसे रेल सेवक से, जो उपनियम (1) के खण्ड (ख) के लिये विकल्प देता है, यह अपेक्षा की जायेगी कि वह अपनी पहले की सेवा की बाबत प्राप्त उपदान, जिसके अन्तर्गत मृत्यु तथा सेवानिवृत्ति उपदान है, छत्तीस से अनधिक मासिक किस्तों में, जिसमें से पहली किस्त उस मास के, जिसमें उसने विकल्प का प्रयोग किया था, ठीक बाद के मास से प्रारंभ होगी, लौटा दे।

(ख) पहले की सेवा की अर्हक सेवा के रूप में गणना कराने का अधिकार तब तक पुनःप्रवर्तित नहीं होगा जब तक कि पूरी रकम लौटा न दी गई हो।

(5) ऐसे सरकारी सेवक की दशा में, जो उपदान को लौटा देने का निर्वाचन करके पूरी रकम लौटा देने से पहले ही मर जाये, उपदान की वह रकम जो लौटाने से रह गई है उस मृत्यु-तथा-सेवानिवृत्ति उपदान भर्त्ते समायोजित कर दी जायेगी जो उसके कुटुंब को संदेय हो जाये।

34. रेल में नियोजन से पूर्ण की गई सैनिक सेवा की गणना—

(1) ऐसा रेल सेवक, जिसे अधिर्वापता की आयु प्राप्त करने से पूर्व किसी रेल सेवा या पद में पुनः-नियोजित किया जाता है और जिसने ऐसे पुनःनियोजन से पूर्व सैनिक सेवा 18 वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने के पश्चात् की थी, किसी रेल सेवा या पद में जमनी पुष्टि हो जाने पर, या तो—

(क) यह विकल्प कर सकेगा कि वह सैनिक पेंशन बराबर लेना रहे या सैनिक सेवा से उन्मोदित हो जाने पर प्राप्त उपदान अपने पास रखे, जिस दशा में उसकी पहले की सैनिक सेवा की गणना अर्हक सेवा के रूप में नहीं की जायेगी; या

(ख) अपनी पेंशन लेने से परिवरित रहने का और,—

(1) पहले ली गई पेंशन;

(2) सैनिक पेंशन के किसी भाग के संरक्षीकरण के लिये प्राप्त मूल्य; और

(3) मृत्यु तथा सेवा निवृत्ति उपदान जिसके अन्तर्गत सेवा उपदान भी है, यदि कोई हो, की रकम, लौटा देने का और अपनी पहले की सैनिक सेवा की गणना अर्हक सेवा के रूप में करने का विकल्प कर सकेगा और ऐसी दशा में वह सेवा जिसकी इस प्रकार गणना करने की अनुज्ञा दी गई है भारत में या अन्यत्र उस कर्मचारी की यूनिट या विभाग के भीतर या बाहर ऐसी सेवा तक निर्बन्धित रहेगी जिसके लिये संदाय भारत की समेकित नीति में से किया जाता है या जिसके लिये पेंशन का अंशदान सरकार द्वारा प्राप्त हो चुका है:

परन्तु यह कि—

(1) पुनः नियोजन की तारीख के पूर्व ली गई पेंशन को लौटाए जाने की अपेक्षा नहीं की जायेगी;

(2) पेंशन का वह तत्व, जिसकी उसका वेतन नियत किये जाने के लिये उपेक्षा की गई थी जिसके अन्तर्गत पेंशन का वह तत्व भी है जो पुनःनियोजन पर वेतन नियत करने के लिये गणना में नहीं लिया गया था, उसके द्वारा लौटाया जाएगा।

(3) उपदान के समतुल्य पेंशन को उस तत्व का जिसके अन्तर्गत पेंशन के संरक्षीकृत भाग का तत्व है, यदि कोई हो, जो वेतन नियत करने के लिये गणना में लिया गया था, मृत्यु तथा सेवानिवृत्ति उपदान की रकम के विरुद्ध मुजरा किया जायेगा और पेंशन का

संरक्षित मूल्य और अतिशेष, यदि कोई हो, उसके द्वारा लौटाया जाएगा।

स्पष्टीकरण : इस उपनियम के परन्तुक में “जो गणना में लिया गया” पद से पेंशन की रकम जिसके अन्तर्गत उपदान के समतुल्य वह रकम है जिसके द्वारा रेल सेवक का वेतन प्रारंभिक पुनःनियोजन पर धटायी गया था, अभिप्रेत है और “जो गणना में नहीं लिया गया था” पद का तदनुसार अर्थ लगाया जाएगा।

(2)(क) उपनियम (1) में निर्दिष्ट किसी रेल सेवा में या पद पर अधिष्ठायी नियुक्ति का आदेश जारी करने वाला प्राधिकारी ऐसे आदेश के साथ रेल सेवक से उस नियम के अधीन ऐसा आदेश जारी किये जाने की तारीख से तीन मास के भीतर या यदि वह उस तारीख को छुट्टी पर है तो उसके छुट्टी से लौट आने के तीन मास के भीतर, इनमें से जो भी पश्चात्पूर्ति हो, अपने विकल्प का प्रयोग करने और उस उपनियम के खण्ड (ख) के उपबंध भी उसकी जानकारी में लाने की लिखित अपेक्षा करेगा।

(ख) यदि खण्ड (क) में निर्दिष्ट अवधि के भीतर किसी विकल्प का प्रयोग नहीं किया जाता है तो रेल सेवक के बारे में यह समझा जायेगा कि उसने नियम (1) के खण्ड (क) के लिये विकल्प का प्रयोग किया है।

(3)(क) ऐसे रेल सेवक से जो उपनियम (1) के खण्ड (ख) के लिये विकल्प देना है, यह अपेक्षा की जायेगी कि वह अपनी पहले की सैनिक सेवा की बाबत प्राप्त पेंशन, बोनस या उपदान छत्तीस से अधिक मासिक किस्ती में, जिनमें पहली किस्त उस मास के, जिसमें उसने विकल्प का प्रयोग किया था, ठीक बाद के मास से प्रारंभ होगी, लौटा दे।

(ख) पहले की सेवा की अर्हक सेवा के रूप में गणना कराने का अधिकार तब तक पुनः प्रवर्तित नहीं होगा जब तक पूरी रकम लौटा न दी गई हो।

(4) ऐसे रेल सेवक की दशा में जो पेंशन, बोनस या उपदान को लौटा देने का निर्वाचन करके पूरी रकम लौटा देने से पहले ही मर जाए, पेंशन या उपदान की वह रकम जो लौटाने से रह गई है, उस मृत्यु तथा सेवा-निवृत्ति उपदान मदों समायोजित कर दी जाएगी, जो उसके कुटुंब को संदेय हो जाये।

(5) जब इस नियम के अधीन ऐसा कोई आदेश पारित किया गया हो जिसमें यह अनुज्ञा दी गई हो कि पहले की सैनिक सेवा की गणना सिविल पेंशन के लिये अर्हक सेवा के एक भाग के रूप में की जाएगी तब उस आदेश के बारे में यह समझा जायेगा कि उसमें सैनिक सेवा और सैनिक तथा रेल सेवा के बीच व्यवधान, यदि कोई हो, का माफ किया जाना सम्मिलित है।

35. सैनिक सेवा का सत्यापन :—पेंशन अनुदत्त किये जाने के पूर्व उस व्यक्ति की युद्ध या सैनिक सेवा का जिसको पेंशन संदेय है और पेंशन के बढ़ने में संदेय किए गए बोनस या उपदान की रकम का प्ररूप 3 में निम्नलिखित प्राधिकारियों में से जैसा प्रत्येक प्रवर्ग के के सामने दक्षित है, सत्यापन किया जाएगा, अर्थात् :—

(क) 1. भूतपूर्व आयुक्त आफिसर—

(i) गैर-चिकित्सीय अधिकारी ए जी की ब्रान्च/संगठन 3 (आर आर और सी) (घ) सेना मुख्यालय, डी.एच.क्यू. डाकखाना, नई दिल्ली।

(ii) चिकित्सा अधिकारी एम पी आर एम (ओ) (एम ई) चिकित्सा निदेशालय, सेना मुख्यालय, डी.एच.क्यू. डाकखाना, नई दिल्ली।

(ख) भूतपूर्व नौमैनिक अधिकारी कार्मिक सेवा निदेशालय, (नौसैनिक नियुक्तियां), मुख्यालय, डी.एच.क्यू. पी.ओ., नई दिल्ली।

(ग) भूतपूर्व वायु सेना अधिकारी कार्मिक निदेशालय (अधिकारी) पी.ओ. (2) वायुसेना मुख्यालय, डी.एच.क्यू. पी.ओ., नई दिल्ली,

भूतपूर्व कनिष्ठ कमीशन अधिकारी, अन्य रैंक और एन. सी. ई. और नौसेना तथा वायुसेना में उनके समतुल्य (संबंधित प्राधिकारियों को प्ररूप 3 की दो प्रतियां मंलग्न करते हुए संबोधित किया जाएगा—

(क) भारतीय सेना के कनिष्ठ संबंधित व्यक्ति के उन्मोचन कमीशन आफिसर, अन्य रैंक पत्र में यथा उपदर्शित उसका अभिलेख कार्यालय (विद्यमान अभिलेख कार्यालय की सूची परिशिष्ट 2 में दी गई है)

(ख) नौसेना के सी.पी.ओ., कप्तान, नौसेना बैरक पेटी आफिसर और नाविक (ड्राफ्टिंग कार्यालय), मुम्बई।

(ग) वायु सेना के एम. डब्ल्यू. कार्मिक निदेशालय (वायु ओ. डब्ल्यू. ओ. एन.सी. सैनिक) वायुसेना मुख्यालय, ओ. और वायु सैनिक वायु भवन, नई दिल्ली।

36. छुट्टी पर व्यतीत की गई अवधियों की गणना— सेवा के दौरान ली गई ऐसी सभी छुट्टी की, जिसके लिये छुट्टी वेतन संदेय है, और चिकित्सीय प्रमाणपत्र पर मंजूर की गई सभी असाधारण छुट्टी की गणना अर्हक सेवा के रूप में की जाएगी :—

परन्तु चिकित्सीय प्रमाणपत्र पर मंजूर की गई असाधारण छुट्टी से भिन्न असाधारण छुट्टी की दशा में

नियुक्ति प्राधिकारी ऐसी छुट्टी मंजूर करने समर्थ, उस छुट्टी की अवधि की अर्हक सेवा के रूप में गणना किये जाने की अनुज्ञा देसकेगा यदि ऐसी छुट्टी रेल गेजार्ड को—

(i) नागरिक संक्षोभ के कारण कार्यभार ग्रहण करने या पुनः ग्रहण करने में उसकी असमर्थता के कारण, या

(ii) उच्च वैज्ञानिक और तकनीकी अध्ययन करने के लिये, मंजूर की गई है।

37. निर्वहन की अवधियों की गणना—जहां किसी रेल सेवक को उसके आचरण की जांच के लंबित रहने तथा निलंबनधीन रखा जाना है जहां ऐसे निलंबन की अवधि की अर्हक सेवा के रूप में केवल तभी गणना की जाएगी जब ऐसी जांच की समाप्ति पर उसे पूरी तरह त्रिभुज कर दिया गया है अथवा निलंबन को पूर्णतः अन्त्यापूर्ण ठहराया गया है और अन्य मामलों में ऐसे निलंबन की अवधि की गणना तब तक नहीं की जाएगी जब तक ऐसे मामलों को शामिल करने वाले नियम के अधीन आदेश पारित करने के लिए मसम प्राधिकारी उस समय स्पष्ट रूप से यह घोषित न करे कि उसकी गणना केवल उसी सोमा तक हो जाएगी जिसकी मसम प्राधिकारी घोषणा करे। जहां रेल सेवक को बहाल करने वाले प्राधिकारी ने पेशन संबंधी फायदों के लिए अर्हक सेवा के प्रयोजन के लिए निलंबन की अवधि की वाचन आदेश पारित नहीं किए हैं वहां निलंबन की अवधि केवल तभी अर्हक होगी जब, यथा-स्थिति, उसे ड्यूटी के रूप में या देम छुट्टी के रूप में समझा गया है।

38. प्रशिक्षण पर व्यतीत की गई अवधियों की गणना—रेल मंत्राल, आदेश द्वारा, यह विनिश्चित कर सकेगा कि रेल प्रशासन के अधीन सेवा में उसकी नियुक्ति से ठीक पूर्ण रेल सेवक द्वारा प्रशिक्षण में व्यतीत की गई अवधि की गणना अर्हक सेवा के रूप में ही जाएगी या नहीं।

39. बहालों पर रिगत सेवा की गणना :—

(1) ऐसा रेल सेवक जो सेवा से पदच्युत कर दिया गया है, हटा दिया गया है या आ आचरण से सेवानिवृत्त कर दिया गया है, किन्तु यपील पर अथवा पुनर्विलोकन पर बहाल कर दिया गया है, पानो विगत सेवा की गणना अर्हक सेवा के रूप में कराने का हकशर है।

(2) यथास्थिति, पदच्युति हटाए जाने या पनिकार्ण सेवानिवृत्ति की तारीख तथा बहालों को तारीख कवाच सेवा में जानी अवधि का व्यवधान हुआ है, उस अवधि और निलंबन की, यदि कोई हो, अवधि की गणना, तब तक अर्हक सेवा के रूप में नहीं की जाएगी जब तक उसे उग प्राधिकारी के, जिसने बहालों का आदेश पारित किया था, किसी विनिश्चित आदेश द्वारा “कर्मव्य” अथवा “छुट्टी” के रूप में विनियमित नहीं कर दिया जाता।

40. पदच्युति अथवा हटा दिए जाने पर सेवा का समपहरण

रेल सेवक के किसी सेवा या पद से पदच्युत किए जाने अथवा हटा दिए जाने से उसकी रिगत सेवा समपहृत हो जाएगी।

41. पदत्याग करने पर सेवा का समपहरण—

(1) रेल सेवक द्वारा सेवा या पद से पदत्याग करने से उसकी विगत सेवा, जब तक कि नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा लोकहित में उसे वापस लेने की अनुज्ञा नहीं दे दी जाती, समपहृत हो जाएगी।

(2) पदत्याग से विगत सेवा का समपहरण नहीं होगा यदि ऐसा पदत्याग समुचित अनुज्ञा से, सरकार के अधीन को अन्य नियुक्ति, चाहे वह सरकार के अधीन अस्थायी हो या स्थायी, वहां जहां सेवा पेशन के लिए अर्हक होती हो, ग्रहण करने के लिए किया गया है।

(3) उपनियम (2) के अधीन आने वाले किसी मामले में सेवा का व्यवधान, जो दो नियुक्तियों के दो विभिन्न स्थानों पर होने के कारण हुआ हो और स्थानांतरण के नियमों के अधीन अनुज्ञेय कार्यभार ग्रहण करने की अवधि से अधिक का न हो, रेल सेवक को उसके कार्यभार छोड़ने की तारीख को बाकी किसी भी प्रकार की छुट्टी देकर या उस सीमा तक उसे औपचारिक रूप से माफ करके जिस सीमा तक वह अवधि सरकारी सेवक की बाकी छुट्टी से पूरी न होती हो, दूर कर दिया जाएगा।

(4) नियुक्ति प्राधिकारी निम्नलिखित शर्तों पर लोकहित में किसी व्यक्ति को अपना त्यागपत्र वापस लेने के लिए अनुज्ञान कर सकेगा, अर्थात् :—

(i) यह कि त्यागपत्र रेल सेवक द्वारा कुछ ऐसे विवश-तापूर्ण कारणों से दिया गया था जो उसकी सत्य-निष्ठा, दिक्षता या आचरण पर कोई प्रभाव नहीं डालता और त्यागपत्र की वापसी के लिए प्रार्थना उन परिस्थितियों में तात्विक परिवर्तन होने के परिणामस्वरूप की गई है जिसके कारण वह मूलतः त्यागपत्र देने के लिए विवश हुआ था;

(ii) यह कि त्यागपत्र प्रभावी होने की तारीख और त्याग-पत्र वापस लेने की प्रार्थना की तारीख से बीच की अवधि के दौरान संबंधित व्यक्ति का आचरण किसी भी प्रकार से अनुचित नहीं था,

(iii) यह कि त्यागपत्र प्रभावी होने की तारीख और रेल सेवक को त्यागपत्र वापस लेने की अनुज्ञा के परिणामस्वरूप कार्य पुनः आरम्भ करने के लिए अनुज्ञात तारीख के बीच कार्य से अनुपस्थित रहने की अवधि नब्बे दिन से अधिक नहीं है,

(iv) यह कि जो पद रेल सेवक द्वारा अपने त्यागपत्र की स्वीकृति पर रिक्त किया गया था या कोई अन्य समान पद, उपलब्ध है?

(5) त्यागपत्र वापिस लेने की प्रार्थना नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा उस दशा में स्वीकार नहीं की जाएगी जब रेल सेवक प्राइवेट वाणिज्यिक कम्पनी में या उसके अधीन अथवा ऐसे निगम या कम्पनी में या उसके अधीन, जो पूर्णतः या सारतः सरकार के स्वामित्वाधीन या नियंत्रणाधीन है या किसी ऐसे निकाय में या उसके अधीन जो सरकार के नियंत्रणाधीन है या उसके द्वारा वित्त पोषित है, नियुक्ति ग्रहण करने की दृष्टि से अपनी सेवा या पद का त्याग करता है।

(6) जहां नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा कोई आदेश किसी व्यक्ति को अपना त्यागपत्र वापिस लेने और कर्तव्य पुनः आरंभ करने की अनुज्ञा देने हुए वापिस किया जाता है वहां उस आदेश के बारे में यह समझा जाएगा, कि उसके अन्तर्गत सेवा में व्यवधान को माफ भी है किन्तु उस व्यवधान की अवधि की गणना अर्हक सेवा के रूप में नहीं की जाएगी।

(7) नियम 53 के प्रयोजन के लिए प्रस्तुत त्यागपत्र से सरकार या रेल प्रशासन के अधीन विगत सेवा का समपहरण नहीं होगा।

42. सेवा में व्यवधान का प्रभाव,—

(1) रेल सेवक की सेवा में व्यवधान से, निम्नलिखित मामलों के सिवाय, उसकी विगत सेवा समपहत हो जाएगी, अर्थात्:—

(क) अनुपस्थिति की प्राधिकृत छुट्टी;

(ख) अनुपस्थिति की प्राधिकृत छुट्टी के अनुक्रम में अप्राधिकृत अनुपस्थिति जब तक कि अनुपस्थित व्यक्ति का पद अधिष्ठायी रूप से न भर लिया जाए,

(ग) निलंबन, वहां जहां उसके ठोक पश्चात् उसी पद में या किसी भिन्न पद में बहाली की गई हो अथवा वहां जहां रेल सेवक मर जाता है या निलंबित रहते हुए, उसे सेवानिवृत्त होने दिया जाता है अथवा अनिवार्य सेवानिवृत्ति की आयु प्राप्त कर लेने पर सेवानिवृत्त कर दिया जाता है;

(घ) सरकार के नियंत्रणाधीन किसी स्थापन में किसी अनर्हक सेवा में स्थानांतरण यदि ऐसे स्थानांतरण का आदेश सक्षम प्राधिकारी ने लोकहित में दिया हो,

(ङ) कार्य-ग्रहण अवधि जब वह एक पद से दूसरे पद पर स्थानांतरण पर हो।

(2) उपनियम (i) में किसी बात के होते हुए भी, नियुक्ति प्राधिकारी आदेश द्वारा, बिना छुट्टी की अनुपस्थिति अवधियों को असाधारण छुट्टी के रूप में भूतलक्षी प्रभाव में परिवर्तित कर सकेगा।

43. सेवा में व्यवधान को माफ किया जाना—

(1) (क) सेवा पुस्तिका में तत्प्रतिबद्ध किसी विनिर्दिष्ट संकेत के न होने पर, किसी रेल सेवक द्वारा सरकार के अधीन की गई सरकारी सेवा, बीच व्यवधान, जिसके अन्तर्गत रक्षा सेवा प्राक्कलनों या रेल प्राक्कलनों में की गई और उनके द्वारा संदत्त निविल सेवा भी है, को दो अवधियों के बीच का व्यवधान स्वतः माफ किया गया समझा जाएगा और व्यवधान-पूर्व सेवा अर्हक सेवा के रूप में समझी जाएगी,

(ख) खंड (क) को कोई वान, सेवा में त्यागपत्र, पदच्युति या हटाए जाने या किसी हड़ताल में भाग लेने के कारण हुए व्यवधान को लागू नहीं होगी।

(2) जहां रेल सेवक की सेवा में व्यवधान माफ कर दिया जाता है वहां वह, अद्यतन कि ऐसी माफी के लिए मंजूरी में तत्प्रतिबद्ध विनिर्दिष्ट उल्लेख न हो, ऐसे व्यवधान के पूर्व अपनी सेवा के बारे में उसके द्वारा प्राप्त कोई उपदान, विशेष अभिदाय तथा भविष्य निधि में सरकारी अभिदाय, यदि कोई हो, उस पर व्याज सहित लौटा देगा।

44. माफ किए गए सेवा में व्यवधान को भविष्य निधि में विशेष अभिदाय के लिए क्या माना जाए—

भविष्य निधि में विशेष अभिदाय के प्रयोजनों के लिए 22 जून, 1961 के पूर्व माफ किया गया सेवा में कोई व्यवधान पेशन संबंधी फायदों के प्रयोजन के लिए भी माफ किया गया समझा जाएगा, परंतु यह तब जब,—

(1) रेल सेवक, जिसने सेवा में व्यवधान के पूर्व की गई सेवा की अवधि के लिए उसके द्वारा प्राप्त उपदान (भविष्य निधि में विशेष अभिदाय या सरकारी अभिदाय या दोनों) की रकम का प्रतिदाय नहीं किया है, उस रकम का सरकार को प्रतिदाय कर देना है, उस रकम पर कोई व्याज उस अवधि के लिए बसूल न किया जाए, जिसके दौरान वह रकम उसके पास रही थी,

(2) (क) प्रतिदाय करने का आशय रेल सेवक द्वारा लिखित रूप में लेखा अधिकारी को, अधिष्ठायी पद में अपनी पुष्टि के आदेशों के जारी होने की तारीख से छह मास के पश्चात् या यदि वह छुट्टी पर है तो उसके छुट्टी से लौटने के छह मास के भीतर बता दिया था,

(ख) प्रतिदाय मख्या में बारह से अत्यधिक किस्तों में, जो कि उस प्राधिकारी द्वारा विनिर्दिष्ट की जाएगी जो सेवा में व्यवधान का माफ करेगा, किया जाएगा,

(ग) पूर्ववर्ती सेवा की गणना का अधिकार तब तक पुनः प्रवर्तित नहीं होगा जब तक संपूर्ण रकम का पूरी तरह प्रतिदाय नहीं कर दिया जाए।

45. विशेष परिस्थितियों में अर्हक सेवा में परिवर्धन—

(1) ऐसा रेल सेवक जो 31 मार्च, 1960 के पश्चात् किसी सेवा या पद से सेवानिवृत्त होता है अधिवर्षिता पेंशन के लिए (किंतु किसी अन्य वर्ग की पेंशन के लिए नहीं) अर्हित करने वाले अपने सेवा काल में अपनी सेवा की एक-चौथाई से अनधिक वास्तविक अवधि या उतनी वास्तविक अवधि, जितनी भर्ती के समय उसकी आयु और पच्चीस वर्ष के अंतर से अधिक हो, अथवा पांच वर्ष की अवधि, इनमें से जो भी कम हो, जोड़ लेने का पात्र होगा यदि वह सेवा या पद, जिसमें रेल सेवक नियुक्त किया गया है, ऐसा है,

(क) जिसके लिए स्नातकोत्तर अनुसंधान या वैज्ञानिक, प्रायोगिक या वृत्तिक क्षेत्रों में विशेषज्ञीय अर्हता या अनुभव आवश्यक है, और

(ख) जिसमें पच्चीस वर्ष से अधिक आयु के अभ्यर्थी प्रसामान्यता भर्ती किए जाते हैं :

परंतु यह रियायत रेल सेवक को तब तक अनुज्ञेय नहीं होगी जब तक कि उस समय, जब वह रेल सेवा छोड़ता है, उसकी वास्तविक अर्हक सेवा दस वर्ष से अन्यून न हो।

परंतु यह और कि यह रियायत केवल तब अनुज्ञेय होगी यदि उक्त सेवा या पद की बाबत भर्ती नियमों में ऐसा विनिर्दिष्ट उपबन्ध है कि उस सेवा या पद के साथ इस नियम का फायदा जुड़ा हुआ है।

परंतु यह भी कि यह रियायत उनके लिए अनुज्ञेय नहीं होगी जो अधिवर्षिता पेंशन के लिए अपनी विगत सेवा की गणना करने के पात्र हैं, जब तक कि वे अपनी सेवानिवृत्ति की तारीख के पूर्व विगत सेवा की गणना छोड़ते हुए, इस उप-नियम के अधीन सेवा के अधिमान के विकल्प का, जो विकल्प एक बार प्रयोग किए जाने पर अंतिम होगा, प्रयोग नहीं करते।

(2) ऐसा रेल सेवक, जो तेतीस वर्ष या उससे अधिक की आयु में भर्ती किया जाता है, अपनी नियुक्ति की तारीख से तीन मास की अवधि के भीतर पेंशन के अपने अधिकारों को छोड़ने का निश्चय कर सकेगा और ऐसा करने पर वह किसी अशदायी भविष्य निधि में अशदान करने का पात्र होगा।

(3) उप-नियम (2) में निर्दिष्ट विकल्प का एक बार प्रयोग कर लिए जाने पर वह अंतिम होगा।

46 सयुक्त राष्ट्र और अन्य सगठनों में प्रतिनियुक्ति की अवधि :— सयुक्त राष्ट्र सचिवालय या सयुक्त राष्ट्र के अन्य किन्हीं निकायों, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा निधि, पुनर्निर्माण और विकास का अंतरराष्ट्रीय बैंक या एशियाई विकास बैंक या कामनवेल्थ सचिवालय में पांच वर्ष या उससे अधिक के लिए अन्यत्र सेवा पर प्रतिनियुक्त रेल सेवक अपने विकल्प पर —

(क) अपनी अन्यत्र सेवा की बाबत पेंशन का अशदान अदा कर सकेगा और ऐसी सेवा की गणना इन

नियमों के अधीन पेंशन के लिए अर्हक रूप में कर सकेगा, या

(ख) पूर्वोक्त सगठनों के नियमों के अधीन अनुज्ञेय सेवानिवृत्ति प्रसुविधाओं का उपभोग कर सकेगा और ऐसी सेवा की गणना इन नियमों के अधीन पेंशन के लिए अर्हक रूप में नहीं कर सकेगा।

परंतु जहां कि कोई रेल सेवक खंड (ख) के लिए विकल्प करता है वहां सेवानिवृत्ति प्रसुविधाएं उसे भारत में रूप्यों में ऐसी तारीख से और ऐसी रीति से सदेय होगी जिसे रेल बोर्ड, आदेश द्वारा, विनिर्दिष्ट करे।

परंतु यह और कि रेल सेवक द्वारा दिए गए पेंशन अशदान, यदि कोई हो, उसे लौटा दिए जाएंगे।

47. पच्चीस वर्ष की सेवा के पश्चात् अथवा सेवानिवृत्ति के पांच वर्ष पूर्व अर्हक सेवा का सत्यापन — (1) जहां कि कोई रेल सेवक सेवा के पच्चीस वर्ष पूरे कर लेता है या सेवानिवृत्ति की तारीख के पूर्व उसके पास सेवा के पांच वर्ष रह जाते हैं, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, वहां राजपत्रित रेल सेवक की दशा में सबद्ध लेखा परीक्षा अधिकारी या राजपत्रित रेल सेवा की दशा में सबद्ध लेखा परीक्षा अधिकारी से परामर्श करके कार्यालय अध्यक्ष, तत्समय प्रवृत्त नियमों के अनुसार उस सेवा का जो ऐसे रेल सेवक द्वारा की गई हो, सत्यापन करेगा, अर्हक सेवा का अवधारण करेगा, इस प्रकार अवधारित अर्हक सेवा की अवधि उसे प्ररूप-15 में ससूचित करेगा।

(2) उप-नियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, जहां कोई रेल सेवक किसी अस्थायी विभाग से या उस विभाग के जहां वह पहले सेवा कर रहा था, बद होने के कारण या जो पद वह धारित कर रहा था उसके फालतू घोषित कर दिए जाने के कारण वह किसी अन्य विभाग में अंतरित किया जाता है, वहां उसकी सेवा का सत्यापन तब किया जाए जब ऐसी घटना घटित हो।

(3) उप-नियम (1) और उपनियम (2) में किया गया सत्यापन अंतिम समझा जाएगा और उस पर तब तक पुन विचार नहीं किया जाएगा जब तक उन नियमों और आदेशों में तत्पश्चात् कोई परिवर्तन करना आवश्यक न हुआ हो जो उन शर्तों को शासित करते हैं जिनके अधीन सेवा पेंशन के लिए अर्हक होती है।

48. सेवा में कमी :— रेल सेवक की सेवा में कोई कमी माफ नहीं की जाएगी।

अध्याय 4

परिलब्धियां और औसत परिलब्धियां

49 परिलब्धियां — (क) “परिलब्धियां” पद में, विभिन्न सेवानिवृत्ति और मृत्यु प्रसुविधाओं की गणना के प्रयोजन के लिए, संहिता के नियम 1303 के खंड (1) में यथा-

परिभाषित ऐसा मूल वेतन अभिप्रेत है जो रेल सेवक अपनी सेवानिवृत्ति से ठीक पूर्व या अपनी मृत्यु की तारीख को ले रहा था :

परंतु,—

- (क) वृद्धिरूद्ध वेतनवृद्धि सेवानिवृत्त प्रमुविधाओं की संगणना के लिए परिलब्धियां समझी जाएंगी ;
- (ख) इन नियमों में “वेतन” से रेल सेवा (पुनरीक्षित वेतन) नियम, 1986 के अधीन पुनरीक्षित वेतनमानों में वेतन अभिप्रेत है ;

परंतु परिचालन कर्मचारिवृद्ध के “वेतन तत्व” के अंतर्गत परिलब्धियों की संगणना के लिए पचपन प्रतिशत मूल वेतन भी है ।

टिप्पण-1 :—यदि कोई रेल सेवक, अपनी सेवानिवृत्ति से या सेवा में रहते हुए मृत्यु से ठीक पूर्व कर्तव्य से ऐसी छुट्टी पर अनुपस्थित था जिसके लिए छुट्टी वेतन संदेय है, अथवा निलंबित किए जाने के पश्चात् सेवा का समपहरण हुए बिना बहाल कर दिया गया था वे परिलब्धियां जो उसे तब मिलती जब वह कर्तव्य से अनुपस्थित न रहा होता या निलंबित न किया गया होता, इस नियमों के प्रयोजन के लिए परिलब्धियां होंगी :

परंतु (टिप्पण 4 में निर्दिष्ट वेतन वृद्धि से भिन्न) वेतन में कोई भी वृद्धि जो वस्तुतः ली न गई हो, उसकी परिलब्धि का भाग नहीं होगी ।

टिप्पण-2 :—जहां कोई रेल सेवक, अपनी सेवानिवृत्ति से या सेवा में रहते हुए मृत्यु से ठीक पूर्व ऐसी छुट्टी पर, जिसके लिए छुट्टी वेतन संदेय है, कोई उच्चतर नियुक्ति स्थानापन्न या अस्थायी हैमियत में पारित करने के पश्चात् चला गया था वह ऐसी उच्चतर नियुक्ति पर ली गई परिलब्धियों की प्रसुविधा केवल तभी दी जाएगी जब यह प्रमाणित कर दिया जाए कि यदि रेल सेवक छुट्टी पर न गया होता तो यह उस उच्चतर नियुक्ति पर बना रहता ।

टिप्पण-3 :—यदि कोई रेल सेवक अपनी सेवानिवृत्ति से या सेवा में रहते हुए मृत्यु से ठीक पूर्व असाधारण छुट्टी पर कर्तव्य से अनुपस्थित रहा था अथवा ऐसे निलंबित रहा था कि उसकी अवधि की गणना सेवा के रूप में नहीं हो सकती तो वे परिलब्धियां, जो उसे ऐसे छुट्टी पर जाने से अथवा निलंबित किए जाने से ठीक पूर्व मिल रही थीं, इस नियम के प्रयोजनों के लिए परिलब्धियां होंगी ।

टिप्पण-4 :—यदि कोई रेल सेवक अपनी सेवानिवृत्ति से या सेवा में रहते हुए मृत्यु से ठीक पूर्व, अर्जित छुट्टी पर था और उसने वेतनवृद्धि अर्जित की जो विचारित नहीं की गई तो ऐसी वेतन वृद्धि, यद्यपि, वस्तुतः न ली गई हो, उसकी परिलब्धियों का भाग होगी :

परंतु यह तब जबकि वेतन वृद्धि एक सौ बीस दिन से अनधिक की अर्जित छुट्टी के चालू रहने के दौरान अथवा एक सौ बीस दिन से अधिक की अर्जित छुट्टी की दशा में प्रथम एक सौ बीस दिन की अर्जित छुट्टी के दौरान अर्जित की गई हो ।

टिप्पण-5 :—भारत की सशस्त्र सेनाओं में प्रतिनियुक्ति पर रहते हुए, रेल सेवक द्वारा लिया गया वेतन परिलब्धियां माना जाएगा ।

टिप्पण-6 :—अन्यत्र सेवा पर रहते हुए रेल सेवक द्वारा लिया गया वेतन परिलब्धियां नहीं माना जाएगा किंतु केवल वही वेतन जो उसने, यदि वह अन्यत्र सेवा में न रहा होता तो, रेल प्रशासन के अधीन लिया होता, परिलब्धियां माना जाएगा ।

टिप्पण-7 :—जहां कोई पेंशन भोगी, (जो रेल सेवा में पुनः नियोजित किया गया है, नियम 33 के उप-नियम (1) के खंड (क) या नियम 34 के उप-नियम (1) के खंड (क) के निबंधनों के अनुसार पूर्ववर्ती सेवा के लिए अपनी पेंशन प्रतिधारित रखने का विकल्प करता है और उन्हें पुनः नियोजन पर जिसके वेतन में से ऐसी रकम, जो पेंशन से अधिक नहीं है कम की गई है, वहां पेंशन का तत्व, जिससे कि उसके वेतन को कम किया गया है, परिलब्धियों के रूप में माना जाएगा ।

टिप्पण-8 :—जहां कोई रेल सेवक रेल विभाग के स्वायत्त निकाय के रूप में संपरिवर्तित होने के फलस्वरूप किसी स्वायत्त निकाय में अंतरित किया गया है और इस प्रकार अंतरित रेल सेवक रेल के नियमों के अधीन पेंशन प्रसुविधाओं को प्रतिधारित करने का विकल्प करता है, वहां स्वायत्त निकाय के अधीन ली गई परिलब्धियों को इस नियम के प्रयोजन के लिए परिलब्धियों के रूप में समझा जाएगा ।

50. औसत परिलब्धियां :—औसत परिलब्धियां रेल सेवक की सेवा के अंतिम दस मास के दौरान उसके द्वारा ली गई परिलब्धियों के प्रति निर्देश से अवधारित की जाएंगी ।

टिप्पण-1 :—यदि रेल सेवक अपनी सेवा के अंतिम दस मास के दौरान कर्तव्य से ऐसी छुट्टी पर अनुपस्थित था, जिसके लिए छुट्टी वेतन संदेय है, अथवा निलंबित किए जाने के पश्चात् सेवा का समपहरण हुए बिना बहाल कर दिया गया था तो वे परिलब्धियों, जो उसे तब मिलती जब वह कर्तव्य से अनुपस्थित न रहा होता या निलंबित न किया गया होता, औसत परिलब्धियां, अवधारित करने के लिए लेखों में ली जाएंगी :

परंतु (टिप्पण-3 में निर्दिष्ट वेतन वृद्धि से भिन्न) वेतन में कोई भी वृद्धि जो वस्तुतः ली न गई हो, उसकी परिलब्धियों का भाग नहीं होगी ।

टिप्पण-2:—यदि कोई रेल सेवक अपनी सेवा में अंतिम दस मास के दौरान कर्तव्य से असाधारण छुट्टी पर अनुपस्थित रहा था, अथवा ऐसे निर्लब्ध रहा था कि उसकी अवधि की गणना सेवा के रूप में नहीं हो सकती तो छुट्टी की या निर्लब्ध की पूर्वोक्त अवधि की औसत परिलब्धियों की गणना करने में अवहेलना कर दी जाएगी, और दस मास से पहले की इतनी ही अवधि सम्मिलित कर ली जाएगी।

टिप्पण-3:—ऐसे रेल सेवक की दशा में जो सेवा के अंतिम दस मास के दौरान अर्जित छुट्टी पर था और जिसने ऐसी वेतन वृद्धि, जो निर्धारित नहीं की गई है, अर्जित कर ली गई है, तो ऐसी वेतन वृद्धि जो वस्तुतः ली न गई हो, औसत परिलब्धियों में सम्मिलित कर ली जाएगी:

परंतु यह तब जब कि वेतन वृद्धि एक सौ बीस दिन से अधिक की अर्जित छुट्टी के चालू रहने के दौरान, अथवा एक सौ बीस दिन से अधिक की अर्जित छुट्टी की दशा में प्रथम एक सौ बीस दिन की छुट्टी के दौरान, अर्जित की गई हो;

अध्याय 5

पेंशनों के वर्ग और उनके दान की शासित करने वाली शर्तें

51. अधिवर्षिता पेंशन—अधिवर्षिता पेंशन ऐसे रेल सेवक को प्रदान की जाएगी जिसे अनिवार्य सेवानिवृत्ति की आयु प्राप्त कर लेने पर सेवानिवृत्त किया जाता है।

टिप्पण:—1 नवम्बर, 1973 से, समूह “ख” “ग” और “घ” सेवा या पदों के रेल सेवक और 1 अप्रैल, 1974 से समूह “क” सेवा या पदों के रेल सेवक संहिता के नियम 1802, 1803 और 1804 के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डालने बिना उस मास की अन्तिम तारीख के अपराह्न से सेवानिवृत्त हो जाएंगे जिसमें संहिता के नियम 1801 के अनुसार उनकी सेवानिवृत्ति की तारीख पड़ती है।

52. सेवानिवृत्ति पेंशन:—सेवानिवृत्ति पेंशन ऐसे रेल सेवक को प्रदान की जाएगी जो इन नियमों के नियम 66 और नियम 67 तथा संहिता के नियम 1802 के उपबंधों के अनुसार, अनिवार्य सेवानिवृत्ति की आयु प्राप्त करने से पहले ही सेवानिवृत्त होता है अथवा सेवानिवृत्त किया जाता है।

53. किसी निगम, कंपनी या निकाय में या उसके अधीन आमेलित कर लिए जाने पर पेंशन-ऐसे रेल सेवक के बारे में, जिसे किसी ऐसे निगम या कंपनी में या उसके अधीन, जो पूर्णतः या पर्याप्ततः सरकार के स्वामित्व या नियंत्रण में है, अथवा सरकार द्वारा नियंत्रित या वित्तपोषित किसी निकाय में या उसके अधीन किसी सेवा या पद में आमेलित किए जाने की अनुज्ञा दे दी गई है, यदि ऐसा

आमेलन सरकार द्वारा लोकहित में घोषित किया गया है तो, यह समझा जाएगा कि वह उस तारीख से सेवा निवृत्त हुआ है जिसको उसका त्यागपत्र स्वीकार किया जाता है, और वह ऐसी सेवानिवृत्ति प्रसुविधाएं, ऐसी तारीख से जो उसे लागू रेल प्रशासन के आदेशों के अनुसार अवधारित की जाएं, प्राप्त करने का पात्र होगा जिनके लिए उसने निर्वाचन किया हो अथवा जिनके बारे में यह समझा गया हो कि उराने निर्वाचन किया है।

स्पष्टीकरण:—आमेलन की तारीख—

1. (i) यदि कोई रेल कर्मचारी तत्काल आमेलन आधार पर किसी निगम या कंपनी या निकाय में कार्य-भार ग्रहण करता है, वह तारीख होगी जिसको वह वस्तुतः उस निगम या कंपनी या निकाय में कार्यभार ग्रहण करता है,

(ii) यदि कोई रेल कर्मचारी रेल प्रशासन के अधीन धारणाधिकार रखने हुए अन्यत्र सेवा निर्बंधनों पर निगम या कंपनी या निकाय में प्रारम्भ में कार्यभार ग्रहण करता है तो वह तारीख होगी जिसमें उसका बिना शर्त त्याग पत्र रेल प्रशासन द्वारा स्वीकार किया जाता है।

(2) उपनियम (1) के उपबंध ऐसे रेल सेवक को भी लागू होंगे जिसे ऐसे संयुक्त सेक्टर उपक्रम में आमेलित होने की अनुज्ञा दी जाती है जो पूर्णतः केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों के संयुक्त नियंत्रण के अधीन है या दो या अधिक राज्य सरकारों या संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन के संयुक्त नियंत्रण के अधीन है।

(3) जहां केन्द्रीय सरकार द्वारा नियंत्रित या वित्तपोषित निकाय में, जिसमें रेल सेवक को आमेलित किया जाता है, कोई पेंशन स्कीम वहां वह रेल प्रशासन के अधीन की गई सेवा की गणना रेल प्रशासन द्वारा जारी आदेशों के अनुसार पेंशन के लिए उस निकाय में करने के विकल्प का प्रयोग करने अथवा रेल प्रशासन के अधीन की गई सेवा के लिए अनुपातित सेवानिवृत्त प्रसुविधा प्राप्त करने का हकदार होगा।

स्पष्टीकरण:—निकाय से स्वायत्त निकाय या कानूनी निकाय अभिप्रेत है।

54. निगम, कंपनी या निकाय में उनके अधीन आमेलन पर व्यक्तियों को एक मुश्त रकम का संदाय—जहां नियम 53 में निर्दिष्ट कोई रेल सेवक पेंशन मद्धे मृत्यु सेवानिवृत्ति उपदान तथा एकमुश्त रकम प्राप्त करने के विकल्प का निर्वाचन करता है वहां उसे मृत्यु एवं सेवानिवृत्त उपदान के अतिरिक्त,—

(क) एक निमित्त आवेदन करने पर, एकमुश्त रकम, जो उसकी पेंशन के एक तिहाई के संराशिकृत मूल्य से अधिक नहीं होगी, जैसी कि उसे रेल सेवा (पेंशन संराशिकरण) नियम 1993 के अनुसार अनुज्ञेय है दी जाएगी, और

(ख) सेवांत प्रसुविधाएं, जो उसकी पदत्याग की तारीख को रेल सेवा (पेंशन संराशिकरण), नियम 1993

के परिशिष्ट में दी गई संराशिकरण सारणी के प्रति निर्देश करते हुए निकाली गई पेंशन के एक तिहाई भाग का संराशिकरण करने के बाद बची पेंशन की अतिशेष रकम के संराशीकृत मूल्य के बराबर होंगी, इस शर्त के अधीन रहते हुए दी जाएंगी कि रेल सेक्टर अपनी पेंशन के दो तिहाई भाग को लेने का अपना अधिकार अभ्यर्पित करे।

55. अशक्त पेंशन :— (1) अशक्त पेंशन ऐसे रेल सेवक को प्रदान की जा सकेगी जो किसी ऐसी शारीरिक या मानसिक अशक्तता के कारण सेवा से सेवानिवृत्त होता है जो उसे सेवा के लिए स्थायी तौर पर असमर्थ बना देती है।

(2) अशक्त पेंशन के लिए आवेदन करने वाला रेल सेवक शारीरिक या मानसिक अशक्तता के कारण सेवा करने की अपनी स्थायी असमर्थता का एक चिकित्सा प्रमाणपत्र सम्यक्तः गठित चिकित्सा प्राधिकारी से लेकर प्रस्तुत करेगा।

(3) जहां उपनियम (2) में निर्दिष्ट चिकित्सा प्राधिकारी ने किसी रेल सेवक के बारे में यह घोषणा की है कि वह जिस प्रकृति का कार्य करता रहा है उससे कम असमर्थ प्रकृति की सेवा और आगे करने के योग्य है वहां ऐसा रेल सेवक यदि वह इस प्रकार नियोजित होने के लिए इच्छुक है, निम्नतर पद पर नियोजित किया जाना चाहिए और यदि किसी निम्नतर पद पर नियोजित करने के कोई माधन नहीं है तो उसे अशक्त पेंशन दी जा सकती है।

(4) यदि कोई रेल सेवक यह समझता है कि वह अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने के लिए उचित स्वस्थ स्थिति में नहीं है तो वह अशक्त उपदान या पेंशन पर सेवानिवृत्ति के लिए समुचित प्राधिकारी को आवेदन कर सकता है।

56. चिकित्सा प्रमाणपत्र के बारे में नियम—असमर्थता के लिए चिकित्सा प्रमाण पत्र चिकित्सा प्राधिकारी द्वारा निम्नलिखित रूप में प्रामाणीकृत किया जाएगा :—

(i) यदि रेल सेवक विदेश में सेवा कर रहा है या भारत के बाहर छुट्टी पर है तब ऐसे चिकित्सा बोर्ड द्वारा किया जाएगा जो इस प्रयोजन के लिए विदेश में संश्लिष्ट भारतीय मिशन द्वारा संयोजित किया जाए और जो एक कार्य चिकित्सक शल्य चिकित्सक और नेत्र विशेषज्ञ से मिलकर बनेगा और ये सभी परामर्श दाता की हैसियत के होंगे तथा संश्लिष्ट मिशन के लिए अनुमोदित चिकित्सकों से लिए जाएंगे:

परन्तु जब कभी किसी नारी रेल सेवक की परीक्षा की जानी हो तब ऐसे चिकित्सा बोर्ड के सदस्य के रूप में एक महिला चिकित्सक को सम्मिलित किया जाएगा।

(ii) यदि रेल सेवक भारत में है तो —

(क) यदि रेल सेवक समूह 'घ' या समूह 'ग' पद धारण करता है किन्तु जिसका वेतन प्रतिमास 750 रु. से अधिक नहीं है, जिले या खंड के भारमाधक चिकित्सा अधिकारी द्वारा ;

(ख) सभी अन्य मामलों में ऐसे चिकित्सा बोर्ड द्वारा प्रमाणित किया जाएगा जो तीन जिला या खंड चिकित्सा अधिकारियों से मिलकर बना हो और उनमें से प्रत्येक ज्येष्ठ वेतनमान में हो किन्तु यदि यह संभव न हो तो एक या दो सदस्य किसी मान्यता-प्राप्त आयुर्विज्ञान संस्था के कर्मचारिवृन्द में मुख्य चिकित्सा अधिकारी या सिविल या प्रेसीडेंसी शल्य चिकित्सक या विशेषज्ञ हो सकते हैं किन्तु जहां तक संभव हो ऐसे बोर्ड के सदस्यों में से एक सदस्य काय चिकित्सक, दूसरा शल्य चिकित्सक और तीसरा अपेक्षित विषय में विशेषज्ञ होगा।

टिप्पण : जिला या खंड का स्वतंत्र भार साधन रखने वाला सहायक चिकित्सा अधिकारी बोर्ड चिकित्सा के सदस्य के रूप में उस दशा में सहयोगित किया जा सकता है जब तीन ज्येष्ठ वेतनमान के चिकित्सा अधिकारियों के बोर्ड का गठन करने में कोई कठिनाई हो :

परन्तु यदि रेल सेवक रेल बोर्ड या रेल लाइमन कार्यालय में दिल्ली या नई दिल्ली में तैनात है और सिविल (न कि रेल प्रशासन) चिकित्सा नियम द्वारा शासित होता है, वहां चिकित्सा प्राधिकारी वह होगा जिसे केन्द्रीय स्थायी चिकित्सा बोर्ड, डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल या सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली का अध्यक्ष अवधारित करे, जब तक कि चिकित्सा परीक्षा, दिल्ली या नई दिल्ली से भिन्न किसी अन्य स्थान पर न की जानी हो, जिस दशा में चिकित्सा प्राधिकारी वह होगा जिसे विभागाध्यक्ष अवधारित करे।

57. चिकित्सा प्रमाण पत्र देने के बारे में शर्तें :—(1) उस दशा के सिवाए जब वह भारत के बाहर छुट्टी पर हो, कोई रेल सेवक असमर्थता के चिकित्सा प्रमाण पत्र के लिए आवेदन नहीं करेगा और ऐसा प्रमाण पत्र तब तक नहीं दिया जाएगा जब तक —

- (i) आवेदक यह दर्शित करने के लिए पत्र प्रस्तुत न करे कि उसके कार्यालय या विभाग का अध्यक्ष चिकित्सा प्राधिकारी के समक्ष उपस्थित होने के उसके आणय से अवगत है, और
- (ii) चिकित्सा प्राधिकारी को उसकी सेवा पुस्तिका या सेवा के इतिवृत्त में यथा अधिलिखित आवेदक को आयु के बारे में सूचित नहीं कर दिया जाता और उस ठीक पूर्ववर्ती तीन वर्ष के दौरान उसके द्वारा की गई छुट्टी का विवरण तथा चिकित्सा मामले का इतिवृत्त तथा किया गया इलाज यथासंभव प्रदत्त नहीं कर दिए जाने।

58. सेवानिवृत्ति के आधार देने हुए कथन :—जब किसी रेल सेवक को जब वह अभी भी 58 वर्ष की आयु में कम है, साधारण निर्मोक्षता के कारण अशक्त उपदान या पेंशन पर सेवानिवृत्त करना प्रस्तावित है तब समुचित प्राधिकारी, जिसके अधीन वह काम कर रहा है, चिकित्सा प्राधिकारी को एक

अतिरिक्त विवरण, उन आधारों को बताते हुए जिन पर उसको सेवानिवृत्त करना प्रस्तावित है, भेजेगा।

59 चिकित्सा प्रमाण पत्र का प्रारूप—चिकित्सा प्रमाणपत्र निम्नलिखित प्रारूप में होगा—

“प्रमाणित किया जाता है कि मैंने/हमने गद्य —————
 के पुत्र कछ —————
 की, जो कि ————— से
 ————— है, सावधानीपूर्वक परीक्षा की है,
 उसके अपने कथन के अनुसार उसकी आयु —————
 वर्ष है और देखने से लगभग ————— वर्ष
 है।

मैं/हम ————— कछ के बारे में
 समझते हैं कि वह ————— (यह रोग या
 कारण का कथन करें) के फलस्वरूप किसी प्रकार की
 (या उस विभाग में जिसका वह है) और सेवा करने के
 लिए पूर्णतः और स्थायी तौर पर असमर्थ हो गया है।
 मेरे/हमारे विचार में उसकी असमर्थता अनिवार्य या
 असंयमित आदतों के कारण हुई प्रतीत नहीं होती है।

टिप्पण यदि असमर्थता अनिवार्य या असंयमित आदतों के
 परिणामस्वरूप है तो अन्तिम वाक्य के स्थान पर निम्नलिखित
 रखा जाएगा —

मेरी/हमारी राय में उसकी असमर्थता अनिवार्य असंयमित
 आदतों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से त्वरित हुई है या बढ़ी है।

(यदि असमर्थता पूर्ण और स्थायी प्रतीत न हो तो प्रमाण
 पत्र को तदनुसार उपांतरित किया जाए और निम्नलिखित
 परिवर्धन किए जाने चाहिए) :—

मेरी/हमारी राय यह है कि ————— कछ,
 जिस प्रकृति का कार्य वह कर रहा है उससे कम श्रम साध्य
 प्रकृति की सेवा और आगे करने के योग्य है (अथवा वह —
 ————— मास तक आराम करने के पश्चात्, जिस
 प्रकृति का कार्य वह कर रहा है उसमें कम श्रम साध्य प्रकृति
 की सेवा करने के योग्य हो सकता है)

60 असमर्थता या कम आय के कथन के बारे में चिकि-
 त्सीय राय के कारण यदि चिकित्सा प्राधिकारी रेल सेवक के
 58 वर्ष की आयु से कम होने पर भी साधारण दुर्बलता के
 कारण आगे सेवा करने के लिए उसे असमर्थ समझता है तो
 वह अपनी राय के लिए विस्तृत कारण देगा। यदि चिकित्सा
 प्राधिकारी उसे 58 वर्ष से अधिक आयु का समझता है तो
 वह इस विश्वास के अपने कारण कथित करेगा कि कम आयु
 बताई गई है।

परन्तु सदेहास्पद मामलों में, दूसरी चिकित्सीय राय अमि-
 प्राप्त की जाएगी।

61 प्रमाणपत्र में व्योम की अपेक्षा—मात्र यह प्रमाण
 पत्र कि अक्षता बढ़ने या बढ़ती आयु से होने वाले प्राकृतिक
 क्षय के कारण है, अथवा उत्थान या पेंशन पर किसी रेल
 सेवक का सेवानिवृत्त करने लिए पर्याप्त नहीं समझा जाएगा।

62 अशक्तता की तारीख.—कोई रेल सेवक जिसे नियम
 55 में निर्दिष्ट चिकित्सा प्राधिकारी द्वारा आगे सेवा के लिए
 पूर्णतः और स्थायी तौर पर असमर्थ घोषित किया जाता है,
 यदि वह कर्तव्य पर है, तो उसके कार्य से कार्य मक्त होने की
 तारीख से, जो कि चिकित्सा प्राधिकारी की रिपोर्ट की प्राप्ति
 पर अत्रिलम्ब व्यवस्थित की जाएगी, सेवानिवृत्त किया जाएगा,
 अथवा यदि उसे संहिता के नियम 522 के अधीन छुट्टी मजूर
 की गई है तो ऐसी छुट्टी की समाप्ति पर सेवानिवृत्त किया
 जाएगा किन्तु यदि वह चिकित्सा प्रमाणपत्र की प्राप्ति के समय
 छुट्टी पर है तो उसे उक्त संहिता के नियम 52 के अधीन
 ऐसी छुट्टी या यदि उसे छुट्टी के विस्तार की कोई मजूरी दी
 गई है तो ऐसे विस्तार की समाप्ति पर सेवानिवृत्त किया
 जाएगा।

63 प्रतिफल पेशन—(1) यदि कोई रेल सेवक अपने
 स्थायी पद के उत्पादन के कारण उन्मोचित किए जाने के
 लिए चुना जाता है तो, जब तक कि वह किसी अन्य ऐसे
 पद पर नियुक्त नहीं कर दिया जाता जिसकी शर्तें उसे
 उन्मोचित करने के लिए मक्षम प्राधिकारी द्वारा कम से कम उस
 रेल सेवक के पद की शर्तों के समतुल्य समझी जाए, उसे—

(क) ऐसी प्रतिफल पेशन लेने का विकल्प प्राप्त होगा
 जिसके लिए वह आने द्वारा की गई सेवा के लिए हफ्ता हो,
 अथवा

(ख) ऐसे वेतन पर जिसे देने का प्रस्ताव किया जाए
 कोई अन्य नियुक्ति स्वीकार करने और अपनी
 पढ़ने की सेवा की गणना पेंशन के लिए करने रहने
 का विकल्प हो।

(2) (क) स्थायी नियोजन में के रेल सेवक को, उसके
 स्थायी पद के उत्पादन पर उसकी सेवा समाप्त
 करने से पूर्व कम से कम तीन मास की सूचना
 दी जाएगी।

(ख) जहां कि रेल सेवक को कम से कम तीन मास की
 सूचना नहीं दी जाती और जिस तारीख को रेल
 सेवक की सेवा समाप्त की जाती है उक्त तारीख
 को उसके लिए किसी अन्य नियोजन की व्यवस्था
 नहीं की जाती वहां उसकी सेवा समाप्त करने के
 लिए मक्षम प्राधिकारी सूचना में वस्तुतः दी गई
 तीन मास से कम की उतनी अवधि के वेतन
 और भत्ते से अनधिक रकम का, दिया जाना मजूर
 कर सकेगा।

(ग) उस अवधि के लिए, जिसकी बाबत उस सूचना के
 बढ़ते वेतन और भत्ते प्राप्त होने हैं, कोई भी
 प्रतिफल पेशन संदेह नहीं होगी।

(3) ऐसी दशा में, जिसमें रेल सेवक को उतनी अवधि
 के लिए जितनी सूचना में दी गई है तीन मास से कम हो,
 वेतन और भत्ते मजूर किए जाते हैं और उसे उस अवधि के
 अवसान के पूर्व जिसके लिए उसे वेतन और भत्ते मिल गए

है, पुनः नियोजित कर लिया जाता है, वह अपने पुनःनियोजन के बाद की अवधि के लिए इस प्रकार वेतन और भत्तों को लौटा देगा।

(4) यदि कोई रेल सेवक, जो प्रतिकर पेंशन पाने का हकदार है, उसके बजाय रेल प्रशासन के अधीन कोई अन्य नियुक्ति स्वीकार कर लेता है और तत्पश्चात् किसी वर्ष की पेंशन प्राप्त करने का हकदार हो जाता है तो ऐसी पेंशन की रकम उस पेंशन की रकम से कम नहीं होगी, जिसका दावा वह उस दशा में कर सकता यदि उसने उस नियुक्ति को स्वीकार नहीं किया होता।

64. अनिवार्य सेवानिवृत्ति पेंशन.—(1) शास्ति के रूप में सेवा से अनिवार्य रूप से निवृत्त किए गए रेल सेवक को, ऐसी शास्ति अधिरोपित करने के लिए सक्षम प्राधिकारी द्वारा, पेंशन या उपदान या दोनों ही की, ऐसी दर पर जो प्रतिकर पेंशन या उपदान या दोनों ही की, जो उसे उसकी अनिवार्य सेवानिवृत्ति की तारीख को अनुज्ञेय हो, दो-तिहाई से अन्यून किन्तु ऐसी पूरी पेंशन या उपदान से अनधिक हो, मंजूरी दी जा सकेगी।

(2) जब कभी किसी सरकारी सेवक की दशा में राष्ट्रपति ऐसा कोई आदेश (चाहे वह मूल अंश आदेश हो, या अधीन आदेश हो या पुनर्विलोकन शास्ति का प्रयोग करते हुए कोई आदेश हो) पारित करता है जिसमें इन नियमों के अधीन अनुज्ञेय पूरी प्रतिकर पेंशन से कम पेंशन दी जाती है तब ऐसा आदेश पारित करने से पूर्व संघ लोक सेवा आयोग से परामर्श किया जाएगा।

स्पष्टीकरण :—इस उपनियम में, “पेंशन” शब्द के अन्तर्गत उपदान भी है।

(3) यथास्थिति, उपनियम (1) या उपनियम (2) के अधीन प्रदत्त या दी गई पेंशन 375 रुपए प्रतिमास से कम नहीं होगी।

65. अनुकंपा भत्ता.—(1) ऐसे रेल सेवक की, जिसे सेवा से पदच्युत किया गया है या हटा दिया गया है, पेंशन और उपदान समपद्धत हो जाएगा :

परन्तु उसे सेवा से पदच्युत करने या हटाने के लिए सक्षम प्राधिकारी यदि वह मामला ऐसा हो कि उस पर विशेष विचार किया जा सकता हो तो, ऐसी पेंशन या उपदान या दोनों की दो-तिहाई से अनधिक ऐसा अनुकंपा भत्ता मंजूर कर सकेगा जो उसे उस समय अनुज्ञेय होता जब वह प्रतिकर पेंशन पर सेवानिवृत्त होता।

(2) उपनियम (1) के परन्तुक के अधीन मंजूर किया गया अनुकंपा भत्ता तीन सौ पचहत्तर रुपए प्रतिमास से कम नहीं होगा।

2770 GI/93-4

अध्याय 6

पेंशन की रकमों का विनियमन

66. 30 वर्ष की अर्हक सेवा पूरी कर चुकने पर सेवानिवृत्ति.—(1) रेल सेवक द्वारा तीस वर्ष की अर्हक सेवा पूरी कर चुकने के पश्चात् किसी भी समय,—

(क) वह सेवा से निवृत्त हो सकेगा, या

(ख) नियुक्ति करने वाला प्राधिकारी उसमें लोकहित में सेवानिवृत्त होने की अपेक्षा कर सकेगा, और ऐसी सेवानिवृत्ति की दशा में रेल सेवक सेवानिवृत्ति पेंशन का हकदार होगा :

परन्तु—

(i) रेल सेवक नियुक्ति करने वाले प्राधिकारी को उस तारीख से जिसको वह सेवानिवृत्त होना चाहता है, पूर्व कम से कम तीन मास की लिखित सूचना देगा, और

(ii) नियुक्ति करने वाला प्राधिकारी उस तारीख से, जिसको रेल सेवक से लोकहित में सेवानिवृत्त होने की अपेक्षा की जाए, पूर्व कम से कम तीन मास की लिखित सूचना अथवा ऐसी सूचना के बदले तीन मास का वेतन और भत्ता दे सकेगा :

परन्तु यह और भी कि जहां पहले परन्तुक के खंड (i) के अधीन सूचना देने वाला रेल सेवक निवृत्त है वहां नियुक्ति प्राधिकारी के इस नियम के अधीन ऐसे रेल सेवक को सेवानिवृत्ति की अनुरोध निर्धारित करने की छूट होगी :

परन्तु यह भी कि इस नियम के उपनियम (1) के खंड (क) के उपबन्ध रेल सेवक को, जिसके अन्तर्गत वैज्ञानिक या तकनीकी विशेषज्ञ हैं, जो—

(i) विदेश मंत्रालय के भारत तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम तथा अन्य सहायता कार्यक्रमों के अधीन नियोजन पर हैं,

(ii) मंत्रालयों या विभागों के विदेशों में स्थित कार्यालयों में विदेश में तैनात है,

(iii) किसी विदेशी सरकार के किसी विनिर्दिष्ट संधिवा नियोजन पर है,

तब तक लागू नहीं होंगे जब तक कि भारत में स्थानान्तरण हो जाने के पश्चात् उसने भारत में पद का कर्तव्यभार न संभाल लिया हो और कम से कम एक वर्ष की अवधि तक सेवा न कर ली हो।

(2) (क) उपनियम (1) के पहले परन्तुक के खंड (i) में निर्दिष्ट रेल सेवक तीन मास से कम की सूचना स्वीकार करने के लिए कारण देते हुए नियुक्ति प्राधिकारी से लिखित रूप में प्रार्थना कर सकेगा;

(ख) खंड (क) के अधीन की गई प्रार्थना की प्राप्ति पर नियुक्ति प्राधिकारी तीन मास की सूचना की अवधि कम करने की ऐसी प्रार्थना पर गुणावगुण के आधार पर विचार कर सकेगा और यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि सूचना की अवधि कम करने से कोई प्रशासनिक असुविधा नहीं होगी तो नियुक्ति प्राधिकारी तीन मास की सूचना की अपेक्षा को इस शर्त पर शिथिल कर सकेगा कि रेल सेवक तीन मास की सूचना की अवधि की समाप्ति के पूर्व अपनी पेंशन के किसी भाग के संग्रहिकरण के लिए आवेदन नहीं करेगा।

(3) ऐसा रेल सेवक, जिसने इस नियम के अधीन सेवानिवृत्त होने का निर्वाचन किया है और नियुक्ति प्राधिकारी को उस आशय का आवश्यक प्रमाण दे दिया है, ऐसे प्राधिकारी के विनिर्दिष्ट अनुमोदन के बिना, तत्पश्चात् अपने निर्वाचन को प्रत्याहृत करने से प्रवारित रहेगा :

परन्तु यह तब जब कि प्रत्याहृत संबंधी प्रार्थना उसकी सेवानिवृत्ति की, आशयित तारीख के भीतर की जाए।

स्पष्टीकरण : इस नियम के प्रयोजन के लिए, “नियुक्ति प्राधिकारी” से वह प्राधिकारी अभिप्रेत है जो ऐसी सेवा या पद पर नियुक्तियां करने के लिए सक्षम है जिनमें रेल सेवक सेवानिवृत्त होता है।

67. बीस वर्ष की अर्हक सेवा पूरी कर चुकने पर सेवानिवृत्त—

(1) कोई भी रेल सेवक बीस वर्ष की अर्हक सेवा पूरी कर चुकने के पश्चात् किसी भी समय नियुक्ति प्राधिकारी को लिखित रूप में कम से कम तीन मास की सूचना देकर सेवानिवृत्त हो सकेगा :

परन्तु यह उपनियम ऐसे रेल सेवक को, जिसके अन्तर्गत ऐसे वैज्ञानिक या तकनीकी विशेषज्ञ भी हैं, लागू नहीं होगा, जो,—

- (i) विदेश मंत्रालय के भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम तथा अन्य सहायता कार्यक्रमों के अधीन नियोजन पर हैं,
- (ii) मंत्रालयों या विभागों के विदेशों में स्थित कार्यालयों में विदेश में तैनात हैं,
- (iii) विदेशी सरकार में किसी विनिर्दिष्ट संविदा के अधीन नियोजन पर हैं।

तब तक लागू नहीं होगा जब तक कि भारत में अन्तर्गत हो जाने के पश्चात् उसने भारत में पद का कार्यभार न संभाल लिया हो और कम से कम एक वर्ष की अवधि तक सेवा कर ली हो।

(2) उपनियम (1) के अधीन दी गई स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति की सूचना नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा स्वीकार की जानी अपेक्षित होगी:

परन्तु जहां नियुक्ति प्राधिकारी उक्त सूचना में विनिर्दिष्ट अवधि की समाप्ति के पूर्व सेवानिवृत्ति की अनुज्ञा देने से इंकार नहीं करता वहां सेवानिवृत्ति उस अवधि की समाप्ति की तारीख से प्रभावी होगी।

(3) (क) उपनियम (1) में निर्दिष्ट रेल सेवक स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति की तीन मास से कम की सूचना स्वीकार करने के लिए नियुक्ति प्राधिकारी से लिखित रूप में, उसके लिए कारण देते हुए, प्रार्थना कर सकेगा ;

(ख) खंड (क) के अधीन की गई प्रार्थना की प्राप्ति पर, नियुक्ति प्राधिकारी, उपनियम (2) के उपबन्धों के अधीन रहते हुए, तीन मास की सूचना की अवधि कम करने की ऐसी प्रार्थना पर गुणावगुण के आधार पर विचार कर सकेगा और यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि सूचना की अवधि कम करने से कोई प्रशासनिक असुविधा नहीं होगी तो नियुक्ति प्राधिकारी तीन मास की सूचना की अपेक्षा को इस शर्त पर शिथिल कर सकेगा कि रेल सेवक तीन मास की सूचना की अवधि की समाप्ति के पूर्व अपनी पेंशन के किसी भाग के संग्रहिकरण के लिए आवेदन नहीं करेगा।

(4) ऐसा रेल सेवक, जिसने इस नियम के अधीन सेवानिवृत्त होने का निर्वाचन किया है और नियुक्ति प्राधिकारी को उस आशय का आवश्यक सूचना दे दी है, ऐसे प्राधिकारी के विनिर्दिष्ट अनुमोदन के बिना, अपने सूचना को वापस लेने से प्रवारित होगा :

परन्तु उसे वापस लेने का अनुरोध उसकी सेवानिवृत्ति की आशयित तारीख से पूर्व किया जाएगा।

(5) इस नियम के अधीन सेवानिवृत्त होने वाले रेल सेवक की पेंशन और मृत्यु एवम् सेवानिवृत्ति उपदान नियम 49 और नियम 50 के अधीन यथापरिभाषित परिस्थितियों पर आधारित होगा और उसकी अर्हक सेवा में की गई पांच वर्ष से अधिक की वृद्धि से वह पेंशन और उपदान की संगणना के प्रयोजन के लिए इस बात का हकदार नहीं हो जाएगा कि उसका वेतन अविकल्पित रूप से नियत किया जाए।

(6) यह नियम किसी ऐसे रेल सेवक को लागू नहीं होगा जो कि किसी ऐसे स्वायत्तशासी निकाय या पब्लिक सेक्टर उपक्रम में, जिसमें वह स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के समय प्रतिनियुक्ति पर है, स्थायी रूप से आर्मेल्ड किए जाने के लिए रेल सेवा में सेवानिवृत्त होता है।

स्पष्टीकरण : इस नियम के प्रयोजन के लिए, “नियुक्ति प्राधिकारी” से ऐसा प्राधिकारी अभिप्रेत है जो ऐसी सेवा या पद पर नियुक्तियां करने के लिए सक्षम है जिनमें रेल सेवक स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेता है।

68 स्वेच्छिक सेवानिवृत्ति पर अर्हक सेवा में परिवर्धन—

(1) इन नियमों के नियम 66 या नियम 67 या संहिता के नियम 1802 के खंड (ट) से नियम 1804 के अधीन, अनुज्ञा सहित या अनुज्ञा के बिना, सेवानिवृत्ति होने वाले रेल सेवक की प्राशयित सेवानिवृत्ति की तारीख को जितनी अर्हक सेवा है उस में पांच वर्ष में अनधिक की अवधि की इस शर्त के अधीन वृद्धि की जाएगी कि रेल सेवक द्वारा की गई कुल अर्हक सेवा किसी भी दशा में तत्तीस वर्ष से अधिक न हो और वह उसकी अधिवर्षिता की तारीख के बाद न हो।

(2) उपनियम (1) के अधीन पांच वर्ष का फायदा ऐसे रेल सेवकों की दशा में अनुज्ञेय नहीं होगा जो रेल प्रशासन द्वारा इन नियमों के नियम 66 के उपनियम (1) खण्ड (ख) के अधीन या संहिता के नियम 1802 से 1804 तक के अधीन लोकहित में रेल प्रशासन द्वारा समय पूर्व सेवानिवृत्त किए जाते हैं।

69. पेंशन की रकम.—(1) ऐसे रेल सेवक की दशा में जो दस वर्ष की अर्हक सेवा पूरी करने से पूर्व इन नियमों के उपबंधों के अनुसार सेवानिवृत्त हो रहा है; सेवा उपदान की रकम सेवा की प्रत्येक संपूर्ण छह मास की अवधि के लिए आधे मास की परिलब्धियों की दर पर परिकलित की जाएगी।

(2) (क) ऐसे रेल सेवक की दशा में जो इन नियमों के उपबंधों के अनुसार कम से कम तैंतीस वर्ष की अर्हक सेवा पूरी करने के पश्चात् सेवानिवृत्त होता है, पेंशन की रकम औसत परिलब्धियों के पचास प्रतिशत पर, चार हजार पांच सौ रुपये प्रतिमास की अधिकतम सीमा के अधीन रहते हुए, परिकलित की जाएगी,

(ख) ऐसे रेल सेवक की दशा में, जो इन नियमों के उपबंधों के अनुसार तैंतीस वर्ष की अर्हक सेवा पूरी करने के पूर्व किंतु दस वर्ष की अर्हक सेवा पूरी करने के पश्चात् सेवानिवृत्त होता है, पेंशन की रकम खंड (क) के अधीन अनुज्ञेय पेंशन की रकम के अनुपाततः होगी और किसी भी दशा में पेंशन की रकम तीन सौ पचहत्तर रुपये प्रतिमास से कम नहीं होगी,

(ग) खंड (क) और खंड (ख) में किसी बात के होते हुए भी, अशक्त पेंशन की रकम नियम 75 के उपनियम (2) के अधीन अनुज्ञेय कुटुम्ब पेंशन की रकम से कम नहीं होगी।

(3) अर्हक सेवा की अवधि की गणना करने में वर्ष का ऐसा भाग जो तीन मास और उससे अधिक के बराबर और उससे अधिक हो। संपूर्ण आधे वर्ष के बराबर समझा जाएगा और उसकी गणना अर्हक सेवा के रूप में की जाएगी।

(4) उपनियम (2) के खंड (क) या खंड (ख) के अधीन अंतिम रूप से अवधारित पेंशन की रकम पूरे-पूरे रूपों में अभिव्यक्त की जाएगी और जहां पेंशन में एक रूप का कोई भाग हो वहां उसे निकटतम उच्चतर रूप तक पूर्णकृत किया जाएगा।

70. सेवानिवृत्ति उपदान या मृत्यु उपदान—(1) (क) ऐसे रेल सेवक को जिसने पांच वर्ष की अर्हक सेवा पूरी कर ली है और जो नियम 69 के अधीन सेवा उपदान या पेंशन का पात्र हो गया है, उसकी सेवानिवृत्ति पर, सेवानिवृत्ति उपदान मंजूर किया जाएगा जो अर्हक सेवा की प्रत्येक संपूर्ण छह मास की अवधि के लिए उसकी परिलब्धियों के एक-चौथाई के बराबर होगा किंतु यह उपदान से अधिक उसकी परिलब्धियों का साढ़े सोलह गुणा होगा और उपदान की संगणना के लिए गणना योग्य उपलब्धियों की कोई अधिकतम सीमा नहीं होगी।

(ख) यदि मेधारत किसी रेल सेवक की मृत्यु हो जाती है तो उसके कुटुम्ब को नीचे सारणी में उपदर्शित रीति से मृत्यु उपदान की रकम दी जाएगी,

सारणी

अर्हकसेवा की अवधि उपदान की दर

(i) एक वर्ष से कम, परिलब्धियों के दुगुणे

(ii) एक वर्ष या अधिक किंतु पांच वर्ष से कम परिलब्धियों के छह गुणे

(iii) पांच वर्ष या अधिक किंतु 20 वर्ष से कम परिलब्धियों के बारह गुणे

(iv) 20 वर्ष या अधिक अर्हक सेवा की पूरी की गई प्रत्येक छमाही अवधि के लिए परिलब्धियों का आधा, किंतु अधिकतम परिलब्धियों के 33 गुणे के अधीन रहते हुए। परंतु मृत्यु उपदान की रकम किसी भी दशा में एक लाख रुपये से अधिक नहीं होगी।

परंतु इस नियम के अधीन संदेय सेवानिवृत्ति उपदान या मृत्यु उपदान की रकम किसी भी दशा में एक लाख रुपये से अधिक नहीं होगी:

परंतु यह और कि जहां सेवानिवृत्ति या मृत्यु उपदान की अंतिम रूप से परिकलित रकम में हुए का अंश हो वहां उसे अगले उच्चतर रूप में पूर्णकृत किया जाएगा,

(2) यदि कोई रेल सेवक, जो सेवा उपदान या पेंशन का पात्र हो चुका है, अपनी सेवानिवृत्ति को, जिसके अंतर्गत शास्ति स्वरूप अनिवार्य सेवानिवृत्ति भी है, तारीख से पांच वर्ष के भीतर मर जाता है और ऐसे उपदान या पेंशन मद्धे, जिसके अंतर्गत तदर्थ वृद्धि यदि कोई हो, भी है उसकी मृत्यु के समय उसके द्वारा वस्तुतः प्राप्त धनराशि और साथ ही

उपनियम (1) के अधीन अनुज्ञेय सेवानिवृत्ति उपदान और उसके द्वारा सारांशित पेंशन के किसी भी भाग का सारांशित मूल्य उसकी परिलब्धियों की बराबर गुना रकम से कम है तो जितनी रकम कम होगी उसके बराबर अवशिष्ट उपदान नियम 71 के उपनियम (1) में उपदर्शित रीति में उसके कुटुम्ब को दिया जा सकता है।

(3) इस नियम के अधीन अनुज्ञेय उपदान के प्रयोजन के लिए परिलब्धियों की गणना नियम 49 के अनुसार की जाएगी :

परंतु यदि किसी रेल सेवक की परिलब्धियां इसकी सेवा के अंतिम दस मास के दौरान, शास्त्रानुसार कम किए जाने में मृत्यु या कम कर दी गई है तो नियम 50 में यथानिर्दिष्ट औसत परिलब्धियों को परिलब्धियां माना जाएगा।

(4) इस नियम और नियम 71, 73 और 74 के पंजीनों के लिए, रेल सेवक के संबंध में, "कुटुंब" से निम्नलिखित अभिप्रेत है—

- (i) पुरुष रेल सेवक की दशा में, पत्नी या पत्नियां जिसके अंतर्गत न्यायिकतः पृथक्कृत पत्नी या पत्नियां भी हैं;
- (ii) स्त्री रेल सेवक की दशा में, पति जिसके अंतर्गत न्यायिकतः पृथक्कृत पति भी है,
- (iii) पुत्र, जिनके अंतर्गत सौतेले पुत्र और दत्तकगृहीत पुत्र भी हैं,
- (iv) अविवाहित पुत्रियां, जिनके अंतर्गत सौतेली पुत्रियां और दत्तकगृहीत पुत्रियां भी हैं,
- (v) विधवा पुत्रियां, जिनके अंतर्गत सौतेली पुत्रियां और दत्तकगृहीत पुत्रियां भी हैं,
- (vi) पिता { जिनके अंतर्गत ऐसे व्यक्तियों की दशा में, माना { जिनकी स्वीय विधि दत्तकग्रहण की अनुज्ञा } देती है, दत्तक पिता-माता भी हैं,
- (vii) {
- (viii) अठारह वर्ष से कम आयु के भाई, जिनके अंतर्गत सौतेले भाई भी हैं,
- (ix) अविवाहित बहनें और विधवा बहनें, जिनके अंतर्गत सौतेली बहनें भी हैं,
- (x) विवाहित पुत्रियां, और
- (xi) पूर्व-मृत पुत्र की संतान।

71. वे व्यक्ति जिन्हें उपदान संदेय हैं—

- (1) (क) नियम 70 के अधीन संदेय उपदान ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों को दिया जाएगा जिन्हें उपदान प्राप्त करने का अधिकार नियम 74 के अधीन नाम-निर्देशन द्वारा प्रदत्त किया गया है,

(ख) यदि ऐसा कोई नामनिर्देशन ही है या यदि किया गया नाम निर्देशन अस्तित्व में नहीं है तो उपदान नीचे उपदर्शित रीति से दिया जाएगा,—

- (i) यदि नियम 70 के उपनियम (5) के खंड (i), (ii), (iii) और (iv) में यथा वर्णित कुटुम्ब के एक या अधिक सदस्य उत्तरजीवी हों तो ऐसे सभी सदस्यों को बराबर-बराबर अंशों में;

- (ii) यदि उपर्युक्त उपखंड (i) में यथावर्णित कुटुम्ब के ऐसे कोई भी सदस्य उत्तरजीवी नहीं हैं किंतु नियम 70 के उपनियम (5) के खंड (v), (vi), (vii), (viii), (ix), (x) और (xi) में दिए गए एक या अधिक सदस्य उत्तरजीवी हैं तो ऐसे सभी सदस्यों को बराबर-बराबर अंशों में।

(2) यदि रेल सेवक की मृत्यु नियम 70 के उपनियम (1) के अधीन अनुज्ञेय उपदान प्राप्त किए बिना ही सेवानिवृत्ति के पश्चात् हो जाती है तो उपदान, उपनियम (1) में उपदर्शित रीति में कुटुम्ब को संवितरित कर दिया जाएगा।

(3) ऐसे रेल सेवक के, जिसकी मृत्यु सेवा में रहते हुए या सेवानिवृत्ति के पश्चात् हो जाती है, कुटुम्ब के सभी सदस्य या भाई का उपदान के किसी अंश को पाने के अधिकार पर उस दशा में प्रभाव नहीं पड़ेगा जब सरकारी सेवक की मृत्यु के पश्चात् और उपदान के अपने अंश को प्राप्त करने से पूर्व वह स्त्री विवाह कर लेती है अथवा पुनर्विवाह कर लेती है अथवा भाई अठारह वर्ष की आयु प्राप्त कर लेता है।

(4) जहां कि नियम 70 के अधीन मृत रेल सेवक के कुटुम्ब के किसी अवयस्क सदस्य को कोई उपदान मजूर किया जाए वहां वह उस अवयस्क के निमित्त संरक्षक को संदेय होगा।

72. किसी व्यक्ति का उपदान प्राप्त करने से विवर्जन—

(1) यदि कोई व्यक्ति, जो सेवा काल में रेल सेवक की मृत्यु की दशा में, नियम 71 के अनुसार उपदान प्राप्त करने का पात्र है, रेल सेवक की हत्या के अपराध के लिए या ऐसे किसी अपराध को करने के दुष्प्रेरण के लिए आरोपित किया गया है तो उपदान में से अपना अंश प्राप्त करने का उसका दावा उसके विरुद्ध संस्थित दांडिक कार्यवाही की समाप्ति तक निलंबित रहेगा।

(2) यदि उपनियम (1) में निर्दिष्ट दांडिक कार्यवाही की समाप्ति पर, संबद्ध व्यक्ति—

(क) रेल सेवक की हत्या के लिए या हत्या का दुष्प्रेरण करने के लिए सिद्धदोष ठहराया जाता है तो वह उपदान में से अपना अंश प्राप्त करने से वह निवृत्त कर दिया जाएगा जो कुटुंब के अन्य पात्र सदस्या को, यदि कोई है, सदेव होगा,

(ख) रेल सेवक की हत्या करने या हत्या का दुष्प्रेरण करने के आरोप के दाख-मुक्त कर दिया जाता है तो उपदान का उमका अंश उमें सदेव हो जाएगा।

(3) उपनियम (1) और उपनियम (2) के उपबन्ध नियम 71 के उपनियम (2) में निर्दिष्ट असंवितरित उपदान को भी लागू होंगे।

73 मृत्यु-निवृत्ति उपदान का व्यपगत होना—जहां किसी रेल सेवक की मृत्यु, सेवा में रहते हुए, या सेवानिवृत्ति के पश्चात् उपदान की रकम प्राप्त किए बिना, हो जाती है, और वह अपने पीछे कोई कुटुम्ब नहीं छोड़ा है, और—

(क) उसने कोई नामनिर्देशन नहीं किया है, या

(ख) उसके द्वारा किया गया नामनिर्देशन अस्मिन्त्व में नहीं है,

वहां ऐसे रेल सेवक की बाबत, नियम 70 के अधीन, सदेव मृत्यु निवृत्ति उपदान की रकम सरकार को व्यपगत हो जाएगी।

परन्तु मृत्यु उपदान या सेवानिवृत्ति उपदान की रकम उस व्यक्ति को सदेव होगी जिसके पक्ष में उपदान की बाबत उत्तराधिकार प्रमाणपत्र न्यायालय द्वारा मंजूर किया गया है।

74. नामनिर्देशन—(1) रेल सेवक, किसी सेवा या पद में अपने प्रारम्भिक पुष्टिकरण पर प्ररूप 4 या प्ररूप 5 में, जो भी मामले की परिस्थितिया में उपयुक्त हो, एक नामनिर्देशन करेगा जिसमें नियम 70 के अधीन सदाय मृत्युनिवृत्ति उपदान प्राप्त करने का अधिकार एक या अधिक व्यक्तियों का प्रवृत्त किया जाएगा—

परन्तु नामनिर्देशन करने समय,—

(i) यदि रेल सेवक का कोई कुटुम्ब है तो, नामनिर्देशन उसके कुटुम्ब के सदस्यों से भिन्न किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के पक्ष में नहीं होगा, या

(ii) यदि रेल सेवक का कोई कुटुम्ब नहीं है तो, नामनिर्देशन किसी व्यक्ति या व्यक्तियों अथवा व्यक्तियों के मिकाय, चाहे वह निगमित हो या न हो, के पक्ष में किया जा सकता है।

(2) यदि कोई रेल सेवक उपनियम (1) के अधीन एक से अधिक व्यक्तियों का नामनिर्देशन करता है तो वह नामनिर्देशन में नामनिर्देशितों में से प्रत्येक को सदाय अंश की रकम

इस प्रकार विनिर्दिष्ट करेगा कि उसके अन्तर्गत उपदान की सारी रकम आ जाए।

(3) रेल सेवक नामनिर्देशन में,—

(i) यह उपबन्ध कर सकेगा कि ऐसे किसी विनिर्दिष्ट नामनिर्देशिनी की बाबत जिसकी मृत्यु रेल सेवक से पहले हो जाय अथवा जिसकी मृत्यु रेल सेवक की मृत्यु हो जाने के पश्चात् किंतु उपदान की रकम प्राप्त किए बिना ही हो जाए तो उस नामनिर्देशिनी का प्रवृत्त अधिकार किसी ऐसे अन्य व्यक्ति का जाता जाएगा जिस नामनिर्देशन में विनिर्दिष्ट किया जाए

परन्तु यदि नामनिर्देशन करने समय रेल सेवक का कोई ऐसा कुटुम्ब हो जिसमें एक से अधिक सदस्य हों तो इस प्रकार विनिर्दिष्ट व्यक्ति उसके कुटुम्ब के सदस्यों में भिन्न व्यक्ति नहीं होगा

परन्तु यह और कि जहां किसी रेल सेवक के अपने कुटुम्ब में केवल एक ही सदस्य हो और नामनिर्देशन उसी के पक्ष में किया गया हो वहां रेल सेवक किसी अन्य व्यक्ति के या व्यक्तियों के मिकाय के पक्ष में, चाहे वह निगमित हो या न हो, अनुकल्पी नामनिर्देशिनी या नामनिर्देशितियों का नामनिर्देशन करने के लिए स्वतन्त्र होगा,

(ii) यह उपबन्ध कर सकेगा कि उसमें दी गई किसी आकस्मिकता के घटित होने पर वह नामनिर्देशन अविधिमान्य हो जाएगा।

(4) ऐसे रेल सेवक द्वारा, जिसका नामनिर्देशन करने समय कोई कुटुम्ब न हो, किया गया नामनिर्देशन अथवा उपनियम (3) के खण्ड (i) के द्वितीय परतुक के अधीन रेल सेवक द्वारा उस दशा में, जबकि उसके कुटुम्ब में एक ही सदस्य हो, किया गया नामनिर्देशन उस दशा में अविधिमान्य हो जाएगा जब उस रेल सेवक का, यथास्थिति, वाद में कोई कुटुम्ब हो जाए अथवा उसके कुटुम्ब में कोई और सदस्य आ जाए।

(5) रेल सेवक उप नियम (7) में वर्णित प्राधिकारी को लिखित सूचना भेजकर नामनिर्देशन किसी भी समय रद्द कर सकेगा।

परन्तु वह इस नियम के अनुसार किया गया नामनिर्देशन ऐसी सूचना के साथ भेजेगा।

(6) ऐसे नामनिर्देशिनी की, जिसकी बाबत उप नियम (3) के उपखण्ड (i) के अधीन नामनिर्देशन में कोई विशेष उपबन्ध नहीं किया गया है, मृत्यु होने ही अथवा ऐसी कोई घटना घटित होने पर, जिसके कारण नामनिर्देशन उस उपनियम के खण्ड (ii) के अनुसरण में अविधिमान्य हो जाए, रेल सेवक उप नियम (7) में प्राधिकारी को एक लिखित सूचना भेजेगा

जिसमें वह नामनिर्देशन को रद्द कर देगा और साथ ही इस नियम के अनुसार किया गया नामनिर्देशन भेज देगा।

(7) (क) इस नियम के अधीन रेल सेवक द्वारा किया गया प्रत्येक नामनिर्देशन और रद्दकरण का प्रत्येक सूचना रेल सेवक द्वारा, राजपत्रित रेल सेवक होने की दशा में उसके लेखा अधिकारी को और अराजपत्रित रेल सेवक होने की दशा में उसके कार्यालय के प्रधान को भेजा जाएगा,

(ख) अराजपत्रित रेल सेवक इसे नामनिर्देशन की प्राप्ति पर कार्यालय का अध्यक्ष उस पर तुरंत प्रतिहस्ताक्षर करेगा तथा उसकी प्राप्ति करने की तारीख उपबर्णित करेगा और उसे एक पृथक् गोपनीय फाइल में रखेगा जो कि उसके पाम या इस प्रयोजन के लिए उस द्वारा नामनिर्दिष्ट अन्य उत्तरदायी अधिकारी के पाम गुरक्षित रखने के लिए जमा की जाएगी और, यथास्थिति, रेल सेवक के सेवा अभिलेख या सेवा पुस्तक में यह स्पष्ट टिप्पणी करेगा कि कौन कौन से नामनिर्देशन और उससे संबंधित सूचनाएं उससे प्राप्त की गई हैं और वहां उन्हें सुरक्षित अभिरक्षा में रखा गया है तथा संबंधित रेल सेवक के प्रति अभिस्वीकृति, जिसमें इस बात की पुष्टि की गई है कि उस द्वारा किए गए नामनिर्देशन तथा संबंधित सूचनाएं सम्यक्तः प्राप्त हो गई हैं और वे अभिलेख में दर्ज कर लिए गए हैं, प्रत्येक रेल सेवक को, जो कोई नामनिर्देशन करना है या रद्दकरण करता है, अराजपत्रित रेल सेवकों की दशा में लेखा अधिकारी द्वारा और राजपत्रित रेल सेवकों की दशा में कार्यालय के प्रधान द्वारा सर्व्व भेजी जाएगी।

टिप्पणी : अराजपत्रित रेलसेवकों द्वारा भेजे गए नामनिर्देशन प्ररूप पर प्रतिहस्ताक्षर करने की शक्ति कार्यालय के प्रधान द्वारा अपने अधीनस्थ राजपत्रित अधिकारी को प्रत्यायोजित की जा सकेगी।

(8) रेल सेवक द्वारा किया गया प्रत्येक नामनिर्देशन और रद्दकरण के लिए दी गई प्रत्येक सूचना, उस सीमा तक जिस तक वह विधिमार्थ है, उस तारीख से प्रभावी होगी जिस को वह उपनियम (7) में वर्णित प्राधिकारी को प्राप्त होती है।

75. रेल सेवकों के लिए कुटुम्ब पेंशन स्कीम, 1964—

(1) इस नियम के उपबंध—

(क) ऐसे रेल सेवक को लागू होंगे जो पहली जनवरी, 1964 को या उसके पश्चात् किसी पेंशनी स्थापन में सेवा में प्रवेश करता है, और

(ख) ऐसे रेल सेवक को लागू होंगे जो 31 दिसंबर, 1963 को सेवा में था और रेल बोर्ड के पत्र सं. एक (पी) 03 पी एन 1/40 तारीख 2 जनवरी, 1964 में दी गई, इन नियमों के प्रारंभ के ठीक

पूर्व यथाप्रवृत्त रेल कर्मचारी कुटुम्ब पेंशन स्कीम, 1964 के उपबंधों द्वारा शासित होने लगे।

टिप्पण : इस नियम के उपबंध 22 मिनंबर, 1977 से पेंशनी स्थापनाओं के ऐसे रेल सेवकों को भी लागू किए गए हैं, जिनकी 31-12-1963 से पहले सेवा निवृत्ति या मृत्यु हुई थी तथा उन पर भी लागू होगा जो 31-12-1963 को जीवित थे किंतु जिन्होंने 1964, स्कीम से बाहर रहने का विकल्प किया था।

(2) उपनियम (3) में अन्तर्निष्ठ उपबंधों पर प्रति-कूल प्रभाव डाले बिना यदि किसी सरकारी सेवक की मृत्यु—

(क) एक वर्ष की लगातार सेवा पूरी करने के पश्चात हो जाती है, या

(ख) एक वर्ष की लगातार सेवा पूरी करने के पूर्व ही आती है; परंतु यह तब जब कि संबंध मृतक रेल सेवक को, सेवा या पर पर उसकी निवृत्ति के ठीक पूर्व समुचित बिक्रिया प्राधिकारों द्वारा रेल सेवा के लिए उसे उपयुक्त घोषित किया गया हो,

(ग) सेवा से निवृत्ति होने के पश्चात ही आती है और वह अपनी मृत्यु की तारीख को नियम 53 में निर्दिष्ट पेंशन से भिन्न, अध्याय 5 में निर्दिष्ट पेंशन या अनुकंपा भत्ता पर रहा है तो मृतक का कुटुम्ब, कुटुम्ब पेंशन स्कीम, 1964 (जिसे इसमें इसके पश्चात कुटुम्ब पेंशन कहा गया है) के अधीन कुटुम्ब पेंशन का हकदार होगा, जिसकी रकम निम्नलिखित सारणी के अनुसार अवधारित की जाएगी:—

सारणी

रेल सेवक का वेतन मासिक मूल वेतन	मासिक कुटुम्ब पेंशन की दर, जिसमें आगत उपभोक्ता मूल्य सूचकांक स्तर 608 तक मंह- गाई राहत सम्मिलित है।
(i) 1500 रुपए से अधिक नहीं	न्यूनतम 375 रुपए के अधीन रहते हुए, मूल वेतन का 30%
(ii) 1500 रुपए से अधिक किन्तु 3000 रुपए से अधिक नहीं	न्यूनतम 450 रुपए के अधीन रहते हुए, मूल वेतन का 20%
(iii) 3000 रुपए से अधिक होने पर	न्यूनतम 600 रुपए और अधिकतम 1250 रुपए के अधीन रहते हुए, मूल वेतन का 15%

स्पष्टीकरण — एक वर्ष की लगातार सेवा पद का, जहाँ कहीं भी वह इस नियम में आता है, अथवा इस प्रकार किया जाएगा कि उसके अन्तर्गत खंड (ख) में यथापरिभाषित एक वर्ष से कम की लगातार सेवा, भी है।

(3) कुटुम्ब पेंशन की रकम मासिक दरों पर नियत की जाएगी और पूरे पूरे रूपों में अभिव्यक्त की जाएगी और जहाँ कुटुम्ब पेंशन में एक रूप का कोई भाग हो वहाँ उसे अगले रूप तक पूर्णकृत किया जाएगा :

परन्तु किसी भी दशा में इस नियम के अधीन विनिर्दिष्ट अधिकतम से अधिक कुटुम्ब पेंशन अनुज्ञात नहीं होगी।

(4) (i) (क) जहाँ किसी ऐसे रेल सेवक की, जो कर्मकार प्रतिकर अधिनियम 1923 (1923 का 8) द्वारा शासित नहीं होता है सात वर्ष से अन्यून की लगातार सेवा कर चुकने के पश्चात् सेवा में रहते हुए मृत्यु हो जाती है, वहाँ कुटुम्ब को संदेय कुटुम्ब पेंशन की दर, अंत में लिए गए वेतन के पचास प्रतिशत के बराबर, अथवा उपनियम (2) के अधीन अनुज्ञेय कुटुम्ब पेंशन के दुगुने के बराबर, इनमें से जो भी कम हो, होगी तथा इस प्रकार अनुज्ञेय रकम, रेल सेवक की मृत्यु की तारीख के ठीक बाद की तारीख से सात वर्ष की अवधि के लिए अथवा उस तारीख तक की अवधि के लिए जिस तारीख तक मृत रेल सेवक जीवित रहने पर पैंसठ वर्ष की आयु का हो जाता, इसमें से जो भी अवधि लघुतर हो, संदेय होगी।

(ख) सेवा निवृत्ति के पश्चात् रेल सेवक की मृत्यु होने की दशा में उपखंड (क) के अधीन यथा अवधारित कुटुम्ब पेंशन सात वर्ष की अवधि के लिए अथवा उस तारीख तक की अवधि के लिए जिसको सेवा-निवृत्त मृत रेल सेवक, यदि वह जीवित रहता तो, पैंसठ वर्ष की आयु का हो जाता इसमें से जो भी अवधि लघुतर हो, संदेय होगी :

परन्तु इस खंड के उपखंड (ख) के अधीन अवधारित कुटुम्ब पेंशन की रकम किसी भी दशा में रेल सेवा में सेवानिवृत्ति होने पर मंजूर की जाने वाली पेंशन से अधिक नहीं होगी :

परन्तु यह और कि जहाँ सेवानिवृत्ति होने पर मंजूर की जाने वाली पेंशन की रकम उपनियम (2) के अधीन अनुज्ञेय कुटुम्ब पेंशन की रकम से कम हो, वहाँ इस खंड के अधीन अवधारित कुटुम्ब पेंशन की रकम उपनियम (2) के अधीन अनुज्ञेय कुटुम्ब पेंशन की रकम तक सीमित होगी।

स्पष्टीकरण (i) इस उपखंड के प्रयोजन के लिए, सेवा निवृत्ति होने पर मंजूर की जाने वाली पेंशन के अन्तर्गत पेंशन का वह भाग भी है जिस सेवानिवृत्त रेल सेवक ने मृत्यु से पहले संराशिकृत कराया है :

(ii) (क) जहाँ कि किसी रेल सेवक को, जो कर्मकार प्रतिकर अधिनियम, 1923 (1923 का 8) द्वारा शासित होता है, अन्यून सात वर्ष की लगातार सेवा

कर चुकने के पश्चात् सेवा में रहते हुए, मृत्यु हो जाती है वहाँ कुटुम्ब को संदेय कुटुम्ब पेंशन की दर अन्त में लिए गए वेतन के पचास प्रतिशत के बराबर अथवा उपनियम (2) के अधीन अनुज्ञेय कुटुम्ब पेंशन के दुगुने के बराबर, इनमें से जो भी कम हो, होगी,

(ख) उपखंड (क) के अधीन इस प्रकार अवधारित कुटुम्ब पेंशन खंड (i) में वर्णित अवधि के लिए संदेय होगी, परन्तु जहाँ कि पूर्वोक्त अधिनियम के अधीन कोई प्रतिकर संदेय न हो वहाँ पेंशन मंजूर करने वाली प्राधिकारी नैष्ठा अधिकारी को इस आशय का एक प्रमाणपत्र भेजेगा कि मृतक रेल सेवक के कुटुम्ब को कुटुम्ब पेंशन, खंड (i) में वर्णित मापमान के अनुसार और अवधि के लिए, दी जाएगी,

(iii) खंड (1) में निर्दिष्ट अवधि के प्रवर्तमान के पश्चात् वह कुटुम्ब जो उस खंड या खंड (ii) के अधीन कुटुम्ब पेंशन पा रहा है, उपनियम (2) के अधीन अनुज्ञेय दर पर कुटुम्ब पेंशन पाने का हकदार होगा।

(5) जहाँ रेल सेवा (असाधारण पेंशन) नियम 1993 के अधीन कोई पंचाट अनुज्ञेय है वहाँ इस नियम के अधीन कुटुम्ब पेंशन का कोई संदाय प्राधिकृत नहीं होगा।

(6) जिस अवधि के लिए कुटुम्ब पेंशन संदेय है वह निम्नानुसार होगी :

- (i) विधवा अथवा विधुर की दशा में मृत्यु या पुनर्विवाह की तारीख तक, इनमें से जो भी पहले हो,
- (ii) पुत्र की दशा में, तब तक जब तक वह पच्चीस वर्ष की आयु प्राप्त न कर ले, और
- (iii) अविवाहित पुत्री की दशा में, तब तक जब तक वह पच्चीस वर्ष की आयु प्राप्त न कर ले या जबतक उसका विवाह नहीं हो जाए, इनमें से जो भी पहले हो :

परन्तु यदि रेल सेवक का पुत्र या पुत्री किसी मानसिक विकार या निशक्वता से ग्रस्त है अथवा शारीरिक रूप से अपंग या निःशक्व है जिससे कि वह पच्चीस वर्ष की आयु का/की हो जान पर भी आजीविका उपार्जन करने में असमर्थ है तो ऐसे पुत्र या पुत्री को आजीवन कुटुम्ब पेंशन निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए, संदेय होगी, अर्थात्

- (क) कुटुम्ब पेंशन संरक्षकता प्रमाणपत्र के आधार पर संरक्षक के माध्यम से या न्यायालय द्वारा नियुक्त संरक्षक के माध्यम से ऐसे अवयस्क पुत्र या पुत्री को संदत्त की जाएगी :

परन्तु ऐसे पुत्रों या पुत्रियों की बाबत, जो प्राप्तव्य हो गए हैं, इन नियमों के अधीन अन्य पालता शर्तों की पूर्ति करने के अधीन रहते हुए, उन्हें कुटुम्ब पेंशन देने या चालू रखने के लिए जो उन्हें मंजूर की जाती है या जिसका संदाय चालू रखा जाता है न्यायालय में संरक्षकता

प्रमाणपत्र या संरक्षक के रूप में नियुक्ति अधि-
प्राप्त करता आवश्यक नहीं होगा।

(ख) ऐसे पुत्र या पुत्री को आजीवन कुटुंब पेंशन प्रयोजन करने से पूर्व, मजूरी देने वाला प्राधि-
कारी यह समाधान कर लेगा कि असमर्थता
ऐसी प्रकृति की है जिससे वह बालक अपनी
आजीविका का उपार्जन नहीं कर सकता है और
इस बात के माध्यम स्वरूप जहां तक सम्भव
हो प्रभागीय चिकित्सा अधिकारी से अन्यून रैंक
के चिकित्सा अधिकारी का प्रमाण पत्र लिया
जाएगा जिसमें बालक की सही मानसिक या
शारीरिक दशा का उल्लेख किया जाएगा,

(ग) ऐसे पुत्र या पुत्री के संरक्षक के रूप में कुटुंब
पेंशन प्राप्त करने वाला व्यक्ति हर तीन वर्ष
पर प्रभागीय चिकित्सा अधिकारी से अन्यून
रैंक के चिकित्सा अधिकारी का इस आशय का
एक प्रमाणपत्र पेश करेगा कि ऐसा पुत्र या
पुत्री अभी भी मानसिक विकास यानि शक्तता
से अल्प है अथवा शारीरिक रूप में अपंग या
निःशक्त है।

व्याख्याकरण :—(1) इस उपनियम के अधीन कुटुंब
पेंशन मंजूर करने के प्रयोजन के लिए केवल उस निःशक्तता
का विचार में लिया जाएगा जो रेल सेवक की सेवा निवृत्ति
अथवा मृत्यु से पूर्व, सेवा में रहते हुए, प्रकट हो गई हो।

(2) पुत्री, इस उपनियम के अधीन, कुटुंब पेंशन के
लिए उभ तारीख में पात्र नहीं रहेगी जिस तारीख को उसका
विवाह हो जाता है।

(3) ऐसे पुत्र अथवा पुत्री को देय कुटुंब पेंशन बंद
कर दी जाएगी जो अपनी आजीविका का उपार्जन प्रारम्भ
कर देता या कर देती है।

(4) ऐसे मामलों में संरक्षक का यह कर्तव्य होगा कि
यह, यथास्थिति खजाना या बैंक या डाकघर, रेल प्रशासन
के लिए प्राधिकृत सविनय एकक को, प्रतिमाम इस आशय
का एक प्रमाणपत्र दे कि (i) पुत्र अथवा पुत्री ने अपनी
आजीविका का उपार्जन प्रारम्भ नहीं किया है, (ii) पुत्री
की दशा में, यह कि उसका अभी विवाह नहीं हुआ है।

(घ) यदि पुत्र और अधिवाहित पुत्रियां जिनके अल्प-
वय मानसिक विकार या निःशक्तता से ग्रस्त पुत्र और
अधिवाहित पुत्रियां भी हैं, जीवित हैं तो कुटुंब पेंशन संतान
के स्त्रीनिगम या पल्लिगी होने पर ध्यान दिए बिना उनके
जन्म के क्रम में संदेय होगी और उनसे से कम आयु की
संतान तब तक कुटुंब पेंशन की हकदार नहीं होगी जब
तक कि उनसे अग्रज कुटुंब पेंशन पाने के लिए अपात्र न
हो जाए। ऐसे मामलों में जहां कुटुंब पेंशन जुड़वा बच्चों
को संदेय है वहां वह ऐसे जुड़वा बच्चों को बराबर अंशों
में संदेय होगी और उनमें से किसी बालक के कुटुंब पेंशन

के लिए पात्र न रहने की दशा में, कुटुंब पेंशन में उसका
अंश व्ययगत नहीं होगा अपितु ऐसे अन्य बालक को संदेय
होगा और जब ऐसे दोनों बालक कुटुंब पेंशन के लिए
प्राप्त हो जाएं तब कुटुंब पेंशन—संदेय होगी।

7(1) (क) जहां कि कुटुंब पेंशन एक से अधिक
विधवाओं को संदेय हो वहां कुटुंब पेंशन विधवाओं का
बराबर अंशों में दी जाएगी।

(ख) एक विधवा की मृत्यु हो जाने पर कुटुंब पेंशन
का उसका अंश उसकी पात्र संतान को संदेय हो जाएगा :

परंतु यदि उस विधवा की कोई संतान उत्तरजीवी
नहीं रहता तो कुटुंब पेंशन का उसका अंश व्ययगत नहीं
होगा अपितु अन्य विधवाओं को बराबर अंशों में संदेय होगा
अथवा यदि ऐसी अन्य केवल एक विधवा है तो पूर्णतः
उस संदेय होगा।

(ii) जहां कि मृत रेल सेवक या पेंशन भोगी की
उत्तरजीवी कोई विधवा हो किन्तु उसने किसी अन्य पत्नी
में, जो जीवित नहीं है, पात्र संतान या संतानों को छोड़ा
है वहां वह या तो पात्र संतान कुटुंब पेंशन के उस अंश का
हकदार होगी जो माता को उस दशा में मिलती जब
वह उस रेल सेवक या पेंशनभोगी की मृत्यु के समय जीवित
होती :

परंतु ऐसी संतान या संतानों अथवा विधवा या
विधवाओं को संदेय कुटुंब पेंशन के अंश संदेय न रहने की
दशा में, ऐसे अंश व्ययगत नहीं होंगे अपितु अन्यथा पात्र
अथवा विधवा या विधवाओं अथवा अन्य संतान या संतानों
को बराबर अंशों में या यदि केवल एक विधवा या संतान
है तो ऐसी विधवा या संतान को पूर्णतः संदेय होंगे।

(iii) जहां मृत रेल सेवक या पेंशन भोगी विधवा
छोड़ जाता है किन्तु विवाह विच्छिन्न पत्नी या पत्नियां में
कोई संतान या बालक अपने पीछे छोड़ जाता है वहां ऐसी
संतान यदि वे कुटुंब पेंशन के संदाय के लिए पात्रता की अन्य
शर्तों की पूर्ति करते हैं, कुटुंब पेंशन के उस अंश का हकदार
होंगे। जो रेल सेवक या पेंशन भोगी की मृत्यु के समय
माता ने उस दशा में प्राप्त किया होता यदि वह उस प्रकार
विवाह विच्छिन्न नहीं होती :

परंतु ऐसी संतान या संतानों अथवा विधवा या
विधवाओं को संदेय कुटुंब पेंशन का ऐसा अंश या ऐसे
अंशों के संदेय न रहने पर ऐसा अंश या ऐसे अंश व्ययगत
नहीं होंगे अपितु अन्यथा पात्र अन्य विधवा या विधवाओं
और अन्य संतान या संतानों को बराबर अंशों में, और
यदि केवल एक विधवा या संतान है तो ऐसी विधवा या
बालक को पूर्णतः संदेय होंगे।

(8(i) उपनियम (6) के खंड (घ) और उपनियम
(7) के खंड (i) में यथा उपबंधित के सिवाय, कुटुंब
पेंशन एक ही समय में कुटुंब के एक से अधिक सदस्य को
संदेय नहीं होगी।

(ii) यदि कोई भगवा रेल सेवक या पेंशन भोगी किसी विधवा या विधुर का छोड़ जाता है या छोड़ जाती है तो कुटुम्ब पेंशन विधवा या विधुर, और उसके न जाने पर पात्र संतान को, संदेय हो जाएगी।

(9) जहां कि कोई मृतक रेल सेवक या पेंशनभोगी एक से अधिक संतान छोड़ जाता है वहां प्रेडिक्टेड संतान उपनियम (6) के, यथास्थिति, खंड (ख) या खंड (iii) में वर्णित अवधि के लिए कुटुम्ब पेंशन पाने का हकदार होगा और उस अवधि के अवसान के पश्चात् अवशिष्ट संतान कुटुम्ब पेंशन पाने का पात्र हो जाएगा।

(10) जहां इस नियम के अधीन किसी अवश्यम्भूत को कुटुम्ब पेंशन मंजूर की जाती है, वहां वह उस अवश्यम्भूत की ओर से संरक्षक को संदेय होगी।

(11) यदि पत्नी और पति दोनों रेल या मरकाही सेवक हैं तथा इस नियम के उपबन्ध से या केन्द्रीय सिविल सेवा (पेंशन) नियम, 1972 के तत्स्थानी उपबन्धों से शामिल होते हैं और उनमें से एक की सेवा में रहते हुए या सेवा निवृत्ति के पश्चात् मृत्यु हो जाती है, तो पति की बाबत कुटुम्ब पेंशन उत्तरजीवी पति या पत्नी को संदेय हो जाएगी तथा उस पति या पत्नी की मृत्यु की दशा में, मृतक माता-पिता की बाबत उत्तरजीवी संतान या संतानों को दो कुटुम्ब पेंशन नीचे विनिर्दिष्ट सीमाओं के अधीन रहते हुए, मंजूर की जाएगी: अर्थात्—

(क) (i) यदि उत्तरजीवी संतान उपनियम (4) में वर्णित दर में दोनों कुटुम्ब पेंशन पाने का/के पात्र है/हैं तो दोनों पेंशनों की रकम दो हजार पांच सौ रुपये प्रति मास तक सीमित होगी ;

(ii) यदि कुटुम्ब पेंशनों में से एक उपनियम (4) में वर्णित दर में संदेय नहीं रह जाती है और उसके बदले में उपनियम (2) में वर्णित दर में पेंशन संदेय हो जाती है, तो दोनों पेंशनों की रकम भी दो हजार पांच सौ रुपये प्रतिमास तक सीमित होगी ;

(ख) यदि दोनों कुटुम्ब पेंशन उपनियम (2) में वर्णित दरों में संदेय हैं, तो दोनों पेंशनों की रकम एक हजार दो सौ पचास रुपये प्रतिमास तक सीमित होगी।

(12) जहां किसी महिला रेल सेवक या पुरुष रेल सेवक की न्यायिक रूप से पृथक् हुए पति या विधवा के जीवित रहते हुए मृत्यु हो जाती है और कोई संतान नहीं है, वहां मृतक की बाबत कुटुम्ब पेंशन उत्तरजीवी व्यक्ति को संदेय होगी :

परन्तु ऐसे मामले में जहां न्यायिक पृथक्करण जारकर्म के आधार पर अनुदत्त किया गया है और रेल सेवक की मृत्यु ऐसे न्यायिक पृथक्करण की अवधि के दौरान होती है, वहां कुटुम्ब पेंशन उत्तरजीवी व्यक्ति को संदेय नहीं

होगी, यदि ऐसा उत्तरजीवी व्यक्ति जारकर्म करने का दावा पाया गया है।

(13) (i) जहां किसी महिला रेल सेवक या पुरुष रेल सेवक की संतान या संतानों सहित न्यायिक रूप से पृथक् हुए पति या विधवा के जीवित रहते हुए मृत्यु हो जाती है, वहां मृतक की बाबत संदेय कुटुम्ब पेंशन उत्तरजीवी व्यक्ति को संदेय होगी, परन्तु यह तब जब कि वह पुरुष या वह महिला ऐसी संतान या संतानों का संरक्षक हो।

(ii) जहां उत्तरजीवी व्यक्ति ऐसी संतान या संतानों का संरक्षक नहीं रह जाता है, वहां ऐसी कुटुम्ब पेंशन ऐसे व्यक्ति को संदेय होगी, जो ऐसी संतान या संतानों का वास्तविक संरक्षक है।

(14) (i) यदि किसी ऐसे व्यक्ति पर, जो किसी रेल सेवक की सेवा में रहते हुए मृत्यु होने की दशा में, इस नियम के अधीन कुटुम्ब पेंशन प्राप्त करने का पात्र है, रेल सेवक की हत्या करने के अपराध का या ऐसे अपराध करने में दुष्प्रेरण करने का आरोप है, तो ऐसे व्यक्ति का, जिसके अंतर्गत कुटुम्ब पेंशन प्राप्त करने के अन्य पात्र कुटुम्ब का/के सदस्य भी है/हैं सम्मिलित है, दावा उसके विरुद्ध संस्थित दांडिक कार्यवाहियों के समाप्त होने तक निषिद्ध रहेगा।

(ii) यदि खंड (i) में निर्दिष्ट दांडिक कार्यवाहियों के समाप्त होने पर, सम्बद्ध व्यक्ति को—

(क) रेल सेवक की हत्या करने या हत्या में दुष्प्रेरण करने के लिए सिद्ध दोष टहराया जाता है, तो ऐसे व्यक्ति को कुटुम्ब पेंशन प्राप्त करने से विवर्जित कर दिया जाएगा और वह कुटुम्ब के अन्य पात्र सदस्य को रेल सेवक की मृत्यु की तारीख से संदेय होगी ;

(ख) रेल सेवक की हत्या करने या हत्या में दुष्प्रेरण करने के आरोप से दोषमुक्त कर दिया जाता है, तो कुटुम्ब पेंशन ऐसे व्यक्ति को रेल सेवक की मृत्यु की तारीख से संदेय होगी।

(iii) खंड (i) और खंड (ii) के उपबन्ध रेल सेवक की संवानिवृत्ति के पश्चात् मृत्यु होने पर संदेय होने वाली कुटुम्ब पेंशन को भी लागू होंगे।

(15) (i) जैसे ही कोई रेल सेवक रेल सेवा में प्रवेश करता है, वह प्ररूप 6 में अपने कुटुम्ब के व्योरे कार्यालय प्रधान को देगा और यदि रेल सेवक का कोई कुटुम्ब नहीं है तो वह प्ररूप 6 में कुटुम्ब के होते ही व्योरे देगा।

(ii) रेल सेवक का यह कर्तव्य होगा कि वह अपने कुटुम्ब के आकार में हुए किसी पश्चात्पूर्ती परिवर्तन, जिसके अंतर्गत उसकी किसी शालिका के विवाह का नथ्य भी है, कार्यालय प्रधान को तत्काल संसूचित करे।

(iii) (क) राजपत्रित रेल सेवक की दशा में, कार्यालय प्रधान प्रबन्ध 6 सुरक्षित अभिरक्षा में रखेगा और रेल सेवक द्वारा दी गई पश्चात्कर्त्ती जानकारी के आधार पर प्रबन्ध में आवश्यक परिवर्धन या परिवर्तन करेगा तथा सभी ऐसी संसूचनाओं को, जो रेल सेवक इस निमित्त कार्यालय प्रधान को लिखेगा, कार्यालय प्रधान द्वारा अभिलेखीकार किया जाएगा।

(ख) राजपत्रित रेल सेवक की दशा में, कार्यालय प्रधान कुटुम्ब के सदस्यों के बारे में तथा उसमें किए गए कोई परिवर्धन या परिवर्तन लेखा अधिकारी को सुरक्षित अभिरक्षा में रखने के लिए भेजेगा। लेखा अधिकारी का यह कर्त्तव्य होगा कि वह इन गतिविधियों को अद्यतन रखे और इन संसूचनाओं की प्राप्ति अभिलेखीकार करे।

(16) समानता पर आधारित रेल मंत्रालय के पत्र सं. एफ. (सी) 63 पी एन 1/32, तारीख 21 अक्टूबर, 1963 में संजूर की गई पेंशन में तथार्थ वृद्धि उस कुटुम्ब को संदेह नहीं होगी जिसे इस नियम के अधीन कुटुम्ब पेंशन मिल रही है।

(17) ऐसा सैनिक पेंशनभोगी, जो सेना की सेवा से सेवानिवृत्ति पर, सेवा निवृत्ति पेंशन, सेवा पेंशन या अशक्तता पेंशन, सेना अनुदेश 2/एस/64 या तत्स्थानी नौ सेना या वायु सेना अनुदेशों द्वारा साधारण कुटुम्ब पेंशन के अनुदान के लिए शासित है और अधिवर्षिता की आयु प्राप्त करने से पहले किसी रेल सेवा या रेल पद पर पुनर्नियुक्त हो जाता है, इस नियम के अधीन अनुज्ञेय कुटुम्ब पेंशन की या पूर्वोक्त नौसेना, सेना या वायुसेना के अनुदेशों के अधीन पहले से प्राधिकृत कुटुम्ब पेंशन की पात्रता के प्रयोजन के लिए निम्नलिखित रूप से शासित होगा।

(i) यदि उसकी मृत्यु पुनर्नियोजन के दौरान अस्थायी हैसियत में किसी सिविल पद को धारण करते हुए हो जाती है तो उसके कुटुम्ब को हम नियम के अधीन अनुज्ञेय कुटुम्ब पेंशन अथवा उसकी सेवानिवृत्ति या सेना अनुदेश 2/एस/64 या तत्स्थानी नौसेना या वायुसेना अनुदेश के अधीन सेना सेवा से उन्मुक्त किए जाने के समय प्राधिकृत कुटुम्ब पेंशन का विकल्प करने के लिए अनुज्ञात किया जा सकेगा;

(ii) यदि वह किसी अधिष्ठायी हैसियत में स्थायी पद धारण किए बिना रेल सेवा या रेल पद से सेवानिवृत्त हो जाता है, तो उसका कुटुम्ब सेवानिवृत्ति के पश्चात् उसकी मृत्यु होने की दशा में सेना अनुदेश 2/एस/64 या तत्स्थानी नौसेना या वायुसेना अनुदेश के अधीन प्राधिकृत कुटुम्ब पेंशन का पात्र होगा;

(iii) यदि उसमें अपने पुनर्नियोजन के दौरान रेल सेवा में या रेल पद पर पुष्टि होने पर नियम 34 के उपनियम (1) के खंड (क) के निबंधनों के अनुसार पिछली सैनिक सेवा के लिए सेना पेंशन प्रतिधारित करने का विकल्प किया है, तो वह इस नियम के अधीन अनुज्ञेय कुटुम्ब पेंशन या सेना अनुदेश 2/एस/64 के या तत्स्थानी नौसेना या वायु सेना अनुदेश के अधीन पहले से प्राधिकृत कुटुम्ब पेंशन प्राप्त करने के लिए दूसरा विकल्प का प्रयोग करेगा और ऐसे विकल्प का रेल सेवा में या रेल पद पर मूल नियुक्ति के आदेश जारी किए जाने की तारीख से तीन मास की अवधि के भीतर या यदि वह उस दिन छुट्टी पर है तो उसके छुट्टी पर से चौटो के तीन मास के भीतर इनमें से जो भी पश्चात्कर्त्ती हो, प्रयोग किया जाएगा। यदि पूर्वोक्त अवधि के भीतर किसी विकल्प का प्रयोग नहीं किया जाता है, तो यह समझा जाएगा कि पेंशन-भोगी ने सेना अनुदेश सं. 2/एस/64 या तत्स्थानी नौसेना या वायुसेना अनुदेश के अधीन प्राधिकृत कुटुम्ब पेंशन का विकल्प किया है, और

(iv) यदि उसने पुनर्नियोजन के दौरान रेल सेवा में या रेल पद पर पुष्टि होने पर नियम 34 के उपनियम (1) के खंड (ख) के निबंधनों के अनुसार सेना पेंशन अभ्यापित करने और उसके बदले में सिविल पेंशन के लिए सैनिक सेवा की गणना करने का विकल्प किया है तो वह इस नियम के अधीन अनुज्ञेय कुटुम्ब पेंशन द्वारा शासित होगा।

(18) इस नियम के अधीन अनुज्ञेय कुटुम्ब पेंशन किसी ऐसे व्यक्ति को अनुदत्त नहीं की जाएगी जो केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार या पब्लिक सेक्टर उपक्रम या स्वशासी निकाय या केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार के अधीन स्थानीय निधि के किन्हीं अन्य नियमों के अधीन पहले से ही कुटुम्ब पेंशन प्राप्त कर रहा है या उसके लिए पात्र है।

परन्तु कोई ऐसा व्यक्ति, जो इस नियम के अधीन कुटुम्ब पेंशन के लिए अन्यथा पात्र है, इस नियम के अधीन कुटुम्ब पेंशन प्राप्त करने के लिए विकल्प कर सकेगा यदि वह किसी अन्य स्रोत से अनुज्ञेय कुटुम्ब पेंशन छोड़ देता है।

19. इस नियम के प्रयोजन के लिए—

(क) “निरन्तर सेवा” में किसी पेंशनी स्थापन में अस्थायी या स्थायी हैसियत में की गई सेवा अभिप्रेत है किन्तु इसके अन्तर्गत निम्नलिखित नहीं है, अर्थात् :—

(i) निलम्बन की अवधि, यदि कोई हो, और

(ii) अठारह वर्ष की आयु प्राप्त होने से पहले की गई सेवा की अवधि, यदि कोई हो;

(ख) रेल सेवक के संबंध में, "कुटुम्ब" से अभिप्रेत है :—

- (i) किसी पुरुष रेल सेवक की दशा में, पत्नी अथवा किसी महिला रेल सेवक की दशा में, पति;
- (ii) न्यायिक रूप से पृथक हुए पत्नी या पति जिन्हें ऐसा पृथक्करण जारकर्म के आधार पर अनुदत्त नहीं किया गया हो और उत्तरजीवी व्यक्ति जारकर्म करने का दोषी अभिनिर्वाहित नहीं किया गया हो;
- (iii) वह पुत्र, जिसने पच्चीस वर्ष की आयु प्राप्त नहीं की है और वह अविवाहित पुत्री, जिसने पच्चीस वर्ष की आयु प्राप्त नहीं की है, जिसके अन्तर्गत ऐसा पुत्र या पुत्री भी है जो सेवानिवृत्ति के पश्चात् पैदा हुआ/हुई है या जिसका सेवानिवृत्ति से पूर्व वंश रूप से दत्तक ग्रहण किया गया है, किन्तु इसके अन्तर्गत सेवानिवृत्ति के पश्चात् दत्तक पुत्र या पुत्री नहीं है;

(ग) "वेतन" से अभिप्रेत है :—

- (i) नियम 49 के खंड (क) में यथा विनिर्दिष्ट उपलब्धियां या
- (ii) नियम 50 में यथानिर्दिष्ट औसत उपलब्धियां यदि मृत रेल सेवक की उपलब्धियां, उसकी सेवा के अन्तिम दस मास के दौरान शास्ति से अन्यथा थटा दी गई हो :

परन्तु महंगाई भत्ता का अंशक जिसे रेल बोर्ड के पत्र सं० पी सी III/79/डीपी/1 तारीख 11 जून, 1979 के अधीन महंगाई वेतन के रूप में मान लिया गया है इस नियम के प्रयोजन के लिए वेतन के रूप में नहीं माना जाएगा ।

20. इस नियम की कोई भी बात निम्नलिखित को लागू नहीं होगी, —

(क) ऐसा पुनर्नियोजित रेल सेवक, जो

1 जनवरी, 1964 से पहले—

- (i) सेवानिवृत्ति पेंशन या अधिवर्षिता पेंशन पर रेल सेवा से निवृत्त हो गया था, या
- (ii) सेवानिवृत्ति पेंशन, सेवा पेंशन या अशक्तता पेंशन पर सैनिक सेवा से निवृत्त हो गया था और जिसने पुनर्नियोजन की तारीख को उस पद को, जिस पर उसे पुनर्नियोजित किया जाता है, लागू अधिवर्षिता आयु प्राप्त कर ली थी;

(ख) ऐसा सैनिक पेंशनभोगी, जो 1 जनवरी, 1964 को या उसके पश्चात् सैनिक सेवा से निवृत्त हो गया था और जो रेल सेवा में या पद पर पुनर्नियोजन की तारीख को उस पद को, जिस पर उसे पुनर्नियोजित किया जाता है, लागू अधिवर्षिता की आयु प्राप्त कर ली थी;

(ग) नियम 53 में विनिर्दिष्ट ऐसा रेल सेवक, जिसे किसी ऐसे नियम या कम्पनी में जित पर सरकार का पूर्णतः या सारतः स्वामित्व है या उसके द्वारा नियंत्रित है या किसी अन्य निकाय में चाहे वह निगमित हो या नहीं, शामिल कर लिए जाने पर, यथास्थिति, निगम या कंपनी या निकाय की कुटुम्ब पेंशन स्कीम के उपबंधों द्वारा शासित है;

21. पेंशन या कुटुम्ब पेंशन पर महंगाई राहत :—

- (i) पेंशनभोगियों और कुटुम्ब पेंशन भोगियों को ऐसी दर से और शर्तों पर, जो सरकार समय-समय पर विनिर्दिष्ट करे, महंगाई राहत के रूप में राहत अनुदत्त की जा सकेंगी;
- (ii) यदि किसी पेंशनभोगी को केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार के अधीन या ऐसी सरकार के अधीन किसी निगम, कम्पनी, निकाय या बैंक के अधीन भारत या विदेश में पुनर्नियोजित किया जाता है, जिसके अन्तर्गत ऐसे निगम, कम्पनी, निकाय और बैंक में स्थायी आमेलन भी है, तो वह ऐसे पुनर्नियोजन की अवधि के दौरान पेंशन या कुटुम्ब पेंशन पर महंगाई राहत लेने का पात्र नहीं होगा;
- (iii) ऐसा रेल सेवक, जो नियम 54 के खंड (क) के निबंधनों के अनुसार स्थायी रूप से शामिल हो गया है और नियम 54 के खंड (क) के निबंधनों के अनुसार अनुपाततः मासिक पेंशन के बदले में एकमुश्त संदाय का विकल्प करता है, महंगाई राहत के लिए पात्र नहीं होगा।

अध्याय 7

पेंशन और उपदान की रकम का अवधारण और प्राधिकृत किया जाना

76. सेवानिवृत्त होने वाले रेल सेवकों की सूची की तैयारी :—

(1) यथास्थिति, प्रत्येक विभागाध्यक्ष या कार्यालय प्रधान प्रत्येक छमाही अर्थात्, प्रत्येक वर्ष पहली जनवरी और पहली जुलाई को, ऐसे सभी रेल सेवकों की एक सूची तैयार करवाएगा जो उस तारीख से अगले चौबीस मास से लेकर तीस मास के भीतर सेवानिवृत्त होने वाले हैं।

(2) ऐसी प्रत्येक सूची की एक प्रति उस वर्ष की, यथास्थिति, 31 जनवरी या 31 जुलाई, तक, न कि उसके पश्चात् संबंधित सेवकों अधिकारी को दी जाएगी।

(3) ऐसे रेल सेवक की दशा में जो अधिवर्षिता से भिन्न किसी कारण से सेवानिवृत्त हो रहा हो, सेवानिवृत्ति के तथ्य का पता लगते ही, कार्यालय प्रधान तुरंत लेखा अधिकारी को इसकी इत्तिला देगा।

(4) उपनियम (3) के अधीन कार्यालय प्रधान द्वारा, लेखा अधिकारी को भेजी गई प्रज्ञापना की एक प्रति, यथास्थिति रेल के इंजीनियरी विभाग या भारत सरकार के सम्पदा निदेशालय को भी पृष्ठान्तित की जाएगी, यदि संबद्ध रेल सेवक रेल या सरकारी काम का आबंटिती है।

77. "बेबाकी प्रमाणपत्र" जारी करने के बारे में सम्पदा निदेशालय को प्रज्ञापना—(1) कार्यालय प्रधान ऐसे रेल सेवक की, जिसके अधिभोग में कोई सरकारी बास है, (जिसे इसमें इसके पश्चात् आबंटिती कहा गया है) पूर्वानुमानित सेवानिवृत्ति की तारीख से कम से कम दो वर्ष पूर्व सम्पदा निदेशालय को आबंटिती की सेवानिवृत्ति से आठ मास पूर्व की अवधि के बारे में "बेबाकी प्रमाणपत्र" जारी किए जाने के लिए लिखेगा।

(2) सम्पदा निदेशालय, उपनियम (1) के अधीन प्रज्ञापना की प्राप्ति पर, नियम 16 में यथाउपबंधित आगे कार्यवाई करेगा।

78. पेंशन कागजपत्र की तैयारी—प्रत्येक कार्यालय प्रधान उस तारीख से, जिसको रेल सेवक अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त होने वाला है, दो वर्ष पूर्व अथवा उस तारीख को जिसको वह सेवानिवृत्ति पूर्ण छूटी पर चला जाता है, इनमें से जो भी पहले हो, प्ररूप 7 में पेंशन कागजपत्र तैयार करने का कार्य आरंभ कर देगा।

79. पेंशन कागजपत्र पूरा करने के प्रक्रम—(1) कार्यालय प्रधान नियम 78 में निर्दिष्ट दो वर्ष की तैयारी की अवधि को निम्नलिखित तीन प्रक्रमों में विभाजित करेगा; अर्थात्:—

(क) पहला प्रक्रम—सेवा का सत्यापन—

- (i) कार्यालय प्रधान रेल सेवक की सेवा पुस्तिका को देखेगा और अपना यह समाधान कर लेगा कि संपूर्ण सेवा के सत्यापन के प्रमाणपत्र उसमें अभिलिखित है या नहीं।
- (ii) सेवा के असत्यापित भाग या भागों की बाबत वह, यथास्थिति, सेवा के उस भाग या उन भागों को बंटेन बिलों, निस्तारण पंजियों या अन्य सुसंगत अभिलेखों के प्रति निर्देश से सत्यापित करने की व्यवस्था करेगा और सेवा पुस्तिका में आवश्यक प्रमाणपत्रों को अभिलिखित करेगा।
- (iii) यदि किसी अवधि की सेवा का उपखण्ड (i) और उपखण्ड (ii) में विनिर्दिष्ट रीति से इस कारण सत्यापन नहीं किया जा सकता है कि उस अवधि में रेल सेवक ने किसी अन्य कार्यालय या विभाग

में सेवा की थी तो उस कार्यालय के, जिसमें रेल सेवक के बारे में यह दर्शाया गया है कि उसने उस अवधि में वहां सेवा की थी, प्रधान को सत्यापन के प्रयोजन के लिए निर्देश किया जाएगा।

(iv) यदि रेल सेवक द्वारा की गई सेवा के किसी भाग को उपखण्ड (i) या उपखण्ड (ii) या उपखण्ड (iii) में विनिर्दिष्ट रीति से सत्यापित नहीं किया जा सकता है तो रेल सेवक को सदैव कागज पर एक लिखित कथन फाइल करने के लिए कहा जाएगा जिसमें वह यह बताएगा कि उसने वास्तव में उस अवधि में सेवा की थी और कथन के अन्त में वह इस बात के प्रतीक स्वरूप ऐसे धोषणापत्र पर अपने हस्ताक्षर करेगा कि उस कथन में जो कुछ कहा गया है वह सही है और ऐसी धोषणा के समर्थन में सभी दस्तावेजी साक्ष्य पेश करेगा और ऐसी सभी जानकारी देगा जिसे पेश करना या फाइल करना उसके सामर्थ्य में हो।

(v) कार्यालय प्रधान उस रेल सेवक के लिखित कथन में दिए गए तथ्य पर और सेवा की उक्त अवधि के समर्थन में पेश किए गए साक्ष्य और दी गई जानकारी पर विचार कर लेने के पश्चात् सेवा के उस भाग के बारे में स्वीकार करेगा कि वह उस रेल सेवक की पेंशन की गणना के प्रयोजनों के लिए की गई सेवा है।

(ख) दूसरा प्रक्रम—सेवा पुस्तिका के संपादकी पूर्ति :—

- (i) कार्यालय प्रधान सेवा के सत्यापन के प्रमाणपत्रों की संवीक्षा करते समय उनमें ऐसे खोपों, त्रुटियों या कमियों का पता लगाएगा जिनका उपसंश्लेषों के अवधारण और पेंशन के लिए अर्हक सेवा से सीधा संबंध है।
- (ii) खण्ड (क) के अनुसार सेवा के सत्यापन को पूरा करने के लिए और इस खण्ड के उपखण्ड (i) में निर्दिष्ट लोगों, त्रुटियों या कमियों को पूरा करने के लिए हर प्रयास किया जाएगा और किन्हीं ऐसे खोपों, त्रुटियों या कमियों को, जिनके अन्तर्गत सेवा का वह भाग भी है जो सेवा पुस्तिका में असत्यापित दिखाया गया है और जिसे खण्ड (क) में अधिकथित प्रक्रिया के अनुसार सत्यापित करना संभव नहीं है, उपेक्षा कर दी जाएगी और पेंशन के लिए अर्हक सेवा का सेवा पुस्तिका में प्रविष्टियों के आधार पर अवधारण किया जाएगा।
- (iii) कार्यालय प्रधान औसत उपसंश्लेषों की गणना करने के प्रयोजन के लिए सेवा के अन्तिम दस मास में ली गई या ली जाने वाली उपसंश्लेषों की शुद्धता यह सुनिश्चित करने के लिए सेवा पुस्तिका से सत्यापित करेगा कि सेवा के अन्तिम दस मास में उपसंश्लेषों सेवा पुस्तिका में ठीक-ठीक दर्शाई

गई है, कार्यालय प्रधान रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख से पूर्व केवल चौबीस मास की अवधि की उपलब्धियों की श्रद्धता का सत्यापन कर सकेगा न कि उस तारीख से पूर्व की किसी अवधि के बारे में।

(ग) तीसरा प्रक्रम—कार्यालय प्रधान द्वारा प्ररूप 8 अभिप्राप्त करना :—

- (1) कार्यालय प्रधान रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख से आठ मास पूर्व उससे सम्यक् रूप में पूरा किया गया प्ररूप 8 अभिप्राप्त करेगा।
- (2) उपनियम (1) के खण्ड (क), खण्ड (ख) और खण्ड (ग) के अधीन कारंबाई रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख से आठ मास पूर्व की जाएगी।

80.—पेंशन कागजपत्र को पूरा किया जाना.—कार्यालय प्रधान रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख से छह मास के अपश्चात् प्ररूप 7 के भाग 1 को पूरा करेगा।

81. पेंशन कागजपत्र का लेखा अधिकारी के पास अर्पणित किया जाना.—कार्यालय प्रधान, नियम 79 और नियम 80 की अपेक्षा का अनुपालन करने के पश्चात्, रेल सेवक की सम्यक् रूप में पूरी की गई अवतन सेवा पुस्तिका सहित प्ररूप 9 में एक व्याख्या पत्र के साथ सम्यक् रूप में पूरा किया गया प्ररूप 7 और प्ररूप 8 तथा ऐसे कोई अन्य दस्तावेज, जिन पर सेवा के सत्यापन के लिए निर्भर किया गया है, लेखा अधिकारी के पास अर्पणित करेगा।

(2) कार्यालय प्रधान उपनियम (1) में निर्दिष्ट प्ररूपों में से प्रत्येक को एक-एक प्रति अपने अभिलेख के लिए रखेगा।

(3) यदि यह बांछा की गई है कि संदाय लेखा एकक के किसी अन्य सकल में किया जाए तो कार्यालय प्रधान प्ररूप 7, दो प्रतियों में, लेखा अधिकारी को भेजेगा।

(4) उपनियम (1) में निर्दिष्ट कागज पत्र रेल सेवक की सेवा निवृत्ति की तारीख से कम से कम छह मास पूर्व लेखा अधिकारी के पास अर्पणित किए जाएंगे।

82. किसी ऐसी घटना के बारे में, जिसका पेंशन में संबंध है, लेखा अधिकारी को प्रज्ञापना.—यदि पेंशन कागजपत्र नियम 81 के उपनियम (4) में निर्दिष्ट अवधि के भीतर लेखा अधिकारी के पास अर्पणित करने के पश्चात् कोई ऐसी घटना घटती है जिसका संबंध अनुज्ञेय पेंशन की रकम से है, तो इस तथ्य की रिपोर्ट कार्यालय प्रधान द्वारा लेखा अधिकारी को तत्परता से की जाएगी।

83. रेल शोध्यों की विशिष्टियों की लेखा अधिकारी को प्रज्ञापना.—(1) कामोन्मय प्रधान नियम 15 में दिए गए रेल शोध्यों को परितुनित करने के पश्चात् उनकी विशिष्टियां

रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख से कम से कम दो मास पूर्व लेखा अधिकारी को देगा ताकि उपदान प्राधिकृत करने से पूर्व उसमें में शोध्य वसूल किए जा सकें।

(2) यदि, उपनियम (1) के अधीन लेखा अधिकारी की रेल शोध्यों की विशिष्टियों को प्रज्ञापना करने के पश्चात् कोई अतिरिक्त रेल शोध्य कार्यालय प्रधान की जानकारी में आने हैं तो ऐसे शोध्यों की लेखा अधिकारी को तत्परता से रिपोर्ट की जाएगी।

84. अन्तिम पेंशन और उपदान का मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा संदाय.—यदि पेंशनभोगी यह चाहे कि अन्तिम पेंशन या उपदान या दोनों का जो नियम 91 के उपनियम (4) के अधीन मंजूर किए गए हैं, संदाय उसे मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा किया जाए तो वह उसके खर्च पर मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा उसे भेज दिए जाएंगे।

परन्तु किसी ऐसे पेंशनभोगी की दशा में जिसको दो सौ पचास रुपए प्रतिमास से अन्धिक (जिसके अन्तर्गत पेंशन पर राहत की रकम भी है) का संदाय प्राधिकृत किया गया है, उक्त रकम पेंशनभोगी की प्रार्थना पर सरकारी खर्च पर मनीआर्डर द्वारा उसे भेजी जाएगी।

85. पेंशन और उपदान का लेखा अधिकारी द्वारा प्राधिकृत किया जाना.—(1) (क) लेखा अधिकारी नियम 81 में निर्दिष्ट पेंशन कागजपत्र की प्राप्ति पर, अर्पणित जांच पड़ताल करेगा, प्ररूप 7 के भाग 2 में लेखा मुखांकन अभिलेखित करेगा तथा पेंशन और उपदान की रकम निर्धारित करेगा तथा यदि पेंशन लेखा एकक के उसके सकल में संदेय है तो, रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख से कम से कम एक मास पूर्व पेंशन संदाय आदेश जारी करेगा।

(ख) यदि पेंशन लेखा एकक के किसी अन्य सकल में संदेय है तो लेखा अधिकारी पेंशन संदाय आदेश, प्ररूप 7 की प्रति और लेखा मुखांकन सहित, उस सकल के लेखा अधिकारी को संदाय की व्यवस्था करने के लिए भेजेगा।

(2) लेखा अधिकारी द्वारा उपनियम (1) के खण्ड (क) के अधीन अवधारित उपदान की रकम कार्यालय प्रधान को इस टिप्पणी के साथ प्रज्ञापित की जाएगी कि उपदान की रकम नियम 15 में निर्दिष्ट रेल शोध्य, यदि कोई हो, का समायोजन करने के पश्चात्, सेवानिवृत्त रेल सेवक को भवितरण के लिए निकाली जा सकती है।

(3) नियम 16 के उपनियम (5) के अधीन विधारित उपदान की रकम कार्यालय प्रधान द्वारा सम्पदा निवेशालय द्वारा सूचित वकाया अनुज्ञप्ति फीस मद्धे समायोजित की जाएगी और अतिशेष का, यदि कोई हो, सेवानिवृत्त रेल सेवक को प्रतिदाय किया जाएगा।

86. प्रतिनियुक्ति पर रेल सेवक.—(1) किसी ऐसे रेल सेवक की दशा में, जो उस समय सेवानिवृत्त होता है, जब वह केन्द्रीय सरकार के किसी विभाग में प्रतिनियुक्ति पर

है, पेशन और उपदान प्राधिकृत करने की कार्रवाई सेवा उधार लेने वाले विभाग के कार्यालय प्रधान द्वारा इस अध्याय के उपबन्धों के अनुसार की जाएगी।

(2) किसी ऐसे रेल सेवक की दशा में, जो उस समय सेवा निवृत्त होता है जब वह किसी राज्य सरकार में प्रतिनियुक्ति पर है या विदेश सेवा में है, पेशन और उपदान प्राधिकृत करने की कार्रवाई उस काउंटर प्राधिकारी के कार्यालय प्रधान द्वारा, जिसने राज्य सरकार में प्रतिनियुक्ति या विदेश सेवा के लिए मजूरी दी है, इस अध्याय के उपबन्धों के अनुसार की जाएगी।

(3) विभिन्न मंत्रालयों या विभागों के ऐसे केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों की दशा में जो अपनी सेवानिवृत्ति के समय रेल में प्रतिनियुक्ति पर हैं उनकी पेशन के मामले उस मूल मंत्रालय या विभाग द्वारा निपटाए जाएंगे जहाँ से प्रतिनियुक्ति पर गए हैं।

87 उपदान के विलम्बित सदाय पर ब्याज—(1) यदि उपदान का सदाय उस तारीख से, जब सदाय अधिवर्षिता पर शोध्य हुआ, तीन मास के पश्चात् प्राधिकृत किया गया है और यह स्पष्ट रूप से सिद्ध हो जाता है कि सदाय में विलम्ब प्रशासनिक चक्र के कारण माना जा सकता है तो उपदान की रकम पर तीन मास से आगे की अवधि की बावत उस दर से जो केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त अधिवर्षित पर समय समय पर निर्दिष्ट की जाए। ब्याज सदत्त किया जाएगा।

परन्तु यह तब जब कि सदाय में विलम्ब रेल सेवक की ओर से इस अध्याय में अधिकृत प्रक्रिया के अनुपालन में असफलता के कारण नहीं हुआ है।

(2) उपदान के विलम्बित सदाय के प्रत्येक मामले पर, यथास्थिति, रेल एकक के महाप्रबन्धक या प्रशासनिक प्रधान द्वारा, विचार किया जाएगा और जहाँ उक्त महाप्रबन्धक या प्रशासनिक प्रधान का यह समाधान हो जाता है कि उपदान के सदाय में विलम्ब प्रशासनिक चक्र के कारण हुआ था, वहाँ वह ब्याज के सदाय की व्यवस्था करने का आदेश करेगा। मृत्यु-सह-निवृत्ति उपदान के विलम्बित सदाय पर ब्याज सदाय का आदेश पारित करने की शक्ति रेल एकक के महाप्रबन्धक या प्रशासनिक प्रधान में निहित होगी और किसी अवसर प्राधिकारी को प्रत्यायोजित नहीं की जाएगी।

(3) ऐसे सभी मामलों में, जहाँ ब्याज के सदाय का आदेश किया गया है, रेल जिम्मेदारी निश्चित करेगा और ऐसे सम्बद्ध रेल सेवक या सेवकों के विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई करेगा जो उपदान के सदाय में विलम्ब के लिए जिम्मेदार पाए जाते हैं।

(4) यदि रेल सेवक की सेवानिवृत्ति के पश्चात् किए गए सरकार के विनिष्पन्न के परिणामस्वरूप उसकी सेवानिवृत्ति

पर पहले सदत्त उपदान की रकम में निम्नलिखित कारणों से वृद्धि हो जाती है, अर्थात्—

(क) उन उपलब्धियों से उच्चतर उपलब्धियों का अनुदान जिन पर पहले सदत्त उपदान अवधारित किया गया था, या

(ख) सम्बद्ध रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख से पूर्व किसी तारीख से इन नियमों के उपबन्धों का उद्घाटीकरण, तो उपदान की बकाया पर कोई व्याज सदत्त नहीं किया जाएगा।

(5) उपदान सेवानिवृत्ति पर तुरन्त देय हो जाता है और ऐसे रेल सेवक की दशा में, जिसकी मृत्यु सेवा में हो जाती है, उसकी पेशन और मृत्यु-सह-निवृत्ति उपदान को अन्तिम रूप देने के लिए कार्रवाई अध्याय 9 के उपबन्धों के अनुसार की जाएगी।

88 सेवानिवृत्ति की तारीख को अधिसूचित किया जाना—जब कोई रेल सेवक सेवा में निवृत्त हो तब राजपत्रित रेल सेवक की दशा में, राजपत्र में अधिसूचना, और राजपत्रित रेल सेवक की दशा में, एक कार्यालय आदेश, सेवा निवृत्ति की तारीख से एक सप्ताह के भीतर ऐसी तारीख विनिर्दिष्ट करते हुए जारी किया जाएगा और प्रत्येक ऐसी अधिसूचना या कार्यालय आदेश को एक प्रति लेखा अधिकारी को यथास्थिति, दी जाएगी।

परन्तु जहाँ, यथास्थिति, रेल सेवक की सेवानिवृत्ति पूर्व छुट्टी की मजूरी संबंधी अधिसूचना राजपत्र में या कार्यालय आदेश जारी किया जाता है वहाँ एक और अधिसूचना या कार्यालय आदेश कि रेल सेवक ऐसी छुट्टी की समाप्ति पर वस्तुतः सेवानिवृत्ति हो गया है, आवश्यक नहीं होगा जब तक कि छुट्टी कम नहीं कर दी गई हो और सेवानिवृत्ति किसी कारण से पूर्व दिनांकित या मुत्तवी नहीं कर दी गई हो।

अध्याय—8

पेशन और उपदान की रकम मंजूर करने के लिए सक्षम प्राधिकारी

89. पेंशनिक फायदे मंजूर करने के लिए सक्षम प्राधिकारी—(1) पेंशनिक फायदों और पेंशन के संराशीकरण की मजूरी और उससे बमूली नीचे विनिर्दिष्ट संबंधित प्राधिकारी के आदेश से की जाएगी, अर्थात्—

(क) ऐसे रेल सेवक की दशा में, जो किसी महाप्रबन्धक के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन नियोजित हैं, महाप्रबन्धक।

(ख) ऐसे रेल सेवक की दशा में, जो रेल बोर्ड के सीधे नियंत्रण के अधीन किसी विभाग या कार्यालय या परियोजना में नियोजित हैं, विभागाध्यक्ष या कार्यालय या परियोजना प्रधान।

(ग) ऐसे रेल सेवक की दशा में जो अनुभाग अधिकारी की पंक्ति से ऊपर का नहीं है और रेल बोर्ड के कार्यालय में नियोजित है, सचिव, रेल बोर्ड।

(घ) ऐसे विभागाध्यक्ष या कार्यालय या परियोजना प्रधान की दशा में, जो रेल बोर्ड के सीधे नियंत्रण के अधीन है और ऐसे महाप्रबंधक तथा ऐसे अधिकारी की दशा में, जो अनुभाग अधिकारी की पंक्ति से ऊपर का है, और रेल बोर्ड में नियोजित है रेल बोर्ड।

(2) उपनियम (1) के खंड (क) और (ख) में निर्दिष्ट अधिकारियों द्वारा मंजूरी या आदेश पारित करने की शक्ति यथास्थिति, विभागाध्यक्ष या प्रभागीय रेल प्रबंधक को या अराजपत्रित रेल सेवक की दशा में किसी प्रभागीय अधिकारी को प्रत्यायोजित की जा सकेगी और उपनियम (1) के खंड (ग) में निर्दिष्ट सचिव, रेल बोर्ड की ऐसी शक्ति का एतौ अधिकारियों की दशा में जो अनुभाग अधिकारी की पंक्ति से ऊपर के नहीं है, रेल मंत्रालय में संयुक्त सचिव द्वारा और रेल बोर्ड के कार्यालय के अराजपत्रित रेल सेवक की दशा में उपसचिव द्वारा, जिसे रेल बोर्ड द्वारा इस निमित्त प्रत्यायोजित की जा सकेगी, प्रयोग किया जा सकेगा। अनुसंधान, डिजाइन और मानक संगठन में नियोजित अराजपत्रित कर्मचारिवृन्द की दशा में, महाप्रबंधक, अनुसंधान, डिजाइन और मानक संगठन की शक्तियां, उपमाप्रबंधक, अनुसंधान, डिजाइन और मानक संगठन की प्रत्यायोजित की जा सकेगी।

90. मंजूरी के पश्चात् पेंशन का पुनरीक्षण.—(1) नियम 8 और नियम 9 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, अन्तिम निर्धारण के पश्चात् एक बार मंजूर की गई पेंशन के संबंध में रेल सेवक के लिए अलाभकारी पुनरीक्षण नहीं किया जाएगा, जब तक कि ऐसा पुनरीक्षण बाद में किसी लेखन गलती का पता चलने के कारण आवश्यक न हो जाए।

परन्तु कार्यालय प्रधान द्वारा पेंशनभोगी के लिए अलाभकारी रूप में कोई भी पुनरीक्षण रेल बोर्ड की सहमति के बिना नहीं किया जाएगा यदि लेखन गलती का पता पेंशन मंजूरी की तारीख से दो वर्ष की अवधि के बाद चलता है।

(2) उपनियम (1) के प्रयोजन के लिए सम्बद्ध सेवानिवृत्त रेल सेवक को कार्यालय प्रधान द्वारा एक सूचना तामील की जाएगी जिसमें उसमें यह अवस्था को जाएगी कि वह पेंशन के अधिक संदाय का, उसके द्वारा सूचना की प्राप्ति की तारीख से दो मास की अवधि के भीतर प्रतिदाय करे।

(3) यदि रेल सेवक सूचना का अनुपालन करने में असफल रहता है तो कार्यालय प्रधान, लिखित आदेश द्वारा यह निर्देश देगा कि ऐसे अधिक संदाय का भविष्य में पेंशन का कम संदाय करके एक या अधिक किस्तों में, जो कार्यालय प्रधान निर्दिष्ट करे, किस्तों में समायोजन किया जाए।

91. अन्तिम पेंशन.—(1) नियम 79 में अधिकथित कार्रवाई के विभिन्न प्रक्रमों का कार्यालय प्रधान द्वारा क्रमशः से अनुसरण किया जाएगा। ऐसा कोई एकल मामला हो सकता है जहां नियम 79 में अधिकथित प्रक्रिया का अनुसरण करने के बावजूद कार्यालय प्रधान के लिए यह संभव न हुआ हो कि वह उस नियम के उपनियम (4) में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर नियम 81 में निर्दिष्ट पेंशन कागज पत्र लेखा अधिकारी को अग्रेषित कर सके, या जहां पेंशन कागज पत्र लेखा अधिकारी को विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर अग्रेषित किए गए हों किन्तु लेखा अधिकारी पेंशन कागजपत्र कार्यालय प्रधान को पेंशन संदाय आदेश और उपदान का संदाय आदेश जारी करने के पूर्व और जानकारी लेने के लिए लौटा दिया हो। यदि ऐसे मामले में कार्यालय प्रधान की यह राय है कि रेल सेवक इन नियमों के उपबंधों के अनुसार उसकी पेंशन या उपदान या दोनों अंतिम रूप से निर्धारित और परिनिर्धारित किए जाने के पूर्व सेवानिवृत्ति हो जाएगा, तो वह, अति-साधारणापूर्वक सक्षिप्त अन्वेषण, जो भी किया जा सकता है, के पश्चात् सेवा के अर्हक वर्षों और पेंशन के लिए अर्हक उपलब्धियों का अवधारण करने के लिए अविलंब कार्रवाई करेगा। इस प्रयोजन के लिए वह—

(i) ऐसी जानकारी पर निर्भर करेगा जो शासकीय अभिलेखों में उपलब्ध हो, और

(ii) सेवानिवृत्त होने वाले रेल सेवक से सादा कागज पर एक लिखित कथन फाइल करने के लिए कहेगा, जिसमें सेवा के अंतिम दस मास के दौरान ली गई उपलब्धियों के व्योरे सहित सेवा की कुल अवधि होगी किन्तु उसमें सेवा व्यवधान और अन्य अनर्हक अवधि नहीं होगी।

(2) उपनियम (i) के खण्ड (ii) में दिए गए प्रकार का कथन करने समय रेल सेवक कथन के नीचे कथन की शुद्धता के बारे में घोषणा करेगा और उस पर हस्ताक्षर करेगा।

(3) कार्यालय प्रधान तत्पश्चात् सेवा के अर्हक वर्षों और पेंशन के लिए अर्हक उपलब्धियों का, शासकीय अभिलेखों से उपलब्ध जानकारी और उपनियम (1) के अधीन निवृत्त होने वाले रेल सेवक से अभिप्राप्त जानकारी के अनुसार अवधारण करेगा।

तत्पश्चात् वह अन्तिम पेंशन की रकम और अन्तिम मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान की रकम का अवधारण करेगा।

(4) कार्यालय प्रधान उपनियम (3) के अधीन पेंशन और उपदान की रकम का अवधारण करने के पश्चात् निम्नलिखित रूप में आगे कार्रवाई करेगा:—

(क) वह रेल सेवा को संबोधित एक मंजूरी पत्र जारी करेगा और उसके एक प्रति लेखा अधिकारी को निम्नलिखित प्राधिकृत फार्म हुए पृष्ठांकित करेगा—

(1) उपनियम (3) के अधीन अन्तिम पेंशन के रूप में यथा अवधारित पेंशन का सौ प्रतिशत छह मास में अन्तिम अवधि के लिए रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख में संगणित किया जाएगा, और

(2) उपनियम (3) के अधीन अन्तिम उपदान के रूप में यथा अवधारित उपदान का सौ प्रतिशत जिसमें से उपदान का वह भाग जो इन नियमों में उपबंधित हो, विधायित किया जाएगा।

(ख) यह नियम 83 के उपनियम (i) के अधीन उपदान में से वसूल की जाने वाली रकम मंजूरी पत्र में उपदर्शित करेगा। मंजूरी पत्र जारी करने के पश्चात् वह—

(i) अन्तिम पेंशन की रकम, और

(ii) खण्ड (क) के उपखंड (ii) में वर्णित रकम की कटौती करने के पश्चात् अन्तिम पेंशन की रकम, निकालेगा।

(5) उपनियम (4) के अधीन संदेय अन्तिम पेंशन और उपदान की रकम का, यदि आवश्यक हो, अभिलेखों की विस्तृत संवीक्षा पूरी होने पर पुनरीक्षण किया जाएगा।

(6)(क) अन्तिम पेंशन का संदाय रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख से छह मास की अवधि से यागे जारी नहीं रखा जाएगा। यदि छह मास की उक्त अवधि की समाप्ति के पूर्व अन्तिम पेंशन और अन्तिम उपदान की रकम का अवधारण कार्यालय प्रधान द्वारा, लेखा अधिकारी के परामर्श से कर दिया गया है, तो लेखा अधिकारी

(1) पेंशन संदाय आदेश जारी करेगा; और

(2) उपनियम (4) के खंड (ख) के उपखंड (ii) के अधीन संदाय अन्तिम उपदान की रकम और अन्तिम उपदान की रकम के बीच अन्तर को सरकारी शोध्यों का, यदि कोई हो, जो अन्तिम उपदान के संदाय करने के पश्चात् जानकारी में आए हों, समायोजन करने के पश्चात् कार्यालय प्रधान को आहरण और संवितरण करने का निर्देश देगा।

(ख) यदि यह पाया जाए कि उपनियम (4) के अधीन सेवक को संवितरित अन्तिम पेंशन की रकम उसके अन्तिम निर्धारण पर लेखा अधिकारी द्वारा निर्धारित अन्तिम पेंशन से अधिक है तो लेखा अधिकारी इस बात के लिए स्वतंत्र होगा कि वह पेंशन की उस अधिक रकम को किस्तों में, अप्रिय में संदेय पेंशन का कम संदाय करके, समायोजित करे।

(ग) (i) यदि कार्यालय प्रधान द्वारा उपनियम (4) के अधीन विधायित अन्तिम उपदान की रकम अन्तिम रूप से निर्धारित रकम से बहुत अधिक है

तो सेवानिवृत्ति रेल सेवक से यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह वास्तव में उसे संवितरित अधिक रकम का प्रतिदाय करे।

(ii) कार्यालय प्रधान यह सुनिश्चित करेगा कि अन्तिम रूप से निर्धारित उपदान की रकम से अधिक रकम के संवितरण के अक्सर कम से कम हों और अधिक संदाय के लिए जिम्मेदार पदधारी अन्तिम संदाय के वेतदार होंगे।

(7) यदि उपनियम (6) के खण्ड (क) ने निर्दिष्ट छह मास की अवधि के भीतर पेंशन और उपदान की अन्तिम रकम का अवधारण कार्यालय प्रधान द्वारा लेखा अधिकारी के परामर्श से नहीं किया गया है तो लेखा अधिकारी अन्तिम पेंशन और उपदान को अन्तिम मानेगा और छह मास की उक्त अवधि की समाप्ति पर पेंशन संदाय आदेश तुरन्त जारी करेगा।

(8) लेखा अधिकारी द्वारा उपनियम (6) या उपनियम (7) के अधीन पेंशन संदाय आदेश के जारी करते ही कार्यालय प्रधान विधायित उपदान की रकम ऐसे रेल शोध्यों या सरकारी शोध्यों का, जो उपनियम (4) के खण्ड (ख) के उपखंड (ii) के अधीन अन्तिम उपदान के संदाय के पश्चात् जानकारी में आए हों, समायोजन करने के पश्चात् रेल सेवक को प्रतिदाय करने के लिए कार्यवाई करेगा। यदि रेल सेवक किसी सरकारी बाम या रेल बाम का आवंटित था, तो विधायित रकम, यथास्थिति, संपदा निदेशालय में बकाकी प्रमाणपत्र प्राप्त होने पर या रेल बाम खाली करने पर लौटा देनी चाहिए।

अध्याय 9

रेल सेवा में रहते हुए मरने वाले रेल सेवकों की बाबत कुटुम्ब पेंशन और मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान।

92. कुटुम्ब पेंशन और मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान के दावे अभिप्राप्त करना—

(1) जहां कार्यालय प्रधान को सूचना मिलती है कि किसी रेल सेवक की मृत्यु सेवा में रहते हुए हो गई है वहां वह यह अभिनिश्चित करेगा कि ऐसे मृत रेल सेवक की बाबत कोई मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान या कुटुम्ब पेंशन, या दोनों, संदेय हैं या नहीं।

(2) (क) जहां मृत रेल सेवक का कुटुम्ब नियम 70 के अधीन मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान का पात्र है वहां कार्यालय प्रधान यह अभिनिश्चित करेगा कि—

(1) मृत रेल सेवक ने किसी व्यक्ति या किन्हीं व्यक्तियों की उपदान प्राप्त करने के लिए नामनिर्देशित किया था या नहीं; और

(2) यदि मृत रेल सेवक ने कोई नामनिर्देशन नहीं किया था या जो नामनिर्देशन किया था वह

अस्तित्व में नहीं है तो उपदान किस व्यक्ति या कितने व्यक्तियों को संदेय हो सकता है।

(ख) तत्पश्चात्, कार्यालय प्रधान प्ररूप 13 में दावा करने के लिए संबद्ध व्यक्ति को प्ररूप, 11 या प्ररूप 12 में, जो भी समुचित हो लिखेगा।

(3) जहाँ मृत रेल सेवक का कुटुंब नियम 75 के अधीन कुटुंब पेंशन, 1964 का पात्र है, वहाँ—

(क) कार्यालय प्रधान प्ररूप 10 में दावा करने के लिए विधवा या विधुर को प्ररूप 14 में लिखेगा; और

(ख) जहाँ मृत रेल सेवक के केवल एक या अधिक संतान उत्तरजीवी है वहाँ ऐसी संतान या संतानों का संरक्षक कार्यालय प्रधान को प्ररूप 10 में दावा प्रस्तुत कर सकेगा।

परन्तु संरक्षक से यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह ऐसी संतान की ओर से उक्त प्ररूप में दावा प्रस्तुत करे जिसने अठारह वर्ष की आयु प्राप्त कर ली है और ऐसी संतान स्वयं उक्त प्ररूप में दावा प्रस्तुत कर सकती है।

93. प्ररूप 16 का पूरा किया जाना—(1) (क) कार्यालय प्रधान नियम 92 के उपबंधों के अनुसार कुटुंब से दावा या दावे अभिप्राप्त करने की कार्यवाही करते समय साथ-साथ प्ररूप 16 को पूरा करने का कार्य भी हाथ ले लेगा। यह कार्य उस तारीख से, जिसको रेल सेवक की मृत्यु की तारीख के बारे में सूचना प्राप्त हुई है, एक मास के भीतर पूरा कर लिया जाएगा।

(ख) कार्यालय प्रधान मृत रेल सेवक की सेवा पुस्तिका की जाँच करेगा और अपना यह समाधान करेगा कि संपूर्ण सेवा के सत्यापन के प्रमाणपत्र उसमें अभिलिखित है या नहीं।

(ग) यदि असत्यापित सेवा की कोई अवधियाँ हैं, तो कार्यालय प्रधान सेवा पुस्तिका में उपलब्ध प्रविष्टियों के आधार पर असत्यापित सेवा के भाग को सत्यापित रूप में स्वीकार करेगा। इस प्रयोजन के लिए कार्यालय प्रधान किसी अन्य सुसंगत सामग्री पर निर्भर कर सकता है, जिस तक उसकी सुगमता से पहुँच हो। सेवा के असत्यापित भाग को स्वीकार करने समय कार्यालय प्रधान यह सुनिश्चित करेगा कि सेवा निरंतर थी और पदच्युति, सेवा में हटाए जाने या त्यागपत्र देने या हड़ताल में भाग लेने के कारण मवरतन नहीं की गई थी।

(2) (क) कुटुंब पेंशन और मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान के लिए उपलब्धियों के अवधारण के प्रयोजन के लिए कार्यालय प्रधान रेल सेवक की मृत्यु की तारीख से एक वर्ष पूर्व की अधिकतम अवधि की उपलब्धियों की शुरुआत के सत्यापन तक सीमित रहेगा।

(ख) मृत्यु की तारीख को असाधारण छुट्टी पर होने वाले रेल सेवक की दशा में, एक वर्ष अधिकतम अवधि की उपलब्धियों की, जो उसने असाधारण छुट्टी के प्रारंभ होने की तारीख के पूर्व ली थी, शुरुआत सत्यापित की जाएगी।

(3) अर्हक सेवा और अर्हक उपलब्धियों के अवधारण की प्रक्रिया रेल सेवक को मृत्यु की तारीख के बारे में सूचना की प्राप्ति से एक मास के भीतर पूरी की जाएगी और कुटुंब पेंशन और मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान की रकम भी तदनुसार संगणित की जाएगी।

94. अपूर्ण सेवा अभिलेख की दशा में कुटुंब पेंशन और उपदान की रकम का अवधारण—इन नियमों के प्रारंभ की तारीख को विद्यमान अनुदणों के अनुसार ऐसा कोई भी मामला नहीं होता चाहिए, जिसमें सेवा पुस्तिका उचित रूप में न रखी गई हो। यदि किसी विशिष्ट मामले में इस विषय पर सरकार के आदेशों के बावजूद सेवा पुस्तिका उचित रूप में नहीं रखी गई है और कार्यालय प्रधान के लिए यह संभव नहीं है कि वह सेवा पुस्तिका में प्रविष्टियों के आधार पर सेवा के असत्यापित भाग को सत्यापित सेवा के रूप में स्वीकार करे तो कार्यालय प्रधान सेवा को संपूर्ण अवधि के सत्यापन के बारे में कार्यवाही नहीं करेगा। ऐसी दशा में सेवा का सत्यापन सेवा की निम्नलिखित अवधियों तक सीमित रहेगा—

(क) कुटुंब पेंशन, 1964 के प्रयोजन के लिए—

(1) यदि मृत रेल सेवक ने मृत्यु की तारीख को एक वर्ष से अधिक किन्तु सात वर्ष से कम सेवा की थी तो सेवा के अंतिम वर्ष को सेवा और उपलब्धियाँ कार्यालय प्रधान द्वारा सत्यापित और स्वीकार की जाएंगी और कुटुंब पेंशन, 1964 की रकम नियम 75 के उपनियम (2) और उपनियम (3) के अधीन अवधारित की जाएगी।

(2) यदि रेल सेवक ने अपनी मृत्यु की तारीख को सात वर्ष से अधिक सेवा की थी तो अंतिम सात वर्ष की सेवा और अंतिम वर्ष में की गई सेवा के दौरान ली गई उपलब्धियाँ कार्यालय प्रधान द्वारा सत्यापित की जाएंगी और स्वीकार की जाएंगी और कुटुंब पेंशन, 1964 की वह रकम और वह अवधि जिसके लिए यह संदेय है, नियम 75 के उपनियम (4) के उपबंधों के अनुसार अवधारित की जाएगी।

(3) यदि मृत्यु की तारीख को मृत रेल सेवक ने सात वर्ष से अधिक की सेवा की थी और कार्यालय प्रधान अंतिम सात वर्ष की सेवा को सत्यापित और स्वीकार करने में समर्थ नहीं है किन्तु अंतिम वर्ष के दौरान की गई सेवा सत्यापित और स्वीकार की जा सकती है तो कार्यालय प्रधान सात वर्ष की सेवा का सत्यापन होने तक कुटुंब पेंशन की रकम नियम 75 के उपनियम (2) और

उपनियम (3) के उपबंधों के अनुसार अवधारित करेगा।

(4) अंतिम सात वर्षों की सेवा आगामी दो मास के भीतर सत्यापित और स्वीकार की जाएगी और कुटुंब पेंशन की रकम वही हुई दर से, और वह अवधि, जिसके लिए वह संदेय है, नियम 15 के उपनियम (4) के अनुसार अवधारित की जाएगी।

(5) उपखंड (i), उपखंड (ii) और उपखंड (iii) के उपबंधों के अनुसार कुटुंब पेंशन की रकम का अनुधारण रेल सेवक की मृत्यु की तारीख के बारे में सूचना की प्राप्ति के एक मास के भीतर किया जाएगा।

(ख) मृत्यु तथा निवृत्ति के प्रयोजन के लिए—

(1) यदि मृत रेल सेवक ने अपनी मृत्यु की तारीख को पांच वर्ष से अधिक किन्तु चौबीस वर्ष से कम अर्हक सेवा की थी और अंतिम पांच वर्ष की सेवा की अवधि कार्यालय प्रधान द्वारा खंड (क) के अधीन सत्यापित और स्वीकार कर ली गई है तो मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान की रकम नियम 70 के उपनियम (i) के खंड (ख) में यथा उपदर्शित उपलब्धियों के बारह गुणा के बराबर होगी। जहां सत्यापित और स्वीकार की गई सेवा पांच वर्ष की अर्हक सेवा से कम है वहां मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान की रकम वह रकम होगी जो नियम 70 के उपनियम (i) में के नीचे की सारणी के खंड (ख) की, यथास्थिति, मद (i) या मद (ii) में उपदर्शित है।

(2) यदि मृत रेल सेवक ने चौबीस वर्ष से अधिक की सेवा की थी और संपूर्ण सेवा को सत्यापित और स्वीकार करना संभव नहीं है किन्तु अंतिम पांच वर्ष की सेवा उपखंड (1) के अधीन सत्यापित और स्वीकार हो गई है तो मृत रेल सेवक के कुटुंब को उपलब्धियों के बारह गुणे के बराबर मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान, अनंतिम आधार पर, अनुमान किया जाएगा। उपदान की अंतिम रकम कार्यालय प्रधान द्वारा सेवा की संपूर्ण अवधि के स्वीकार किए जाने और सत्यापन पर अवधारित की जाएगी जो कार्यालय प्रधान द्वारा उम तारीख से, जिसको अनंतिम उपदान के संदाय के लिए प्राधिकार पत्र जारी किया गया था, छह मास की अवधि के भीतर अवधारित की जाएगी। यदि कोई अतिशेष मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान की रकम के अंतिम अवधारण के परिणामस्वरूप संदेय हो जाता है तो वह हिताधिकारियों को प्राधिकृत किया जाएगा।

95. कागज-पत्रों का लेखा अधिकारी को भेजा जाना—

(1) कार्यालय प्रधान दावा या दावों की प्राप्ति पर प्ररूप 16 की मद 20, 21, 22, 23 और 24 को पूरा करेगा और मूल रूप में उक्त प्ररूप को प्ररूप 17 में व्याख्या पत्र तथा रेल सेवक की सम्यक् रूप से पूरा की गई अवतत सेवा पुस्तिका और ऐसे अन्य दस्तावेज के साथ जिन पर दावा की गई सेवा के सत्यापन के लिए निर्भर किया गया है, लेखा अधिकारी को भेजेगा। यह कार्य कार्यालय प्रधान द्वारा दावे की प्राप्ति के एक मास के पश्चात् किया जाएगा।

(2) कार्यालय प्रधान पूर्वोक्त प्ररूप 16 की एक प्रति अपने कार्यालय अभिलेख के लिए रखेगा।

(3) यदि यह इच्छा प्रकट की गई है कि संदाय लेखा इकाई के किसी अन्य सकल में लिया जाएगा, तो प्ररूप 16 दो प्रतियों में लेखा अधिकारी को भेजा जाएगा।

(4) कार्यालय प्रधान लेखा अधिकारी का ध्यान मृत रेल सेवक पर बकाया सरकारी या रेल शोध्यों के व्यौरों की ओर दिनांका, अर्थात् :—

(क) नियम 15 के निबंधनों के अनुसार अभिनिर्दिष्ट और निर्धारित सरकारी या रेल शोध्यों तथा संदाय प्राधिकृत किए जाने के पूर्व उपदान में से वसूली;

(ख) उपदान की वह रकम जो भागतः उन रेल शोध्यों के समायोजन के लिए अनिर्दिष्ट राशि के रूप में, जो अभी तक निर्धारित नहीं किए गए हैं और भागतः अनिर्दिष्ट राशि के रूप में उपदान के अंतिम अवधारण को ध्यान में रखते हुए समायोजन के लिए विधारित की गई है;

(5) (ख) यदि प्ररूप 16 पूरा कर लिया गया है और हिताधिकारी या हिताधिकारियों से दावा या दावे संबंधित प्ररूपों में प्राप्त नहीं हुई हैं तो कार्यालय प्रधान प्ररूप 16 और उपनियम (1) में निर्दिष्ट दस्तावेजों लेखा अधिकारी को उक्त प्ररूप के भाग 1 की मद 20, 21, 22, 23 और 24 को भरे बिना भेजेगा।

(ख) कार्यालय प्रधान द्वारा दावा या दावे प्राप्त करते ही उसे/उन्हे लेखा अधिकारी को इस अनुरोध के साथ तुरन्त भेज दिया जाएगा कि प्ररूप 16 के भाग 1 की मद 20, 21, 22, 23 और 24 लेखा अधिकारी द्वारा भर ली जाए।

96. अनंतिम कुटुंब पेंशन और उपदान की मंजूरी, निकाला जाना और संधितरण—(1) संबद्ध लेखा अधिकारी को नियम 95 में निर्दिष्ट दस्तावेज भेजने के पश्चात् कार्यालय प्रधान अधिकतम कुटुंब पेंशन से अधिक अनंतिम कुटुंब पेंशन और इस अध्याय के उपबंधों के अनुसार अवधारित शनप्रतिशत उपदान निकालेगा। इस प्रयोजन के लिए कार्यालय प्रधान निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाएगा, अर्थात् :—

(क) वह दावेदार या दावेदारों के पक्ष में एक मंजूरी पत्र जारी करेगा जिसकी एक प्रति संबद्ध लेखा अधिकारी को पृष्ठांकित की जाएगी जिसमें अनंतिम

कुटुंब पेंशन और यथा अवधारित शन प्रतिशत उपदान की रकम उपदर्शित की जाएगी;

(ख) वह नियम 95 के उपनियम (4) के अधीन उपदान में से वसूलीय रकम मंजूरी पत्र में पदर्शित करेगा;

(ग) मंजूरी पत्र जारी करने के पश्चात् वह—

(1) अनंतिम कुटुंब पेंशन की रकम; और

(2) उपदान की शन-प्रतिशत रकम,

उसमें से खण्ड (ख) में वर्णित शोध्यों की कटौती करने के पश्चात् उसी रीति से निकालेगा जिसमें स्थापन के वेतन और पहले उसके द्वारा निकाले जाते हैं।

(2) कार्यालय प्रधान उपनियम (1) के अधीन निकाली गई अनंतिम कुटुंब पेंशन जिसके अंतर्गत उसकी बकाया, यदि कोई हो, भी है और उपदान तुल्य संवितरित करेगा।

(3) अनंतिम कुटुंब पेंशन का संदाय रेल सेवक की मृत्यु की तारीख की अगली तारीख से छह मास की अवधि तक जारी रहेगा जब तक कि वह अवधि लेखा अधिकारी द्वारा नियम 97ख के उपनियम (1) के परन्तुक के अधीन बढ़ा नहीं दी जाती है।

(4) कार्यालय प्रधान—

(क) दावेदार या दावेदारों को उपदान संदत्त करते हैं; और

(ख) अनंतिम कुटुंब पेंशन, यथास्थिति, छह मास की अवधि या नियम 97 के उपनियम (1) के परन्तुक के अधीन बढ़ाई गई अवधि के लिए संदत्त करते हैं,

लेखा अधिकारी को सूचित करेगा।

(5) यदि दावेदार या दावेदारों में से कोई अनंतिम कुटुंब पेंशन या उपदान या दोनों का संदाय मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा चाहता है तो यह उसको उसके खर्चे पर भेजा जाएगा:

परन्तु किसी ऐसे दावेदार के मामले में, जिसको प्रतिनास दो सौ पचास रुपए से अनधिक अनंतिम कुटुंब पेंशन (जिसमें कुटुंब पेंशन पर राहत सम्मिलित है) मंजूर की गई है, पेंशन की रकम, दावेदार के अनुरोध पर उसे मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा सरकार के खर्चे पर भेजी जाएगी।

97. अंतिम पेंशन और उपदान के अतिशेष का लेखा अधिकारी द्वारा प्राधिकृत किया जाना—(1) लेखा अधिकारी नियम 95 के उपनियम (1) में निर्दिष्ट दस्तावेजों की प्राप्ति पर दस्तावेजों की प्राप्ति की तारीख से तीन मास की अवधि के भीतर अपेक्षित जात्र पड़ताल करेगा तथा प्ररूप 16 के अनुभाग 2 का खंड 1 पूरा करेगा और कुटुंब पेंशन और उपदान की रकम निर्धारित करेगा:

परन्तु यदि, लेखा अधिकारी किसी कारणवश, पूर्वोक्त अवधि के भीतर रकम निर्धारित करने में असमर्थ है, तो वह उस तथ्य की संभूचना कार्यालय प्रधान को इस बात के लिए देगा कि वह दावेदार को अनंतिम कुटुंब पेंशन ऐसी अवधि के लिए जो लेखा अधिकारी द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए, संवितरित करना जारी रखे।

(2) (क) यदि कुटुंब पेंशन लेखा इकाई के लेखा अधिकारी के सकल में संदेय है तो वह पेंशन संदाय आदेश तैयार करेगा।

(ख) कुटुंब पेंशन का संदाय उस तारीख के, जिसको अनंतिम कुटुंब पेंशन का संदाय समाप्त हो गया था, ठीक अगली तारीख में प्रभावी होगा।

(ग) उस अवधि की बाबत जिसके लिए कार्यालय प्रधान ने अनंतिम कुटुंब पेंशन निकाली थी और संवितरित की थी, कुटुंब पेंशन की बकाया भी, यदि कोई हो, रेल लेखा अधिकारी द्वारा प्राधिकृत की जाएगी।

(3) (क) लेखा अधिकारी, मृत रेल सेवक पर बकाया रकम का, यदि कोई हो, समायोजन करने के पश्चात् उपदान के अतिशेष की रकम अवधारित करेगा।

(ख) लेखा अधिकारी कार्यालय प्रधान को खण्ड (क) के अर्जित अवधारित उपदान के अतिशेष की रकम के बारे में इस टिप्पणी के साथ सूचित करेगा कि उपदान के अतिशेष की रकम कार्यालय प्रधान द्वारा निकाली जाए और उस व्यक्ति या उन व्यक्तियों को संवितरित की जाए जिसे या जिन्हें अनंतिम उपदान संदत्त किया है।

(ग) रेल बाम खाली न किए जाने के कारण उपखंड (क) के अधीन समायोजित उपदान की रकम कार्यालय कार्यालय प्रधान द्वारा अनुज्ञप्ति फीस की बकाया भुद्धे समायोजित की जाएगी और अतिशेष का, यदि कोई हो, उस व्यक्ति या व्यक्तियों की को प्रिदाय किया जाएगा जिनसे या जिन्हें उपदान संदत्त किया गया है।

(4) पेंशन संदाय आदेश जारी किए जाने के तथ्य के बारे में लेखा अधिकारी द्वारा कार्यालय प्रधान को तत्परता से किया जाएगा और वे दस्तावेज भी जिनकी ओर आने आवश्यकता नहीं है, उसको वापस कर दी जाएगी।

(5) यदि अनंतिम कुटुंब पेंशन, जिसके अंतर्गत अनंतिम कुटुंब पेंशन को बकाया भी है, लेखा इकाई के किसी अन्य सकल में संदेय है, तो लेखा अधिकारी पेंशन संदाय आदेश सम्मेलन रूप से पूरा किए गए प्ररूप 16 की एक प्रति के साथ उस इकाई के लेखा अधिकारी को संदाय की व्यवस्था करने के लिए भेजेगा:

परन्तु कार्यालय प्रधान द्वारा निकाली गई और संवितरित की गई अनंतिम कुटुंब पेंशन का समायोजन उस लेखा अधिकारी द्वारा किया जाएगा जिसके लेखा इकाई के सकल में अनंतिम कुटुंब पेंशन का संदाय किया गया था।

(6) यदि यह पाया जाता है कि कार्यालय प्रधान द्वारा सविनयित अनन्तिम कुटुम्ब पेंशन की रकम लेखा अधिकारी द्वारा अन्तिम रूप से निर्धारित कुम्ब पेंशन की रकम से अधिक है तो लेखा अधिकारी इस बात के लिए स्वतंत्र होगा कि वह अधिक रकम को भविष्य में संदेह कुटुम्ब पेंशन का कम संदाय करके किस्तों में समायोजित कर ले।

(7)(क) यदि यह पाया जाता है कि कार्यालय प्रधान द्वारा सविनयित उपदान की रकम लेखा अधिकारी द्वारा अन्तिम रूप से निर्धारित रकम से अधिक है तो हितधिकारी से आधिक्य में प्रतिदाय की अपेक्षा नहीं की जाएगी।

(ख) कार्यालय प्रधान यह सुनिश्चित करेगा कि वास्तव में अनुज्ञेय रकम से अधिक उपदान की रकम सविनयित के अवसर कम से कम आएँ और वह पदाधिकारी या वे पदाधिकारी, जो अधिक संदाय के लिए जिम्मेदार है या है, प्रतिमंदाय के लिए देनदार होगा या होंगे।

98. सरकारी या रेल शोध्यों का समायोजन—(1) सरकारी वास से सम्बन्धित शोध्य—

(i) यदि मृत्यु की तारीख का रेल सेवक सरकारी वास का आर्बिटरी था तो कार्यालय प्रधान ऐसे सरकारी सेवक की मृत्यु की बाबत सूचना की प्राप्ति पर ऐसी सूचना की प्राप्ति के सात दिन के भीतर सम्पदा निदेशालय का “बेबाकी प्रमाणपत्र” जारी किए जाने के लिए लिखेगा ताकि कुटुम्ब पेंशन और मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान प्राधिकृत करने में विलंब न हो। कार्यालय प्रधान बेबाकी प्रमाणपत्र, जारी करने के लिए सम्पदा निदेशालय को लिखते समय दो प्रतियों में निम्नलिखित जानकारी भी देगा—

एक प्रति भाटक खण्ड, और दूसरी प्रति आर्बटन खण्ड को भेजी जाएगी :—

(क) मृत रेल सेवक का नाम और पदनाम ;

(ख) वास की विशिष्टियाँ (क्वार्टर सं., टाइप और परिक्षेत्र) ;

(ग) रेल सेवक की मृत्यु की तारीख ;

(घ) क्या रेल सेवक अपनी मृत्यु के समय छुट्टी पर था और यदि हाँ तो छुट्टी की अवधि और प्रकृति,

(ङ) क्या रेल सेवक भाटक मुक्त वास का उपभोग कर रहा था ;

(च) वह अवधि जिस तक मृत रेल सेवक के वेतन और भत्तों में से अनुज्ञप्ति फीस वसूल की गई थी और वसूली की मासिक दर और वेतन बिल की विशिष्टियाँ जिसके अधीन वह अन्तिम बार वसूली की गई थी ;

(छ) यदि मृत्यु की तारीख तक अनुज्ञप्ति फीस वसूल नहीं की गई थी और कुटुम्ब रेल सेवक

मृत्यु की तारीख से चार मास की अनुज्ञेय अवधि के लिए सरकार वास रखना चाहता है तो निम्नलिखित ब्यौर दिए जायेंगे :

(1) वह अवधि जिसके लिए अनुज्ञप्ति फीस अभी वसूल की जानी है ;

(2) मानक भाटक बिल के आधार पर (i) में दी गई अवधि के बारे में अनुज्ञप्ति फीस की रकम का अवधारण

(3) मृत रेल सेवक के कुटुम्ब द्वारा रेल सेवक की मृत्यु की तारीख से आगे चार मास की रिशायनी अवधि के लिए सरकारी वास रखने के लिए अनुज्ञप्ति फीस की रकम मानक भाटक बिल के आधार पर अवधारित की जाएगी ;

(4) (2) और (3) में मंजूर की गई अनुज्ञप्ति फीस की रकम, जिसके बारे में मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान में से वसूल किए जाने के लिए प्रस्थापना की गई है ;

(5) आर्बिटरी के विरुद्ध वकाया अनुज्ञप्ति फीस की वसूली से सम्बन्ध रखने वाले सम्पदा निदेशालय के किसी पूर्व निदेश के ब्यौरे और उन पर की गई कार्रवाई।

(ii) कार्यालय प्रधान मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान में से सम्पदा निदेशालय द्वारा खण्ड (i) के अधीन सूचित अनुज्ञप्ति फीस की रकम वसूल करेगा।

(iii) चार मास की अनुज्ञेय अवधि के आगे सरकारी वास के उपभोग के लिए अनुज्ञप्ति फीस की वसूली सम्पदा निदेशालय की जिम्मेदारी होगी।

(iv) सम्पदा निदेशालय यह अवधारित करने की दृष्टि से कि क्या खण्ड (i) में निर्दिष्ट अनुज्ञप्ति फीस में भिन्न कोई अनुज्ञप्ति फीस मृत रेल सेवक पर वकाया थी, अपने अभिलेखों की संवीक्षा करेगा। यदि कोई वसूली वकाया पाई जाती है तो वह रकम और वह अवधि या वे अवधियाँ जिससे या जिनसे ऐसी वसूली या वसूलियाँ संबंधित हैं, रेल सेवक की मृत्यु की बाबत खण्ड (i) के अधीन सूचना की प्राप्ति से तीन मास की अवधि के भीतर कार्यालय प्रधान को संसूचित की जाएगी।

(v) खण्ड (iv) के अधीन जाकारी प्राप्त होने तक कार्यालय प्रधान मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान का दस प्रतिशत या एक हजार रुपए, इनमें से जो भी कम हो विधारित करेगा।

(vi) यदि अनुज्ञप्ति फीस की वसूली के बारे में खण्ड (iv) के अधीन निर्दिष्ट अवधि के भीतर कार्यालय प्रधान को कोई सूचना प्राप्त नहीं होती है तो यह उपधारणा की

जाएगी कि मृत रेल सेवक से कुछ भी वसूली नहीं है और विधारित उपदान की रकम उस व्यक्ति या उन व्यक्तियों को, जिसे या जिन्हें मृत्यु उपदान की रकम का संदाय किया गया था, मदत कर दी जाएगी।

(vii) यदि कार्यालय प्रधान ने सपदा निदेशालय में मृत रेल सेवक पर बकाया अनुज्ञप्ति फीस की बाबत खण्ड (iv) के अधीन सूचना प्राप्त की है तो कार्यालय प्रधान निम्नारण पूर्ण में यह सत्यापित करेगा कि अनुज्ञप्ति फीस की बकाया रकम मृत रेल सेवक के वेतन और भत्तों में से वसूल की गई थी या नहीं। यदि, सत्यापन के परिणामस्वरूप यह पाया जाए कि सपदा निदेशालय द्वारा बकाया दिखाई गई अनुज्ञप्ति फीस की रकम पहले ही वसूल की जा चुकी है तो कार्यालय प्रधान सपदा निदेशालय का ध्यान उन वेतन बिलों की ओर दिलाएगा जिनके अधीन अनुज्ञप्ति फीस की अपेक्षित वसूली की गई थी और उपनियम (2) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, खण्ड (v) के अधीन विधारित उपदान की रकम उस व्यक्ति या उन व्यक्तियों को, जिसे या जिन्हें मृत्यु उपदान मदन किया गया था, सदाय करने की कार्यवाई करेगा।

(viii) यदि अनुज्ञप्ति फीस की बकाया रकम मृत रेल सेवक के वेतन और भत्तों में वसूल नहीं की गई थी या बकाया रकम खण्ड (v) के अधीन विधारित उपदान की रकम, में से समायोजित की जाएगी और प्रतिशेष, यदि कोई हो, उस व्यक्ति या उन व्यक्तियों को, जिसे या जिन्हें मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान का सदाय किया था, प्रतिसदत्त किया जाएगा।

(2) कार्यालय प्रधान रेल सेवक की मृत्यु की सूचना की प्राप्ति से एक मास के भीतर यह सुनिश्चित करने के लिए कार्यवाई करेगा कि क्या नियम 15 और नियम 16 के उपनियम (6) में निर्दिष्ट कोई गोध्य, मृत रेल सेवक में वसूली है। इस प्रकार अभिनिश्चित शीघ्र मृत रेल सेवक के कुटुंब को सदेय मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान की रकम में से वसूल किए जाएंगे।

99 प्रतिनियुक्ति पर रहते हुए रेल सेवक की मृत्यु की दशा में कुटुंब पेंशन और मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान का सदाय—

(1) ऐसे रेल सेवक की दशा में, जिसकी मृत्यु उस समय होती है जब वह केंद्रीय सरकार के किसी विभाग में प्रतिनियुक्त है, पेंशन और मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान प्राधिकृत करने की कार्यवाई सेवा उधार लेने वाले विभाग में कार्यालय प्रधान द्वारा इस अध्याय के उपबंधों के अनुसार की जाएगी।

(2) ऐसे रेल सेवक की दशा में, जिसकी मृत्यु उस समय होती है जब वह किसी राज्य सरकार में या विदेश में प्रतिनियुक्त है, कुटुंब पेंशन और मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान का संदाय प्राधिकृत करने की कार्यवाई उस संबंध कार्यालय प्रधान द्वारा, जहां से रेल सेवक राज्य सरकार या विदेश जाता

है, सेवा के लिए प्रतिनियुक्ति पर इस अध्याय के उपबंधों के अनुसार की जाएगी।

(3) किसी मंत्रालय या विभाग के ऐसे केंद्रीय सरकार के कर्मचारी की दशा में, जिसकी रेल में प्रतिनियुक्ति पर रहते हुए मृत्यु हो जाती है, पेंशन और मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान का सदाय प्राधिकृत करने की कार्यवाई उस मूल मंत्रालय या विभाग द्वारा जहां से वह रेल में प्रतिनियुक्ति पर गया था, इस अध्याय के उपबंधों के अनुसार की जाएगी।

अध्याय 10

मृत पेंशन भोगियों की बाबत कुटुंब पेंशन और अवशिष्ट उपदान की मंजूरी

100 पेंशन भोगी की मृत्यु पर कुटुंब पेंशन और अवशिष्ट उपदान की मंजूरी—

(1) जहां कार्यालय प्रधान ने किसी ऐसी सेवानिवृत्त रेल सेवक की मृत्यु की सूचना प्राप्त की है जिसे पेंशन मिल रही थी, वहां वह यह अभिनिश्चित करेगा कि क्या मृत पेंशन-भोगी की बाबत कोई कुटुंब पेंशन या अवशिष्ट उपदान या दोनों सदाय है :

परन्तु जब कार्यालय प्रधान ऐसा करना आवश्यक समझे तब वह नया अधिकारी में परामर्श कर सकेगा।

(2) (क) (i) यदि मृत पेंशन भोगी को कोई उत्तर-जीवी विधवा या विधुर है, जो नियम 75 के अधीन कुटुंब पेंशन, 1964 के उपदान के लिए पात्र है तो पेंशन सदाय प्रादेश में उपदर्शित कुटुंब पेंशन, 1964 की रकम पेंशन-भोगी की मृत्यु की तारीख के ठीक अगले दिन से, यथास्थिति, विधवा या विधुर को सदाय हो जाएगी।

(ii) विधवा या विधुर में श्रावदन प्राप्त होने पर, ऐसा पेंशन सवितरक अधिकारी जिससे मृत पेंशन-भोगी अपनी पेंशन पा रहा था या पा रही थी, यथास्थिति, विधवा या विधुर को कुटुंब पेंशन, 1964 का सदाय प्राधिकृत करेगा।

(ख) (1) जहां मृत पेंशन-भोगी का कोई उत्तरजीवी सतान है या है, वहां ऐसी सतान या सतानों का संरक्षक कुटुंब पेंशन 1964 के सदाय के लिए कार्यालय प्रधान को प्रत्येक 1 में दावा प्रस्तुत कर सकेगा :

परन्तु संरक्षक से पुत्र या ऐसी अविवाहित पुत्री की ओर से, उक्त प्रत्येक में दावा प्रस्तुत करने की श्रेणी नहीं की जाएगी यदि उसने अठारह वर्ष की आयु प्राप्त कर ली है और ऐसा पुत्र या ऐसी पुत्री उक्त प्रत्येक में स्वयं दावा प्रस्तुत कर सकता या सकती हो।

(ii) संरक्षक से दावा प्राप्त होने पर, कार्यालय प्रधान प्रत्येक 18 में कुटुंब पेंशन, 1964 मंजूर करेगा।

(ग) (1) जहां कोई विधवा या विधुर, जिसे कुटुंब पेंशन, 1964 मिल रही है, पुनः विवाह कर लेती है या जाता

है और पुनः विवाह के समय उसके पूर्व पति या पत्नी से कोई ऐसी संतान है या संतानें हैं जो कुटुंब पेंशन, 1964 का पात्र है या के पात्र है, वहाँ ऐसा पुनः विवाहित व्यक्ति ऐसी संतान या संतानों की ओर से कुटुंब पेंशन, 1964 लेने का पात्र होगा यदि वह व्यक्ति ऐसी संतान या संतानों का संरक्षक बना रहता है।

(ii) उपखंड (i) के प्रयोजन के लिए, पुनः विवाहित व्यक्ति सादे कागज पर कार्यालय प्रधान को आवेदन करेगा जिसमें वह निम्नलिखित विनिर्दिष्टियां देगा, अर्थात्:—

(1) यह घोषणा कि आवेदक ऐसी संतान या संतानों का संरक्षक बना हुआ है ;

(2) पुनः विवाह की तारीख ;

(3) पहली पत्नी या पहले पति से हुई संतान या संतानों का नाम और जन्म की तारीख ;

(4) वह पेंशन सवितरक प्राधिकारी, जिससे ऐसी संतान या संतानों की ओर से कुटुंब पेंशन, 1964 का संदाय वांछित है ;

(5) आवेदक का पूरा डाक पता।

(iii) यदि पुनः विवाहित व्यक्ति किसी कारणवश, ऐसी संतान या संतानों का संरक्षक नहीं रह जाता, तो कुटुंब पेंशन, 1964 उस व्यक्ति को संदेय हो जाएगी जो तत्समय प्रवृत्त विधि के अधीन ऐसी संतान या संतानों के संरक्षक के रूप में कार्य करने का हकदार है और ऐसा व्यक्ति कुटुंब पेंशन, 1964 के संदाय के लिए कार्यालय प्रधान को प्ररूप 10 में दावा प्रस्तुत कर सकेगा :

परन्तु संरक्षक से ऐसे पुत्र या ऐसी अविवाहित पुत्री की ओर से उक्त प्ररूप में दावा प्रस्तुत करने की अपेक्षा नहीं की जाएगी यदि उसने अठारह वर्ष की आयु प्राप्त कर ली है और ऐसा पुत्र या ऐसी पुत्री उक्त प्ररूप में स्वयं दावा प्रस्तुत कर सकता या सकती हो;

(iv) उपखंड (iii) में निर्दिष्ट दावे की प्राप्ति पर, कार्यालय प्रधान प्ररूप 19 में कुटुंब पेंशन, 1964 मंजूर करेगा।

(घ) (1) जहाँ ऐसी किसी विधवा या विधुर की, जिसे कुटुंब पेंशन 1964 मिल रही है, मृत्यु हो जाती और वह अपने पीछे संतान या संतानें छोड़ जाती है या जाता है जो कुटुंब पेंशन 1964 का पात्र है या के पात्र है वहाँ संरक्षक कुटुंब पेंशन, 1964 के संदाय के लिए कार्यालय प्रधान को प्ररूप 10 में दावा प्रस्तुत कर सकेगा :

परन्तु संरक्षक से ऐसे पुत्र या ऐसी अविवाहित पुत्री की ओर से उक्त प्ररूप में दावा प्रस्तुत करने की अपेक्षा नहीं की जाएगी यदि उसने अठारह वर्ष की आयु प्राप्त कर ली है और ऐसा पुत्र

या ऐसी पुत्री उक्त प्ररूप में स्वयं दावा प्रस्तुत कर सकता या सकती हो।

(ii) उपखंड (1) के अधीन दावे की प्राप्ति पर, कार्यालय प्रधान प्ररूप 19 में कुटुंब पेंशन, 1964 मंजूर करेगा।

(3) जहाँ किसी सेवानिवृत्त रेल सेवक की मृत्यु पर कोई अवशिष्ट उपदान नियम 70 के उपनियम (2) के अधीन मृतक के कुटुंब को संदेय हो जाता है वहाँ कार्यालय प्रधान, अवशिष्ट उपदान प्राप्त करने के लिए पात्र व्यक्ति या व्यक्तियों से प्ररूप 20 में दावा या दावे प्राप्त करने पर उसके संदाय की मंजूरी देगा।

101. लेखा अधिकारी द्वारा संदाय को प्राधिकृत किया जाना:—

कुटुंब पेंशन या अवशिष्ट उपदान या दोनों के संदाय के बारे में नियम 100 के अधीन मंजूरी पत्र की प्राप्ति पर लेखा अधिकारी उसके संदाय को प्राधिकृत करेगा।

अध्याय 11

पेंशन का संदाय

102. वह तारीख जिससे पेंशन संदेय होगी है:—

(1) ऐसे रेल सेवक के संदाय जिसको नियम 37 के उपबंध लागू होते हैं और नियम 9 और नियम 10 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, कुटुंब पेंशन से भिन्न पेंशन उस तारीख से, जिसको रेल सेवक स्थापन में नहीं रह जाता, संदेय हो जाएगी।

(2) पेंशन, जिसके अंतर्गत कुटुंब पेंशन भी है, उस दिन के लिए संदेय होगी जिस दिन उसके प्रापक की मृत्यु होती है।

103. वह करेंसी जिसमें पेंशन संदेय है:—इन नियमों के अधीन अनुश्रेय सभी पेंशन, जिनके अंतर्गत उपदान भी है, केवल भारत में, रुपयों में संदेय होगी।

104. उपदान और पेंशन के संदाय की रीति —

(1) इन नियमों में अन्यथा उपबंधित के विना, उपदान एक मुश्त संदाय किया जाएगा।

(2) मासिक दरों पर विनिश्चित की गई पेंशन ठीक अगले मास के पहले दिन या उसके पश्चात् मासिक रूप से संदेय होगी।

105. खजाना नियमों का लागू होना—

इन नियमों में अन्यथा उपबंधित विना, केन्द्रीय सरकार के खजाना नियम:—

(1) पेंशन

- (2) ऐसी पेंशन जो एक वर्ष से अधिक तक निकाली नहीं गई है; और
- (3) मृत पेंशन भोगी की वास्तव पेंशन, के संदाय की प्रक्रिया के बारे में लागू होंगे

अध्याय-12

प्रकीर्ण

106. निर्वचन—

जहां इन नियमों के निर्वचन के बारे में कोई शंका उत्पन्न हो वहां उसे विनिश्चय के लिए सरकार के रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) को निदिष्ट किया जाएगा रेल मंत्रालय रेल बोर्ड) भारत सरकार के पेंशन और पेंशन भोगी कल्याण विभाग से परामर्श करने के पश्चात् विनिश्चय करेगा

107. शिथिल करने की शक्ति—

जहां पेंशन मंजूरी प्राधिकारी का यह समाधान हो जाता है कि इन नियमों में से किसी नियम के प्रवर्तन से किसी विशिष्ट मामले में कोई असम्यक् कठिनाई होती है वहां, वह प्राधिकारी ऐसे कारणों से जो लेखबद्ध किए जाएंगे, उस नियम की अपेक्षाओं को उम सीमा तक, और ऐसे अपवादों तथा शर्तों के अधीन रहते हुए जिन्हें वह न्याय संगत और साम्यापूर्ण रीति से उम मामले के संबंध में कार्यवाही करने के लिए आवश्यक समझे अभिमुक्ति प्रदान करने या शिथिल करने के लिए रेल मंत्रालय (रेल बोर्ड) के समक्ष प्रस्ताव कर मकेगा. रेल मंत्रालय (रेल बोर्ड) ऐसे प्रत्येक मामले की जांच करेगा और प्रत्येक मामले के गुण और अन्य कानूनी उपबंधों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तावित अभिमुक्ति या शिथिलीकरण पर, जो आवश्यक समझे, राष्ट्रपति की मंजूरी को संसूचित करने की व्यवस्था करेगा।

परंतु ऐसा कोई आदेश भारत सरकार के कार्मिक लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय के पेंशन और पेंशन भोगी कल्याण विभाग की सहमति के बिना नहीं किया जाएगा।

108. निरसन और व्यावृत्ति

(1) इन नियमों के प्रारम्भ पर, ऐसे प्रारम्भ से ठीक पहले प्रवृत्त प्रत्येक नियम, (जिसके अंतर्गत वे भी हैं जो भारतीय रेल स्थापन संहिता, पांचवें पुनर्मुद्रण में अंतर्निहित हैं) विनियम या आदेश, जिसके अंतर्गत परिपत्र भी हैं (जिन्हें इस नियम में

इसके पश्चात् पुराना नियम कहा गया है) जहां तक वह इन नियमों में अंतर्निहित मामलों में से किसी का उपबंध करता हो, प्रवृत्त नहीं रह जाएगा।

(2) प्रवर्तन की ऐसी समाप्ति के होते हुए भी—

(क) (1) मृत्यु तथा सेवा निवृत्ति उपदान अथवा कुटुंब पेंशन, 1950 के संदाय के लिए प्रत्येक नामनिर्देशन ;

(2) कुटुंब पेंशन, 1964 के प्रयोजन के लिए किसी रेल सेवक के कुटुंब के व्योनों के बारे में प्रत्येक प्ररूप ;

(ख) मृत्यु तथा सेवानिवृत्ति उपदान, अथवा कुटुंब पेंशन, 1950 के संदाय के लिए कोई भी नाम निर्देशन कुटुंब पेंशन, 1964 के प्रयोजन के लिए किसी रेल सेवक के कुटुंब के व्योनों के संबंध में कोई प्ररूप, जिसका पुराने नियम के अधीन रेल सेवक द्वारा किया जाना या दिया जाना अपेक्षित हो, किंतु जो इन नियमों के प्रारम्भ से पूर्व न किया गया हो या न दिया गया हो, इन नियमों के उपबंधों के अनुसार ऐसे प्रारम्भ के पश्चात् किया या दिया जाएगा,

(ग) ऐसा कोई भी मामला, जिसका संबंध ऐसे रेल सेवक की, जो इन नियमों के प्रारम्भ से पूर्व सेवा निवृत्त हो गया था, पणत प्राधिकृत किए जाने से हो जो मामला ऐसे प्रारम्भ पर संबंधित हो, पुराने नियमों के उपबंधों के अनुसार निपटाया जाएगा मानो ये नियम बनाए ही न गए हों ;

(घ) ऐसा कोई मामला, जिसका संबंध किनो मृत रेल सेवक अथवा मृत पेंशन भोगी के कुटुंब के तथा सेवानिवृत्ति उपदान मृत्यु, और कुटुंब पेंशन के प्राधिकृत किए जाने से हो और जो इन नियमों के प्रारम्भ से पूर्व संबंधित हों, पुराने नियम के उपबंधों के अनुसार निपटाया जाएगा मानो ये नियम बनाए ही न गए हों ;

(ङ) खंड (ग) और खंड (घ) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, पुराने नियम के अधीन की गई कोई बात या कार्यवाही इन नियमों के तत्स्थानी उपबंधों के अधीन की गई समझी जाएगी।

(प्ररूप)

(नियम 11 देखिए)

रेल अधिकारियों द्वारा सेवानिवृत्ति के पश्चात् दो वर्ष की अवधि के भीतर वाणिज्यिक नियोजन स्वीकार करने के संबंध में प्रस्ताव के लिए आवेदन का प्ररूप ।

1. अधिकारी का नाम (स्पष्ट अक्षरों में)

2. सेवानिवृत्ति की तारीख

3. मंत्रालय/विभाग/कार्यालय की विविधियाँ, जिसमें अधिकारी ने सेवानिवृत्ति से पहले के अंतिम 5 वर्ष के दौरान सेवा की है ।

(अवधि लिखिए)

मंत्रालय/विभाग/कार्यालय का नाम	अवधि	
	तारीख से	तारीख तक
(1)	(2)	(3)

4. सेवानिवृत्ति के समय धारित पद और वह अवधि जिस तक वह धारण किया गया ।

5. पद का वेतनमान और सेवानिवृत्ति के समय अधिकारी द्वारा लिया गया वेतन ।

6. वैयक्तिक फायदे ।

प्रस्तावित/ (भर्जर पेंशन)

उपदानाभ यदि कोई हो

(संश्लेषण यदि कोई हो, उल्लिखित किया जाए)

7. ऐतिहासिक नियोजन के संबंध में व्योरे जिसके स्वीकार किए जाने का प्रस्ताव है:-

(क) फर्म/कम्पनी/सहकारी समिति, आदि का नाम ।

(ख) फर्म द्वारा विनिर्मित किए जा रहे उत्पाद/ फर्म द्वारा किए जाने वाले कारोबार का प्रकार, आदि ।

(ग) क्या अधिकारी ने अपने सेवाकाल के दौरान फर्म के साथ व्यवहार, आदि किया था ।

(घ) फर्म के साथ शाश्वती व्यवहारों की अवधि और प्रकृति आदि ।

(ङ) प्रस्तावित कार्य/पद का नाम ।

(च) क्या पद को विज्ञापित किया गया था, यदि नहीं तो प्रस्ताव किस प्रकार किया गया था. (विज्ञापन से संबंधित समाचार पत्र की कतरन और नियुक्ति प्रस्ताव की, यदि कोई हो, एक प्रति संलग्न की जाए)

(छ) कार्य/पद के कर्तव्यों का वर्णन ।

(ज) पद/कार्य के लिए प्रस्तावित पारिश्रमिक ।

(झ) यदि व्यवसाय आरंभ करने का प्रस्ताव है तो निम्नलिखित बताएं :-

(क) व्यवसाय के क्षेत्र में वृत्तिक अर्हता ।

(ख) प्रस्तावित व्यवसाय की प्रकृति ।

8. ऐसी कोई जानकारी जो आवेदक अपने अनुरोध के समर्पण में देना चाहता है ।

9. घोषणा

में धारणा करता हूँ कि:—

- (1) मैं नियंत्रण को स्वीकार करने का प्रस्ताव कर रहा हूँ उसमें मेरे और सरकार के बीच संघर्ष नहीं होगा।
- (2) मेरे वाणिज्यिक कर्तव्य ऐसे नहीं होंगे कि सरकार के अधीन मेरी पूर्वतन शासकीय स्थिति या ज्ञान या अनुभव मेरे प्रस्तावित नियोजक द्वारा किसी अनुचित लाभ के लिए उपयोग किया जा सके।
- (3) मेरे वाणिज्यिक कर्तव्यों में सरकारी विभागों से संपर्क या संबंध अंतर्बलित नहीं है।

स्थान

आवेदक के हस्ताक्षर

तारीख

पता

(प्रकरण 2)

(नियम 15 देखिए)

प्रतिभू बंध पत्र

भारत के राष्ट्रपति (जिन्हें इसमें आगे "सरकार" कहा गया है और इसके अंतर्गत उनके उत्तरवर्ती और समनुदेशिनी भी हैं) श्री/श्रीमती (जिसे इसमें इसके आगे "बाध्यताधारी" कहा गया है का संबंधित इंजीनियरी/विद्युत विभाग से "बेबाकी प्रमाणपत्र" प्रस्तुत किए बिना अंतिम हिमाब तय करने के लिए सहमत हो जाने के प्रति कलस्वरूप से बाध्यताधारी के लिए स्वयं का "प्रतिभू" (जिसे अंतर्गत मेरे वारिस निष्पावक प्रशासक, विधिक प्रतिनिधि और समनुदेशिनी भी हैं) घोषित करता हूँ और सरकार द्वारा इस समय आबंटित निवास की बाबत भारक विद्युत और अन्य शोध्यों के और ऐसे किसी निवास के लिए भी, जो उक्त बाध्यकारी को सरकार द्वारा समय-समय पर आबंटित किया जाए या आबंटित किया गया हो, उपर्युक्त निवास का खाली कब्जा सरकार को सौंपने तक नुकसान, सबहानि और मद्दे सम्पत्ति संदाय के लिए प्रत्याभूति देता हूँ।

मैं यह भी प्रत्याभूति देना हूँ कि ऐसी सब रकम का, जो प्रति संदाय, भत्तों छुट्टी वेतन प्रवहण गृह निर्माण के लिए अग्रिम के रूप में या किसी अन्य प्रयोजन के लिए सरकार को उनके द्वारा शोध्य हो, किन्हीं ऐसी रकम का तो उक्त बाध्यताधारी की ओर से सरकार को दी गई किसी प्रत्याभूति के अधीन या उसकी बाबत सरकार द्वारा संदत्त की जाए या संदेह हो, या सरकार के किसी भी प्रकार के अन्य शोध्य का संदाय करेगा, मैं यह घोषणा करता हूँ कि यदि उक्त बाध्यताधारी की मृत्यु हो जाती है या वह दिवालिया हो जाता है तो पूर्वोक्त समस्त रकम जो उस समय असंदात रह जाएगी और व्याज यदि कोई हो उस पर लागू सरकारी नियमों के अनुसार सरकार को तुरन्त शोध्य और मंदाय हो जाएगी तथा इस विलेख के आधार पर मेरे से वसूल की जा सकेंगी उक्त लिखित बंध पत्र की शर्त यह है कि यदि उक्त बाध्यकारी सरकार को देय प्रत्येक रकम के सभी संदाय सरकार के समाधानप्रव रूप में करता है या करता है तो यह बंध पत्र शून्य हो जाएगा अतः यह बंध पत्र पूर्णतः प्रवृत्त प्रभावी और बल शील रहेगा।

मैंने जो बाध्यता स्वीकार की है वह सरकार द्वारा समय बढाए जाने या उक्त बाध्यताधारी के प्रति अन्य उदारता बरते जाने के कारण न तो उन्मोचित होगी और न किसी प्रकार प्रभावित होगी तथा सरकार को उस बात की पूर्ण रूप से स्वतंत्रता होगी कि वह प्रत्याभूति पर बिना कोई प्रभाव डाले उक्त बाध्यताधारी के विरुद्ध अपने द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली शक्तियों में से किसी समय के लिए और समय समय, पर मुत्तबी करें और मैं या नीचे विषयों के संदर्भ में, सरकार की स्वतंत्रता के किसी प्रयोग से, या सरकार को और से किसी अन्य प्रविरति कार्य के या सरकार द्वारा उक्त बाध्यताधारी को अनुदत्त किसी अनुग्रह के कारण या किसी भी अन्य मामले या बात से, जो यदि यह बंध न होता तो प्रतिभूओं से संबंधित विधि के अधीन मेरे ऐसे दायित्व से मुझे इस प्रकार निर्मुक्त करने का प्रभाव रखे उस प्रत्याभूति के अधीन के दायित्व से निर्मुक्त नहीं होंगा और इस विलेख के प्रवर्तन के प्रयोजन के लिए इसके अधीन मेरा दायित्व केवल प्रतिभू के रूप में नहीं होगा बल्कि मूल ऋणी के रूप में होगा।

यह बंधपत्र तब तक प्रवृत्त रहेगा जब तक :—

- (1) उक्त बाध्यताधारी के पक्ष में संबंधित इंजीनियरी/विद्युत विभाग द्वारा "बेबाकी प्रमाणपत्र" जारी नहीं कर दिया जाता ;
- (2) कार्यालय के प्रधान ने, जिसमें उक्त बाध्यताधारी अंतिम बार नियोजित था यह प्रमाणित न किया हो कि उक्त बाध्यताधारी से अब कुछ भी सरकार को शोध्य नहीं है ; और

- (3) उस दशा में जिसमें सरकार ने उक्त बाध्यताधारी की ओर से जल और विद्युत की बाबत शीघ्र रकमों के लिए प्रत्याभूति दी थी, उक्त बाध्यताधारी के पक्ष में संबंध इंजीनियरी/विद्युत विभाग द्वारा "बेबाकी प्रमाण पत्र" जारी नहीं किया गया हो. इस लिखित पर स्टाम्प शुल्क सरकार द्वारा दिया जाएगा ।

1. साक्षी के हस्ताक्षर, पता और व्यवसाय

प्रतिभू के हस्ताक्षर

2. साक्षी के हस्ताक्षर, पता और व्यवसाय

की उपस्थिति में आज के दिन को में उक्त प्रतिभू द्वारा हस्ताक्षरित और परिदत्त ।

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती स्थायी सरकारी सेवक है ।

उपयुक्त बंध पत्र प्रतिगृहीत किया गया है ।

उस कार्यालय के, जिसमें प्रतिभू नियोजित है,
विभागाध्यक्ष के हस्ताक्षर

(हस्ताक्षर और पदनाम)

भारत के राष्ट्रपति के लिए और उनकी ओर से

प्ररूप 3

(नियम 35 देखिए)

सैनिक सेवा से रैंक का सत्यापन प्रमाणपत्र
..... नाम यूनिट से तक
..... में पुनः अभ्यावेशित

रेल पेंशन मद्दे गणना के प्रयोजन के लिए युद्ध/सैनिक सेवा के सत्यापन के लिए अपेक्षित सूचना नीचे दी गई है:—

- जन्म की तारीख या सेना/नौ-सेना/वायु सेना में अभ्यावेदन के समय निकटतम आयु, यदि जन्म की तारीख का ज्ञान न हो ।
- सेना/नौ-सेना/वायु सेना में अभ्यावेदन की तारीख
- सेवोन्मुक्ति की तारीख
- प्रारंभित सेवा की अवधि, यदि कोई हो
- क्या सैनिक सेवा सेना नियमों के अधीन पेंशन वाली थी, किन्तु उसकी बाबत पेंशन के योग्य होने पर या उसके पहले समाप्त हो गई ।
- क्या वह सेवा उपदान का हकदार था और यदि हां तो कितना
- क्या उपदान लिया गया था और वह रक्षा सेवा प्राक्कलन को प्रतिदेय है ।
(यदि सेवा रेल पेंशन के लिए गणना करने के लिए अनुज्ञात है)
- क्या व्यक्ति निःशक्तता पेंशन प्राप्त कर रहा है :
(क) क्या वह अपनी ग्रहक सेवा के लिए साधारण सेवा पेंशन के योग्य हो गया था ।
(ख) क्या वह केवल सेवा उपदान के योग्य हुआ था जिसके बदले में उसे प्रारंभिक सेवा की निःशक्तता पेंशन अनुदत्त गई है। यदि हां तो सेवा उपदान की रकम क्या थी ।
- क्या उसे शुरू से अंत तक भारतीय राजस्व से संबन्धित किया गया था
- क्या भारत से बाहर की उसकी सेवा की अवधि के लिए पेंशनिक अभिव्यक्ति वसूल किया गया है और भारतीय राजस्व में जमा किया गया है
..... से तक

11. क्या सैनिक सेवा की संपूर्ण अवधि सिविल सेवा विनियम के अनुच्छेद 356 (क)/या 357 के टिप्पण 2 में वर्णित किसी खंड के अंतर्गत है
12. अनर्हक सेवा, यदि कोई हो से तक
13. संतोषप्रद संदत्त सैनिक सेवा की अवधि से तक
14. सैनिक सेवा वरिष्ठ सेवा या कनिष्ठ
15. युद्ध सेवा की अवधि
16. पूर्ववर्ती मद में उपवर्णित युद्ध सेवा की अवधि के लिए संदत्त सेवा उपदान की रकम
17. युद्ध सेवा की अवधि के लिए संदत्त युद्ध उपदान की रकम
18. सैनिक सेवा के दौरान उपभोग की गई आकस्मिक छुट्टी से भिन्न छुट्टी की अवधि और प्रकृति

स्थान

(संबद्ध अभिलेख अधिकारी के हस्ताक्षर)

तारीख

प्रतिहस्ताक्षरित

स्थान

रक्षा लेखा नियंत्रक/पी.ए.ओ. ओ प्रार)

तारीख

प्ररूप 4

[नियम 74(1) देखिए]

(मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान) के लिए नाम निर्देशन

जबकि कि रेल सेवक का कोई कुटुम्ब हो और वह उसके एक सदस्य का एक सदस्य से अधिक सदस्यों को नामनिर्देशित करना चाहता हो।

मैं नीचे वर्णित व्यक्ति/व्यक्तियों को, जो मेरे कुटुम्ब का/के सदस्य हैं/हैं, नाम निर्देशित करता हूँ और उसे/उन्हें नीचे विनिर्दिष्ट सीमा तक, ऐसा कोई उपदान, जो मेरी सेवा में रहते हुए मृत्यु हो जाने की दशा में केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर किया जाए, प्राप्त करने का अधिकार और नीचे विनिर्दिष्ट सीमा तक ऐसा कोई उपदान मेरी मृत्यु पर प्राप्त करने का अधिकारी प्रदत्त करता हूँ जो सेवा निवृत्त होने पर मुझे अनुज्ञेय हो जाए किन्तु मेरी मृत्यु पर असंवत्त रह जाए:

मूल नाम निर्देशिती		अनुकल्पी नाम निर्देशिती	
नाम निर्देशिती/नामनिर्देशितियों का/के नाम और पता/पते	रेल सेवक के साथ प्रत्येक को नातेदारी संदेय उपदान की रकम या अंश	ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों का/के, यदि कोई हो/हों, जिसे/जिन्हें नाम-निर्देशिती को प्रदत्त अधिकारी रेल सेवक की मृत्यु से पूर्व नाम निर्देशिती की मृत्यु हो जाने की दशा में अथवा रेल सेवक की मृत्यु के पश्चात् किन्तु उपदान का संदाय प्राप्त करने से पूर्व नाम निर्देशिती की मृत्यु हो जाने पर संक्रांति हो जाएगी, नाम, पता/पते और नातेदारी	प्रत्येक को संदेय उपदान की रकम या अंश
(1)	(2)	(3)	(4)
			(5)
			(6)

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.
- 5.

और इसी प्रकार आगे

अध्याय 12

नाम नामनिर्देशन मेरे द्वारा इसमें पूर्ण (तारीख) को किए गये नाम निर्देशन को, जो अब रह हो गया है, अधिकांश करता है

- टिप्पण (i) रेल सेवक, अपने द्वारा हस्ताक्षरित करा दिए जाने के पश्चात किसी नाम को सम्मिलित करने से रोकने के लिए अन्तिम प्रविष्टि के नीचे उस खाली स्थान को अपरार लाइनें खींच देगा
- (ii) जो लागू न हो उसे काट दीजिए।

तारीख

हस्ताक्षर

1.
2.

रेल सेवक के हस्ताक्षर

* यह स्तम्भ इस प्रकार भरा जाना चाहिए जिससे कि उसके अंतर्गत उपदान की संपूर्ण रकम आ जाए।

** इस स्तम्भ में दर्शित उपदान की रकम के अंश के अंतर्गत मूल नाम निर्देशित/नाम निर्देशनियों की संदेय संपूर्ण रकम/अंश आ जानी/जाना चाहिए।

अराजपत्रित रेल सेवक की वशा में (कार्यालय प्रधान द्वारा भरा जाए
..... द्वारा नाम निर्देशन

कार्यालय अध्यक्ष के हस्ताक्षर

पदनाम

तारीख

कार्यालय

कार्यालय प्रधान/लिखाधिकारी द्वारा नाम निर्देशन प्ररूप की प्राप्ति अभिस्वीकृत करने के लिए प्रोकार्मा सेवा में

.....
.....
.....

महोदय,

आपके नामनिर्देशन तारीख/प्ररूप/..... में मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान की बाबत पहले किए गए नामनिर्देशन, तारीख के रद्दकरण की प्राप्ति अभिस्वीकृति की जाती है इसे सम्यक् रूप से अभिलेख में रख लिया गया है।

कार्यालय प्रधान/लिखाधिकारी के हस्ता.
पदनाम

स्थान

तारीख

टिप्पण—रेल सेवक को यह सलाह दी जाती है कि यह नामनिर्देशनी/नामनिर्देशनियों के हित में होगा कि नाम निर्देशनों की प्रतियों और संबंधित सूचनाएं तथा अभिस्वीकृति निरापद अभिरक्षा में रखी जाए ताकि वे उसकी मृत्यु होने की वशा में हितधिकारियों के कब्जे में आ जाए।

प्ररूप 5

[नियम 74(1) देखिए]

सेवानिवृत्ति/मृत्यु उपदान के लिए नामनिर्देशन

(जब रेल सेवक का कोई कुटुम्ब न हो और वह एक या एक से अधिक व्यक्तियों को नामनिर्देशित करना चाहता हो)

में जिसका कोई कुटुम्ब नहीं है, नीचे वर्णित व्यक्ति/व्यक्तियों को, नामनिर्देशित करता हूं और उसे/उन्हें, नीचे विनिर्दिष्ट सीमा तक ऐसा कोई उपदान जिसका संदाय मेरी सेवा में रहते हुए मृत्यु हो जाने की वशा में रेल द्वारा

प्राधिकृत किया जाए, प्राप्त करने का अधिकार और नीचे विनिर्दिष्ट सीमा तक ऐसा कोई उपदान मेरी मृत्यु पर प्राप्त करने का अधिकारी प्रदत्त करता हूँ जो सेवानिवृत्ति होने पर मुझे अनुज्ञेय हो जाए किन्तु मेरी मृत्यु असंदात रह जाए —

मूल नामनिर्देशिनी			वैकल्पिक नामनिर्देशिनी		
नामनिर्देशिनी/नाम- निर्देशितियों का/के नाम और पता/पते	रेलसेवक के साथ नातेदारी	आयु	*प्रत्येक को संदेय उपदान की रकम या अंश	ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों का/के यदि कोई हो/हों, जिसे/जिन्हें नामनिर्देशिनी को प्रदत्त अधि- कार रेल सेवक की मृत्यु से पूर्व नामनिर्देशिनी की मृत्यु हो जाने की दशा में, अथवा रेल सेवक की मृत्यु के पश्चात् किन्तु उपदान का संदाय प्राप्त करने से पूर्व नामनिर्देशिनी की मृत्यु हो जाने पर संकांत हो जाएगी नाम, पता/पते और नातेदारी	**प्रत्येक को संदेय उपदान की रकम या अंश
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
1.					
2.					
3.					
4.					
5.					

और इसी प्रकार आगे

यह नामनिर्देशन मेरे द्वारा इससे पहले (तारीख) को किए गए नामनिर्देशन को, जो अब रद्द हो गया है, अधिकृत करता हूँ।

टिप्पणी:—(1) रेल, अपने द्वारा हस्ताक्षर कर दिए जाने के पश्चात् किसी नाम को सम्मिलित करने से रोकने के लिए अंतिम प्रविष्टि के नीचे उस खासी स्थान पर आरपार लाइन खींचेगा।

(2) जो लागू न हो उसे काट दीजिए।

तारीख

स्थान

हस्ताक्षर के साथी

1. हस्ताक्षर

2.

रेल सेवक के हस्ताक्षर

* यह स्तम्भ इस प्रकार भरा जाना चाहिए कि उसके अंतर्गत उपदान की संपूर्ण रकम आ जाए।

** इस स्तम्भ में दर्शित उपदान की रकम/जिसमें के अंश के अंतर्गत मूल नाम-निर्देशिनी/नामनिर्देशितियों संवेद्य संपूर्ण रकम/अंश आ जानी/जाना चाहिए।

अराजपत्रित रेल सेवक की दशा में (कार्यालय प्रधान द्वारा भरा जाए)

..... द्वारा नामनिर्देशन

कार्यालय प्रधान के हस्ताक्षर

पदनाम

पदनाम

कार्यालय

तारीख

कार्यालय प्रधान/लिखा अधिकारी द्वारा नामनिर्देशन प्ररूप की प्राप्ति अभिस्वीकृति करने के लिए प्रोफार्मा
सेवा में,

.....
.....

महोदय,

आपके नामनिर्देशन तारीख/प्ररूप में उपदान की बाबत पहले किए गए नामनिर्देशन
तारीखके रद्दकरण
की प्राप्ति अभिस्वीकृत की जाती है। इसे सम्यक रूप से अभिलेख में रख लिया गया है।
स्थान

तारीख

कार्यालय प्रधान के हस्ताक्षर

पदनाम

टिप्पणः—रेल सेवक को यह सलाह दी जाती है कि यह उसके नामनिर्देशिती/नामनिर्देशितियों के हित में होगा कि नामनिर्देशन की
प्रतियां और संबंधित सूचनाएं तथा अभिस्वीकृत निरापद अभिरक्षा में रखी जाए ताकि वे उसकी मृत्यु होने जाने की बशा में
हिताधिकारियों के कब्जे में आ जाए।

प्ररूप 6

नियम 75(25) (क) देखिए

कुटुम्ब पेशन के प्रयोजन के लिए कुटुम्ब के सदस्यों के ब्यौरे दर्शित करने वाला विवरण

1. नाम (स्पष्ट अक्षरों में)
2. पदनाम शाखा
3. कार्यालय
4. जन्म की तारीख
5. नियुक्ति की तारीख
6. कुटुम्ब के ब्यौरे

क.सं.	कुटुम्ब के सदस्यों के नाम	जन्म की तारीख (ईसवी सन् के अनुसार)	रेल सेवक के साथ नातेबारी	क्या संतान शारीरिक रूप से विकलांग है	टिप्पणी
1.					
2.					
3.					
4.					
5.					

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.
- 5.

और इसी प्रकार आगे

मैं घोषणा करता हूं कि ऊपर दी गई जानकारी सही है। मैं कार्यालय प्रधान को परिवर्धन या परिवर्तन अभिसूचित करके
उपर्युक्त विशिष्टियों को प्रद्यस्त रखने का वचन देता हूं।

स्थान

तारीख

रेल सेवक के हस्ताक्षर

साक्षी—.....
हस्ताक्षर
तारीख
नाम (स्पष्ट अक्षरों में)
पदनाम

प्रतिहस्ताक्षरित

कार्यालय प्रधान/लेखा अधिकारी प्रधान कार्यालय लेखा अधिकारी

स्थान
 तारीख
 पदनाम

प्रारूप 7

[नियम 78, नियम 80, नियम 81(1) और (3) तथा नियम 85(1) देखिए]

पेंशन और उपदान का निर्धारण करने के लिए प्रारूप

(यदि लेखा इकाई के किसी भिन्न सकल में वांछित हो तो इसे दो प्रतियों में भेजा जाए)

भाग 1

1. रेल सेवक का नाम
2. पिता का नाम (और यदि रेल सेवक महिला है तो उसके पति का नाम भी)
3. जन्म की तारीख (ठसवीं सन् के अनुसार)
4. धर्म
5. स्थायी निवास का पता, ग्राम, शहर, जिला और राज्य दर्शित करते हुए।
6. वर्तमान या अंतिम नियुक्ति, जिसके अंतर्गत स्थापन का नाम भी है :—
 - (1) अधिष्ठायी
 - (2) स्थानापन्न, यदि कोई हो
7. सेवा आरम्भ की तारीख
8. सेवा-समाप्ति की तारीख
9. (i) सैनिक सेवा की वह कुल अवधि जिसके लिए पेंशन या उपदान मंजूर किया गया था।
- (ii) सैनिक सेवा के लिए प्राप्त किसी पेंशन/उपदान की रकम और उसकी प्रकृति।
10. पूर्व सिविल सेवा के लिए प्राप्त किसी पेंशन/उपदान की रकम और उसकी प्रकृति।
11. सेवा जिस सरकार के अधीन की गई है वह नियोजन के क्रम के अनुसार—वर्ष मास दिन
12. किस वर्ग की पेंशन लागू है
13. वह तारीख जिसको निम्नलिखित के लिए कार्रवाई आरंभ की गई थी—
 - (i) संपदा निदेशालय से नियम 98(1) में उपर्युक्त "बेबाकी प्रमाणपत्र" अभिप्राप्त करना,
 - (ii) नियम 79 में उपर्युक्त पेंशन के लिए अर्हक सेवा और उपलब्धियों का निर्धारण, और
 - (iii) रेल/सरकारी आवास के आबंटन से संबंधित शोधों से भिन्न रेलों/सरकारी शोधों का निर्धारण
14. सेवा पुस्तिका में लोप त्रुटियों या कमियों के व्यतिरेक जिन पर नियम 79(1)(ख) (ii) के अधीन ध्यान नहीं दिया गया है।

15. अर्हक सेवा की कुल अवधि (बहिष्कृत अवधियों को जोड़ने के प्रयोजन के लिए एक मास तीस दिन के बराबर संगणित किया जाता है)

16. अनर्हक सेवा की अवधियाँ—

से एक

- (i) नियम 43 के अधीन माफ किया गया सेवा व्यवधान
- (ii) ऐसी असाधारण छुट्टी जो पेंशन के लिए अर्हित न करती हो.
- (iii) निलंबन की वह अवधि जो अर्हक न मानी गई हो
- (iv) कोई अन्य सेवा जो अर्हक न मानी गई हो

योग

17. उपदान के लिए संगणित की जाने वाली उपलब्धियाँ

18. औसत उपलब्धियाँ

*सेवा के अंतिम दस मास के दौरान जी गई उपलब्धियाँ

धारित पदसेतक	वेतन	वैयक्तिक या विशेष वेतन	औसत-उपलब्धियाँ
----------	--------	---------	------	------------------------	----------------

19. वह तारीख जिसको रेल सेवक से प्ररूप 8 अभिप्राप्त किया गया है। (रेल सेवक की सेवा निवृत्ति की तारीख से आठ मास पूर्व लिया जाता है.)

* (i) किसी ऐसे मामले में जहाँ अंतिम दस मास के अंतर्गत ऐसी अवधियाँ भी हैं जिनको औसत उपलब्धियों की संगणना करने के लिए हिसाब में नहीं लिया जाता है वहाँ औसत उपलब्धियों की संगणना करने के लिए उसके पहले की उतनी ही अवधि को हिसाब में लिया जाएगा।

(ii) औसत उपलब्धियों की संगणना प्रत्येक मामले में अतिरिक्त दिनों की वास्तविक संख्या पर आधारित होगी.

20. (i) प्रस्तावित पेंशन

(ii) प्रस्तावित वर्गीकृत राहत

21. प्रस्तावित मृत्यु-तथा-निवृत्ति उपदान

22. पेंशन किस तारीख से प्रारम्भ होगी

23. यदि रेल सेवक के विरुद्ध सेवानिवृत्ति से पूर्व कोई विभागीय या न्यायिक कार्यवाही शुरू की गई है तो अनंतिम पेंशन की प्रस्तावित रकम.

24. उपदान में से वसूलीय रेल सरकारी शोध्यों के बारे—

रेल सरकारी बास के आबंटन के लिए अनुज्ञप्ति प्राप्त।

25. क्या मृत्यु-तथा-निवृत्ति उपदान के लिए नाम-निर्देशित किया गया है.

26. क्या कुटुम्ब पेंशन, 1964 रेल सेवक को लागू होता है और यदि लागू है तो—

(i) कुटुम्ब पेंशन के लिए मंगणित की जाने वाली उप-लब्धियां ।

(ii) यदि रेल सेवक की सेवानिवृत्ति के पश्चात् निम्न-लिखित दशा में मृत्यु हो जाती है तो उसके कुटुम्ब को संदेय कुटुम्ब पेंशन की रकम:—

- (क) 65 वर्ष की आयु प्राप्त करने से पूर्व मृत्यु या रु.
(ख) 65 वर्ष की आयु प्राप्त करने के पश्चात् मृत्यु रु.

(iii) कुटुम्ब के पूर्ण और अद्यतन व्योरे जैसे वे प्ररूप 6 में दिए गए हैं :—

क्र. सं.	कुटुम्ब के सदस्यों के नाम	जन्म की तारीख	रेल सेवक के साथ नातेदारी
1	2	3	4
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

27. लम्बाई

28. पहचान चिह्न

29. पेंशन के संक्षय का स्थान

(खजाना, उप-खजाना या पब्लिक सेक्टर बैंक/डाक घर की शाखा बेलन और लेखा कार्यालय)

30. पेंशन और उपदान किस लेखा शीर्ष के नामे डालने योग्य हैं ।

कार्यालय प्रधान के हस्ताक्षर

भाग 2

अनुभाग 1

लेखा मुखांकन :

1. अर्हक सेवा की कुल अवधि जो अधिवर्षिता या सेवानिवृत्ति या अशक्त या प्रतिकर या अनिवार्य सेवानिवृत्ति पेंशन और उपदान के लिए स्वीकार की गई है । (इस प्ररूप के भाग 1 में उल्लिखित नामजुरी से भिन्न) नामजुरी के कारण यदि कोई हों, दिए जाएंगे ।

2. अधिवर्षिता या सेवानिवृत्ति या अशक्त या प्रतिकर या अनिवार्य सेवानिवृत्ति पेंशन या उपदान की वह रकम जो स्वीकार कर ली गई है ।

3. अधिवर्षिता या सेवानिवृत्ति या अशक्त या प्रतिकर या अनिवार्य सेवानिवृत्ति पेंशन या उपदान किस तारीख से अनुज्ञेय है ;

4. अधिवर्षिता या सेवानिवृत्ति या अशक्त या प्रतिकर या अनिवार्य सेवा निवृत्त पेंशन या उपदान किस लेखा शीर्ष के लिए प्रभार्य है ,

5. रेल सेवक की सेवानिवृत्ति के पश्चात् मृत्यु हो जाने की दशा में कुटुम्ब के हकदार सदस्यों को संदेय कुटुम्ब पेंशन, 1964 की रकम ।

अनुभाग 2

1. रेल सेवक का नाम
2. पेंशन या उपदान का वर्ग
3. प्राधिकृत पेंशन की रकम
4. पेंशन प्रारम्भ होने की तारीख
5. प्राधिकृत उपदान की रकम
6. सेवानिवृत्ति के पश्चात् निम्नलिखित दशा में मृत्यु हो जाने पर कुटुम्ब पेंशन की रकम:—
 - (i) 65 वर्ष की आयु प्राप्त करने से पूर्व मृत्यु ; या रु०
 - (ii) 65 वर्ष की आयु प्राप्त करने के पश्चात् मृत्यु । रु०
7. पेंशन पर अनुज्ञेय वर्गीकृत राहत की रकम ।
8. उपदान का संदाय प्राधिकृत किए जाने से पूर्व उसमें से वसूलीय नकद सरकारी शोध या रेल शोध ।
9. नकद निक्षेप की रकम या उपदान की रकम जो प्रतिधारित रेल सरकारी शोधों के समायोजन के लिए विधार्जित की गई है ।
10. वह तारीख जिसको पेंशन कागज पत्र लेखा अधिकारी द्वारा प्राप्त किए गए हैं ;

प्ररूप 8

[मियम 79 (1) (ग) और नियम 81 (1) (देखिए)]

सेवानिवृत्ति होने वाले रेल सेवक से उसकी सेवानिवृत्ति की तारीख से आठ मास पूर्व कार्यालय प्रधान द्वारा अभिप्राप्त की जाने वाली विनिष्टियां :—

1. नाम
 2. (क) जन्म की तारीख
 - (ख) सेवानिवृत्ति की तारीख
 3. *हस्ताक्षर के दो नमूने (अलग पत्र पर दिए जाएंगे और किसी राजपत्रित सरकारी सेवक द्वारा सम्यक रूप से अनु-प्रमाणित हों)।
- *दो पवित्रियां जिनमें से प्रत्येक पर किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा जो इतना माक्षरन हो कि वह अपने नाम के हस्ताक्षर कर सके उसके बायें हाथ के अंगूठे और अंगुलियों की छापें जो सम्यक रूप से अनुप्रमाणित की गई हों, दी जाएंगी, यदि ऐसा रेल सेवक शारीरिक रूप से विकलांग होने के कारण बायें हाथ के अंगूठे और अंगुलियों की छापें देने में असमर्थ है तो वह दायें हाथ के अंगूठे और अंगुलियों की छापें दे सकता है, जहां रेल सेवक के दोनों ही हाथ न हों वहां वह अपने पांव की अंगुलियों की छापें दे सकता है। छापों को किसी राजपत्रित सरकारी सेवक द्वारा सम्यक रूप से अनु-प्रमाणित किया जाना चाहिए।

4. **पत्नी या पति के साथ संयुक्त फोटो की पासपोर्ट आकार की तीन प्रतियां (जो कार्यालय प्रधान द्वारा अनुप्रमाणित की जाएंगी) ।

5. ***दो पवित्रियां जिनमें लम्बाई और पहचान चिन्ह को विनिष्टियां हैं जो किसी राजपत्रित सरकारी सेवक द्वारा सम्यक रूप से अनुप्रमाणित की गई हैं ।

6. वर्तमान पता

7. सेवानिवृत्ति के पश्चात् पता

8. खजाने या पब्लिक सेक्टर बैंक/डाक घर की शाखा या वेतन और कार्यालय का नाम जिसके माध्यम से पेंशन ली जाती है ।

**रेल सेवक द्वारा अपने फोटो के पासपोर्ट आकार की दो प्रतियां हो दो जाने की जरूरत है, यदि वह रेल सेवा पेंशन नियम, 1993 के नियम 75 द्वारा शासित है और अविवाहित या विधुर या विधवा है ।

जहां किसी रेल सेवक के लिए अपनी पत्नी या अपने पति के साथ फोटो देना संभव नहीं है वहां वह अलग फोटो दे सकेगा या सकेगी । फोटो कार्यालय प्रधान द्वारा अनुप्रमाणित किए जाएंगे ।

***यदि संभव हो तो कुछ सहज दृश्य चित्र जो दो से कम न हों, विनिष्टित करें

@पते में यदि बाव में कोई परिवर्तन होता है, तो उसे कार्यालय प्रधान को अधिसूचित किया जाना चाहिए ।

9. प्ररूप 6 में कुटुम्ब के ब्यौरे

10. उपर्युक्त करें कि क्या किसी अन्य स्त्रोत सेना या राज्य सरकार और/या केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार के अधीन किसी पब्लिक सेक्टर उपक्रम/स्वशासी निकाय/स्थानीय निधि से कुटुम्ब पेंशन अनुज्ञेय है।

स्थान :

हस्ताक्षर :

तारीख :

पदनाम

मंत्रालय/विभाग/कार्यालय

प्ररूप 9

[नियम 81(1) देखिए]

उस पत्र का प्ररूप जिसके साथ लेखा अधिकारी को रेल सेवक के पेंशन कागजी पत्र भेजे जाएंगे

सं.

कार्यालय

स्थान

तारीख

सेवा में,

वित्त सलाहकार और मुख्य लेखा अधिकारी/

वेतन और लेखा अधिकारी.....

.....

.....

विषय : पेंशन प्राधिकृत करने के लिए श्री/श्रीमती/कुमारीके पेंशन कागज पत्र

महोदय

मुझे इस मंत्रालय/विभागीय कार्यालय के की श्री श्रीमती कुमारीके पेंशन कागज पत्रों को आगे की आवश्यक कार्रवाई के लिए भेजने का निदेश दिया गया है.

2. उन रेल सरकारी शोध्यों के ब्यौरे, जो रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख को बकाया रहेंगे और जिन्हें मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान की रकम में से वसूल किया जाता है, नीचे उपर्युक्त है:—

(क) गृह :—

(क) गृह निर्माण या सवारी अग्रिम का अतिशेष

रु.

(ख) वेतन और भत्तों का, जिसके अंतर्गत छुट्टी वेतन भी है, अतिसंदाय

रु.

(ग) आय-कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43)

रु.

के अधीन स्त्रोत पर कटौती योग्य आय-कर

रु.

(घ) रेल सरकारी वास के अधिभोग के लिए अनुज्ञप्ति फीस की बकाया

रु.

(ङ) सेवानिवृत्ति की तारीख से आगे दो मास की अनुज्ञेय अवधि के लिए रेल या सरकारी वास रखने के लिए अनुज्ञप्ति फीस की रकम

रु.

(च) कोई अन्य निर्धारित शोध्य और उनकी प्राकृति

(छ) अनिर्धारित शोध्यों के, यदि कोई हों,

समायोजन के लिए निर्धारित उपदान की रकम

रु.

योग

रु.

3. आपका ध्यान संलग्नकों की सूची की ओर दिलाया जाता है जो इसके साथ भेजी जा रही है.
4. इस पत्र की प्राप्ति अभिस्वीकृत करे और इस मंत्रालय/विभाग/कार्यालय को सूचित कर दें कि पेंशन के संवितरण के लिए आवश्यक अनुदेश संबद्ध संवितरक प्राधिकारी को जारी कर दिए गए हैं.
5. आपसे प्राधिकार प्राप्त होने पर मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान इस मंत्रालय/विभाग/कार्यालय द्वारा निकाला और संवितरित किया जाएगा उपर पैरा 2 में वर्णित बकाया रेल या सरकारी शोध्यों को भी संदाय करने से पूर्व मृत्यु-तथा निवृत्ति उपदान में से बसूल कर लिये जाएंगे.

भावदीय,
कार्यालय प्रधान

संलग्नकों की सूची :—

1. सम्यक रूप से पूरा किया गया प्ररूप 7 और प्ररूप 8.
 2. असमर्थता का चिकित्सीय प्रमाणपत्र (यदि दावा अग्रस्त पेंशन के लिए है.)
 3. की गई बचतों का विवरण और इस बात के लिए कारण कि नियोजन अन्यत्र क्यों नहीं पाया गया (यदि दावा प्रतिकर पेंशन या उपदान के लिए है.)
 4. सेवा पुस्तिका (सेवा पुस्तिका में सेवानिवृत्ति की तारीख उपदर्शित की जाएगी)
 5. (क) किसी राजपत्रित सरकारी सेवक द्वारा सम्यक रूप से अनुप्रमाणित हस्ताक्षर के दो नमूने या यदि कोई पेंशन भोगी इतना साक्षर नहीं है कि अपने नाम के हस्ताक्षर कर सके तो दो पंक्तियाँ, जिन पर किसी राजपत्रित सरकारी सेवक द्वारा सम्यक रूप से अनुप्रमाणित उसके बाएँ हाथ के अंगूठे और अंगुलियों की छापें हों.
(ख) पत्नी या पति के साथ फोटो की, पासपोर्ट आकार की तीन प्रतियाँ (चाहे संयुक्त अथवा अलग-अलग जो) कार्यालय प्रधान द्वारा सम्यक रूप से अनुप्रमाणित की गई हो.
(ग) दो पंक्तियाँ . जिनमें खंवाई और पहचान बिन्दु के विवरण हों जो किसी राजपत्रित सरकारी सेवक द्वारा सम्यक रूप से अनुप्रमाणित किए गए हों.
 6. यदि रेल सेवक की सेवानिवृत्ति की तारीख से छह मास के पूर्व पेंशन कागज पत्र नहीं भेजे गए हैं, तो विलंब के कारणों का कथन.
 7. रेल सेवक कानियम 79(1) (क) के अधीन अपेक्षित लिखित कथन, यदि कोई हो.
 8. यदि रेल सेवक को सेवा से निलम्बित अनिवार्य रूप से सेवा-निवृत्ति, हटाए जाने या पदच्युति के पश्चात् बहाल किया गया है तो बहाली का संक्षिप्त विवरण.
- टिप्पणः—यदि विचार किए गए विभिन्न अभिलेखों में दिए गए रेल सेवक के आद्याक्षर या नाम गलत रूप में दिए गए हैं तो इस तथ्य का पत्र में उल्लेख किया जाना चाहिए.

प्ररूप 10

[नियम 92 और नियम 100(2) देखिए]

रेल सेवक/पेंशनभोगी की मृत्यु पर कुटुम्ब पेंशन, 1964 दिए जाने के लिए आवेदन का प्ररूप

1. आवेदक का नाम :

(1) विधवा/विधुर

(2) यदि मृत व्यक्ति की उत्तरजीवी संतान है/हैं तो संरक्षक

2. मृत रेल सेवक/पेंशनभोगी की/के उत्तरजीवी विधवा/विधुर और संतान के नाम और आयु

क्रम सं.	नाम	मृत व्यक्ति के साथ नातेदारी	जन्म की तारीख इसकी मृत्यु के अनुसार
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			
6.			

3. मृत पेंशनभोगी के पेंशन संदाय आदेश का नाम और संख्यांक
4. रेल सेवक/पेंशनभोगी की मृत्यु की तारीख
5. कार्यालय जिसमें मृत रेल सेवक/पेंशनभोगी ने अन्तिम बार में सेवा की थी।
6. यदि आवेदक संरक्षक है तो उसकी जन्म की तारीख और मृत रेल सेवक/पेंशनभोगी के साथ नातेदारी।
7. यदि आवेदक विधवा/विधुर है तो सेवा पेंशन की वह रकम, जो वह पति/पत्नी की मृत्यु की तारीख को प्राप्त करें।
8. आवेदक का पूरा पता
9. पेंशन और उपदान के संदाय का स्थान (खजाना, उप खजाना या पब्लिक सेक्टर बैंक की शाखा तथा बैंक और लेखा कार्यालय)
10. संलग्नक :
 - (i) आवेदक के हस्ताक्षर के दो नमूने, जो सम्यक रूप से अनुप्रमाणित किए गए हों (दो अलग अलग पत्रों पर दिए जाएं)।
 - (ii) आवेदक के फोटो की पामपोर्ट आकार की दो प्रतियां, जो सम्यक रूप से अनुप्रमाणित की गई हों।
 - (iii) आवेदक की सम्यक रूप से अनुप्रमाणित वर्णन तालिका जिसमें, (क) लंबाई और (ख) हाथ, चेहरे आदि पर के वैयक्तिक चिन्ह, यदि कोई हों, उपदर्शित किए गए हों, यदि संभव हो तो, कुछ सहज दृश्य चिन्ह विनिर्दिष्ट कीजिए जो दो से कम न हों।
 - (iv) दो पंक्तियां, जिनमें से प्रत्येक पर आवेदक के बाएं हाथ के अंगूठे और अंगुलियों की छापें *हों जो सम्यक रूप से अनुप्रमाणित की गई हों।
 - (v) आयु का/के प्रमाणपत्र (मूल प्रमाणपत्र, दो अनुप्रमाणित प्रतियां सहित) जिसमें/जिनमें संतानों के जन्म की तारीखें दर्शित की गई हों। यह प्रमाणपत्र नगरपालिका प्राधिकारियों का अथवा स्थानीय पंचायत का अथवा यदि संतान किसी शान्यता-प्राप्त स्कूल में पढ़ रही है तो ऐसे स्कूल के प्रधान का होना चाहिए। यह जानकारी ऐसी संतान या संतानों की बाबत प्रस्तुत की जानी चाहिए जिसके या जिनके जन्म की तारीख की विशिष्टियां कार्यालय प्रधान के पास उपलब्ध नहीं हैं।
11. आवेदक के हस्ताक्षर या बाएं हाथ के अंगूठे की छाप*
12. निम्नलिखित द्वारा अनुप्रमाणित

नाम	पूरा पता	हस्ताक्षर
(i)		
(ii)		

प्ररूप

13. साक्षी :—

नाम	पूरा पता	हस्ताक्षर
(i)		
(ii)		

टिप्पण—अनुप्रमाणन दो राजपत्रित सरकारी सेवकों या नगर/ग्राम या परगना के, जिसमें आवेदक निवास करता है, दो या अधिक प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा किया जाना चाहिए।

*यदि आवेदक इतना साक्षर नहीं है कि वह अपने नाम के हस्ताक्षर कर सके तो दिया जाए।

विधवा के पुनर्विवाह की दशा में जबकि वह अवयस्क संतान की ओर से कुटुम्ब पेंशन के लिए आवेदन कर रही हो, विधवा को (i) अपने पुनर्विवाह की तारीख (ii) खजाना/उपखजाना का नाम जहां वह संदाय की बांछा रखती है, और (iii) कुटुम्ब पेंशन के लिए आवेदन में अपना पूरा पता देना चाहिए, नया आवेदन और दस्तावेज देने को आवश्यकता नहीं है।

प्ररूप 11

नियम 92(2) देखिए

जहाँ मृत्यु उपदान दिए जाने के संबंध में विधिमाम्य नामनिर्देशन अस्तित्व में हो वहाँ मृत रेल सेवक के कुटुम्ब के सदस्य या सदस्यों को भेजे जाने वाले पत्र का प्ररूप।

सं.
..... कार्यालय
स्थान
तारीख

सेवा में,
.....
.....
.....

विषय :—स्वर्गीय श्री/श्रीमती की बाबत मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान का संदाय।
महोदय/महोदया,

मुझे यह कहने का निर्देश हुआ है कि कार्यालय/विभाग के/की स्वर्गीय श्री/श्रीमती (पदनाम) द्वारा किए गए नामनिर्देशन के निबन्धनों के अनुसार मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान उस के नामनिर्देशित (नामनिर्देशितियों) को संदेय है, उक्त नामनिर्देशन की एक प्रति इस व साथ संलग्न है।

2. मुझे यह अनुरोध है कि आप उपदान दिए जाने के लिए दावा संलग्न प्ररूप 13 में प्रस्तुत करें।

3. यदि नामनिर्देशन करने की तारीख के बाद से कोई ऐसी आकस्मिकता घटित की गई हो जिससे कि नाम निर्देशन पूर्णतः या अंशतः अविधिमाम्य हो जाता हो तो कृपया उस आकस्मिकता के ठीक ठीक व्यौरों का उल्लेख करें।

भवदीय,
कार्यालय प्रधान

प्ररूप 12

[नियम 92(2) देखिए]

जहाँ मृत्यु उपदान दिए जाने के संबंध में कोई विधिमाम्य नामनिर्देशन अस्तित्व में न हो वहाँ मृत रेल सेवक के कुटुम्ब के सदस्यों को भेजे जाने वाले पत्र का प्ररूप

सं.
..... कार्यालय
स्थान
विभाग
तारीख

सेवा में
.....
.....
.....

विषय : स्वर्गीय श्री/श्रीमती की बाबत मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान का संदाय।
महोदय/महोदया,

मुझे यह कहने का निर्देश हुआ है कि नियम 70 के निबन्धनों के अनुसार कार्यालय/विभाग/मंत्रालय के/की स्वर्गीय श्री/श्रीमती (पदनाम) के कुटुम्ब के निम्नलिखित सदस्यों की मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान बराबर अंशों में संदेय है :—

- (1) पत्नी/पति, जिसके अन्तर्गत न्यायिक रूप से पृथक हुई/हुआ पत्नी/पति भी है।
- (2) पुत्र जिसके अन्तर्गत सौतेली संतान
- (3) अविवाहित पुत्रियाँ और दत्तक संतान भी हैं।

2. यदि ऊपर यथाप्रदर्शित कुटुम्ब या कोई भी उत्तरजीवी सदस्य नहीं है तो उपदान कुटुम्ब के निम्नलिखित सदस्यों के बराबर अंशों में सदेव होगा :—

- (i) विधवा पुत्रियां, जिनके अंतर्गत सौतेली पुत्रियां और दत्तक पुत्रियां भी हैं,
- (ii) पिता { जिनके अन्तर्गत ऐसे व्यक्तियों की दशा में जिनकी स्वीय विधि से
- (iii) माता { दत्तक ग्रहण की अनुज्ञा है, दत्तक माना-पिता हैं।
- (iv) अठारह वर्ष से कम की आयु का भाई, और प्रविवाहित/विधवा बहनें, जिनके अन्तर्गत सौतेले भाई और सौतेली बहनें भी हैं।
- (v) विवाहित पुत्रियां, और
- (vi) पूर्व-मृत पुत्र की संतानें।

3. अनुसूचित है कि उपदान के संभाल के लिए दावा, यथामंभन्न शीघ्र, संलग्न प्ररूप 12 में प्रस्तुत किया जाए।

भवदीय,

कार्यालय प्रधान

प्ररूप 13

[नियम 92(2) में देखिए]

रेल सेवक की मृत्यु पर मृत्यु उपदान दिए जाने के लिए आवेदन पत्र का प्ररूप

(प्रत्येक दावेदार द्वारा अलग अलग भरा जाए और अवयस्क दावेदार की दशा में यह प्ररूप उसकी ओर से संरक्षक द्वारा भरा जाए। एक से अधिक अवयस्कों की दशा में संरक्षक को उनकी ओर से एक ही प्ररूप में उपदान का दावा करना चाहिए)।

1. (i) यदि दावेदार अवयस्क नहीं है तो उसका नाम _____
- (ii) दावेदार के जन्म की तारीख _____
2. (i) यदि दावेदार अवयस्क है तो संरक्षक का नाम _____
- (ii) संरक्षक के जन्म की तारीख _____
3. (i) उस मृत रेल सेवक का नाम जिसकी बाबत उपदान का दावा किया जा रहा है। _____
- (ii) रेल सेवक की मृत्यु की तारीख _____
- (iii) कार्यालय/विभाग, जिसमें मृतक ने अंतिम बार सेवा की थी _____
4. मृत रेल सेवक के साथ दावेदार/संरक्षक की नातेदारी _____
5. दावेदार/संरक्षक का पूरा ठाक पता _____
6. (i) जहां उपदान का दावा संरक्षक द्वारा अवयस्कों की ओर से किया जाता है वहां अवयस्कों की आयु, मृत रेल सेवक के साथ नातेदारी, आदि :—

क्र. सं.	नाम	आयु	मृत सरकारी सेवक के साथ नातेदारी	ठाक पता
1	2	3	4	5
(1)				
(2)				
(3)				
(4)				

- (ii) संरक्षक की अवयस्क के साथ नातेदारी
7. पेंशन और उपदान के संदाय का स्थान (खजाना, उप-खजाना, पब्लिक
- सेक्टर बैंक की शाखा या बेतन और लेखा कार्यालय)
8. दावेदार/संरक्षक के अभ्यक्त रूप से अनुप्रमाणित हस्ताक्षर या *बाएं हाथ के अंगूठे और अंगुलियों की छापों के दो नमूने (अलग पन्ने पर दीजिए)
9. निम्नलिखित द्वारा अनुप्रमाणित** :

नाम	पूरा पमेा	हस्ताक्षर
(i)		
(ii)		
10. साक्षी—		
(i)		
(ii)		

**यदि आवेदन इतना साक्षर नहीं है कि वह अपने नाम के हस्ताक्षर कर सके।

*अनुप्रमाणन दो राजपत्रित सरकारी सेवकों या नगर, ग्राम या परगने के, जिसमें आवेदक निवास करता है, दो या अधिक प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा किया जाना चाहिए।

प्ररूप 14

[नियम 92(3) देखिए]

कुटुम्ब पेंशन, 1964 दिए जाने के लिए मृत रेल सेवक की विधवा/के विधुर को भेजे जाने वाले पत्र का प्ररूप

सं.

..... कार्यालय

.....

तारीख

सेवा में,

.....

.....

.....

विषय :—स्वर्गीय श्री/श्रीमती की बाबत कुटुम्ब पेंशन, 1964 का संदाय।

महोदय/महोदया,

मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि रेल सेवा पेंशन नियम, 1993 के नियम 75 के निबंधनों के अनुसार
 कार्यालय के/की स्वर्गीय श्री/श्रीमती (पदनाम) की विधवा के
 विधुर के रूप में आपको कुटुम्ब पेंशन, 1964 संदेय है।

2. आपको सलाह दी जाती है कि कुटुम्ब पेंशन, 1964 दिए जाने के लिए दावा संलग्न प्ररूप 10 में प्रस्तुत किया जाए।

3. कुटुम्ब पेंशन, 1964 आपकी मृत्यु पर्यंत या पुनर्विवाह होने तक इनमें से जो भी पहले हो, संदेय होगी। आपको मृत्यु, या पुनर्विवाह हो जाने की दशा में कुटुम्ब पेंशन, 1964 संरक्षक की मार्फत संतान या संतानों को, यदि कोई हों, दी जाएगी।

भवदीय,

कार्यालय प्रधान